मदरलैण्ड वॉइस की मुहिम

#savegajraj #saveelephant

वर्ष : 2 ▸ अंक: 176 ▸ मूल्य : 4 रू.

RNI No. -DELHIN/2019/78266

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

मदरलैण्ड वॉइस

बुधवार, 17 फरवरी 2021

राष्ट्र प्रेमियों का दैनिक समाचार पत्र

दिल्ली से प्रकाशित एवं जयपुर, लुधियाना, चंडीगढ़, पटना, रायपुर, देहरादून, शिमला में प्रसारित

इतिहास लिखने में नाइंसाफी हुई, हमारी सरकार पुरानी गलतियां सुधार रही: मोदी

लखनऊ। पीएम नरेन्द्र मोदी ने महाराजा सुहेलदेव स्मारक और चित्तौरा झील के विकास कार्य की आधारशिला रखी। इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि इतिहास लिखने में नाइंसाफी हुई है। हमारी सरकार पुरानी गलतियां सुधार रही है। चाहे सरदार पटेल हों या फिर अंबेडकर के साथ हो, पीएम ने कहा कि भारत का इतिहास सिर्फ वहां नहीं है, जो देश को गुलाम बनाने वालों, गुलामी की मानसिकता के साथ इतिहास लिखने वालों ने लिखा, भारत का इतिहास वहां भी है जो भारत के सामान्य जन में, भारत की लोकगाथाओं में रचा-बसा है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश की पांच सौ से ज्यादा रियासतों को एक करने का कठिन कार्य करने वाले सरदार पटेल जी के साथ क्या किया गया, देश का बच्चा भी भली-भांति जानता है। आज दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी सरदार पटेल की है, जो हमें प्रेरणा दे रही है। मोदी ने कहा कि भारत के अनेकों सेनानी हैं, जिनके योगदान को अनेक वजहों से मान नहीं दिया गया। चौरी-चौरा के वीरों के साथ जो हुआ, वहां क्या हम भूल सकते हैं? महाराजा सुहेलदेव और भारतीयता की रक्षा के लिए उनके प्रयासों के साथ भी यही प्रयास किया गया।

पीएम ने कहा कि आज मुझे बहराइच में महाराजा सुहेलदेव जी के भव्य स्मारक के शिलान्यास का सौभाग्य मिला है। ये आधुनिक और भव्य स्मारक, ऐतिहासिक चित्तौरा झील का विकास, बहराइच पर महाराजा सुहेलदेव के आशीर्वाद को बढ़ाएगा और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा।

मोदी ने कहा कि बीते कुछ सालों में देश भर में इतिहास, आस्था, अध्यात्म, संस्कृति से जुड़े जितने भी स्मारकों का निर्माण किया जा रहा है, उनका बहुत बड़ा लक्ष्य पर्यटन को बढ़ावा देने का भी है। उत्तर प्रदेश तो पर्यटन, तीर्थाटन दोनों के मामले में समृद्ध भी है और इसकी क्षमताएं भी अपार हैं।

पीएम ने कहा कि आज महाराजा सुहेलदेव के नाम पर बने मेडिकल कॉलेज को एक नया और भव्य भवन भी मिला है। बहराइच जैसे विकास के आकांक्षी जिले में स्वास्थ सुविधाएं बढ़ना यहां के रहने वालों के जीवन को आसान बनाएगा। इसका लाभ आसपास के जिले श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर को तो होगा ही साथ ही साथ ही नेपाल से आने वाले मरीजों को भी मदद करेगा।

उत्तरप्रदेश में भाजपा सरकार के 'चार दिन' ही बचे है : अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गन्ना किसानों के मामले पर योगी सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि ह्यह्लचार साल में गन्ना मूल्य में एक रुपये भी न बढ़ाने वाली भाजपा सरकार के 'चार दिन' ही बचे हैं। अखिलेश यादव ने कहा, किसान महँगाई और अपनी फसल का उचित दाम न मिलने से दोहरी मार झेल रहा है और भाजपा मामले में पूर्णतया संवेदन शून्य है।

उन्होंने कहा, किसान को उम्मीद थी कि उस भाजपा नेताओं के वादों के अनुसार फसल की लागत का डेढ़ गुना मूल्य मिलेगा और उसकी आय दोगुनी हो जायेगी।किसान ने भी सपना देखा था कि अब वह भी खुशहाल जिंदगी जीएगा, लेकिन धोखाबाजी की सरकार के मुखिया अधूरे वादों के साथ जनता केबीच असत्य बयानबाजी में व्यस्त हैं। यादव ने कहा कि चार साल में गन्ने के दाम में एक रुपया भी न बढ़ाने वाली भाजपा सरकार के 'चार दिन' ही बचे है और किसान धोखे का जवाब अपने वोट से देने वाले है।

यादव ने दावा किया, इस समय चीनी मिलों पर गन्ना किसानों का प्रतिदिन दो करोड़ रुपये का बकाया हो रहा है। 14 दिन के बाद किसान की अवशेष राशि बकाया श्रेणी में आ जाती है। अब तक प्रदेश में गन्ना किसानों का लगभग 10,174 करोड़ रुपये का बकाया हो चुका है।

गन्ना किसानों के भुगतान के मसले को लेकर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पहले भी भाजपा सरकार पर आरोप लगाये थे।

संक्षिप्त समाचार

प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनाथ धाम के कपाट 18 मई को खुलने जा रहे

बद्रीनाथ। हिमालय की पहाड़ी पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनाथ धाम के कपाट 18 मई को खुलने जा रहे हैं। बसंत पंचमी के पावन पर्व पर कपाट खुलने की तिथि घोषित की गई। श्री बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अधिकारियों ने बताया कि बद्री विशाल के कपाट श्रद्धालुओं के लिए 18 मई प्रात:4 बजकर 15 मिनट पर खोल दिए जाएंगे। अधिकारियों ने बताया कि 18 मई को पूजा-अर्चना के बाद श्रद्धालु भगवान बद्री विशाल के दर्शन कर सकते है। उत्तराखंड के चारों धाम शीतकाल के लिए बंद हैं। चमोली जिले में 3,133 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने का मुहूर्त हर वर्ष वसंत पंचमी को तय किया जाता है। राजपुरोहित द्वारा लोगों की उपस्थिति में मुहूर्त निकाला गया। बद्रीनाथ के कपाट खुलते हैं, तब इसी घड़े में तिल का तेल भरकर डिमरी पुजारी बद्रीनाथ पहुंचते हैं। इस तेल से भगवान का अभिषेक किया जाता है। केदारनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में 11 मार्च को शिवरात्रि के अवसर पर तय होगी, जबकि गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाट परंपरागत रूप से अक्षय तृतीया के दिन खुलते हैं। तीर्थ पुरोहितों द्वारा नव संवत्सर के दिन शीतकालीन प्रवास मुखबा में गंगोत्री धाम और शीतकालीन प्रवास खरसाली में यमुना जयंती पर यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने का समय तय किया जाता है।

दिल्ली पुलिस के 74वें स्थापना दिवस पर गृहमंत्री शाह ने दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को दिल्ली पुलिस के 74वें स्थापना दिवस के अवसर पर सभी कर्मचारियों और उनके परिवार वालों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी वे राजधानी की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं। बतौर गृह मंत्री शाह दिल्ली पुलिस के प्रभारी हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि दिल्ली पुलिस के 74वें स्थापना दिवस पर सभी कर्मियों और उनके परिजनों को हार्दिक शुभकामनाएं। विपरीत परिस्थितियों में भी देश की राजधानी की सुरक्षा एवं शांति-व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए पूर्णत: समर्पित दिल्ली पुलिस के बहादुर जवानों के साहस, संयम और संकल्प को सलाम करता हूं।

नरेंद्र मोदी 25 फरवरी को तमिलनाडु में करेंगे भाजपा का चुनावी शंखनाद

नई दिल्ली। आगामी तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 फरवरी को यहां एक चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे। तमिलनाडु के भाजपा अध्यक्ष एल मुरुगन ने सोमवार को यह जानकारी दी। राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के 12 जिलों के वरिष्ठ नेताओं और पार्टी कार्यसमिति के सदस्यों के साथ एक बैठक के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जनसभा के स्थान और समय की जानकारी जल्द ही घोषित की जाएगी। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु का दौरा किया था और स्वदेश निर्मित अर्जुन टैंक सेना को सौंपा था। इसके अलावा उन्होंने कई परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित की तो कई रेल सहित विभिन्न क्षेत्र की परियोजनाओं को उन्होंने शिलान्यास भी किया। मुरुगन ने बताया कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी 21 फरवरी को राज्य का दौरा करेंगे और भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) के एक सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लॉन्च किया ई-छावनी पोर्टल लोगों को मिलेगा लाभ

नई दिल्ली। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भारत पूरी दुनिया के लिए संभावनाओं का देश बन गया है। चाहे रक्षा हो, अर्थव्यवस्था हो, कृषि हो, व्यापार हो या फिर आईटी क्षेत्र, विश्व भारत की एक नई छवि देख रहा है। भारत को लेकर पहले जो धारणा थी, वो बीते कुछ वर्षों में अब बदल चुकी है। ये बात रक्षा संपदा भवन में आयोजित ई-छावनी पोर्टल के लोकार्पण समारोह के दौरान केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सामाजिक आर्थिक विकास की भरपूर कोशिश कर रही है। साथ ही शासन प्रणाली व प्रक्रिया में बदलाव की दिशा में केंद्र सरकार प्रयासरत है। ताकि इज आफ लिविंग और इज आफ डूइंग के माध्यम से सरकार जनता को सुविधा दे सकें। रहने की सुविधा, कुछ करने की सुविधा लोगों को प्राप्त हो। उन्होंने ई-छावनी पोर्टल के लोकार्पण की सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई दी। मिनिमम

गवर्मेंट, मैक्सिम गवर्नेंस माडल का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि ई-छावनी पोर्टल अच्छे शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालांकि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इससे छावनी के निवासियों की काफी समस्याओं का समाधान होगा। लंबे समय तक जन प्रतिनिधि रहने के कारण मैं छावनी के निवासियों की समस्या को भलीभांति समझता हूं। ई-छावनी पोर्टल पर लोग न सिर्फ अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं बल्कि समस्या का समाधान भी प्राप्त कर सकते हैं। सिस्टम, सिटीजन फ्रेंडली बने इस दिशा में हमारी कोशिश जारी है। लोगों को छोटे-छोटे कार्यां के लिए सरकारी दफ्तर का चक्कर न लगाना पड़े और न ही उन्हें समस्या के समाधान के लिए घंटो लाइन में खड़ा होना पड़े। इन सभी संकटों से निजात दिलाने में ई-छावनी पोर्टल एक सराहनीय प्रयास है। अच्छी बात ये है कि मोबाइल व कंप्यूटर दोनों पर इस पोर्टल का लोग इस्तेमाल कर सकते हैं। चार-पांच माह में इस पोर्टल को तैयार करने में रक्षा मंत्रालय ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। इसके लिए रक्षा सचिव, भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, रक्षा महानिदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस उम्मीद के साथ इस पोर्टल का लोकार्पण किया जा रहा है, उम्मीद है कि वह उन उम्मीदों पर खरा उतरेगा। इसके लिए समय-समय पर लोगों का फीडबैक भी लिया जाना चाहिए। छावनी में रहने वाले लोगों के जीवन को सुविधाजनक बनाने के संकल्प के साथ हमे आगे बढ़ने की जरूरत है। इस अवसर पर चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत, रक्षा सचिव अजय कुमार, रक्षा महानिदेशक दीपा बाजवा मौजूद रही।

टूलकिट केस में निकिता ने स्वीकार की धालीवाल के साथ मीटिंग की बात, कहा हिंसा भड़काने का नहीं था इरादा

नई दिल्ली। टूलकिट विवाद में गिरफ्तार निकिता जैकब ने गणतंत्र दिवस से पहले जूम मीटिंग में शामिल होने की बात स्वीकार कर ली है। इस मीटिंग में पोएटिक जस्टिस फाउंडेशन के संस्थापक एमओ धालीवाल, दिशा रवि और अन्य कार्यकर्ता शामिल हुए थे। जैकब के वकील द्वारा मुंबई पुलिस को सौंपे गए एक दस्तावेज में दावा किया गया है कि टूलकिट को एक्स्टिशिएशन रिबेलियन (एक्सआर) इंडिया द्वारा तैयार किया जा रहा है।

इस कबूलनामे के बावजूद जैकब ने स्वीडिश जलवायु कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग के साथ किसी भी जानकारी को साझा करने से इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि दस्तावेज एक सूचनात्मक पैक था और हिंसा भड़काने का इरादा नहीं था। उन्होंने यह भी दावा किया है कि उसकी कोई भी धार्मिक या राजनीतिक मंशा नहीं थी।

इसके अलावा, जैकब ने चार सप्ताह के लिए गिरफ्तारी पर रोक लागने की मांग की है।

इसके साथ ही किसी भी आक्रामक कार्रवाई से अंतरिम संरक्षण और दिल्ली पुलिस को उसके खिलाफ दर्ज प्राथमिकी की एक प्रति साझा करने के लिए एक निर्देश देने की मांग की है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, ट्विटर पर गणतंत्र दिवस से पहले तूफान पैदा करने के लिए खालिस्तानी पोएट्री जस्टिस फाउंडेशन के संस्थापक एम. धालीवाल ने अपने एक सहयोगी के जरिए एक्टिविस्ट निकिता जैकब से संपर्क किया।

सूत्रों के मुताबिक, चार दिन पहले स्पेशल सेल की टीम निकिता जैकब के घर गई और उनके इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की जांच की। इससे टूलकिट दस्तावेज के निर्माण और उसके प्रसार के संबंध में 21 वर्षीय दिशा रवि को बेंगलुरु से गिरफ्तार किया गया था। वह 'टूलकिट' दस्तावेज के संपादकों में से एक थी। दिशा को पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। बाद में सोमवार को दिल्ली पुलिस ने निकिता जैकब और शांतनु के खिलाफ भी गैर-जमानती वारंट जारी किया।

आतंकियों को सात पिस्तौलें उपलब्ध कराने वाला युवक सारण से गिरफ्तार

छपरा। बिहार के सारण जिले के मढ़ौरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले देव बहुआरा निवासी रिटायर शिक्षक महफूज अंसारी के 25 वर्षीय पुत्र जावेद को पुलिस ने मढ़ौरा के देव बहुआरा स्थित उसके पैतृक घर से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि जावेद की दोस्ती अलीगढ़ के एक कॉलेज में आतंकी संपर्कों वाले कश्मीर के मुश्ताक नामक एक युवक से हुई। जावेद पर आरोप है कि उसने सारण से करीब 7 पिस्टल मुश्ताक को मुहैया कराई। मुश्ताक ने पाकिस्तान के इशारे पर आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने वाले हिदायतुल्लाह को पिस्तौलें सौप दीं। यह भनक लगते ही पुलिस की स्पेशल टीम ने जावेद को उसके घर से दबोच लिया। स्थानीय मुखिया और अन्य ग्रामीणों का कहना है कि जावेद पहले कहीं बाहर रहकर पढ़ाई करता था। इधर करीब एक माह से वो घर पर ही रह रहा था। वह घर से बहुत कम ही बाहर निकलता था और घर वाले उसके बीमार रहने की बात बताते थे। जावेद कुल पांच भाई और एक बहन है।

पुलिस द्वारा दबोचे जाने के बाद गांव वाले और घर वाले इस बात का पता लगा रहे हैं कि आखिर किस जुर्म में पुलिस जावेद को उठा ले गई। ग्रामीणों के अनुसार गांव में जो पुलिस टीम आई थी उसमें 40 से 50 जवान शामिल थे, हालांकि सारण के एसपी संतोष कुमार ने बताया कि उन्हें इस मामले में कोई खास जानकारी नहीं है।

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने पुलिस के जज्बे को किया सलाम और दिल से की ऊंचाइयों पर पहुंचने की कामना

» **विजय गौड़ विशेष संवाददाता**

दिल्ली पुलिस ने आज अपना 74 वां स्थापना दिवस न्यू पुलिस लाइन, किंग्सवे कैंप ग्राउंड में एक भव्य समारोह के साथ मनाया। केंद्रीय राज्य मंत्री (गृह) किशन रेड्डी ने मुख्य अतिथि के रूप में, पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव की उपस्थिति में सलामी ली। अपने स्वागत भाषण में , पुलिस आयुक्त, एसएन श्रीवास्तव ने दिल्ली पुलिस के गणतंत्र दिवस पुलिस द्वारा 14 साल के अंतराल के बाद सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग की ट्रॉफी को जीतने के लिए बधाई देते हुए दिल्ली पुलिस के जवानों की सीए-विरोधी विरोध प्रदर्शनों से निपटने के लिए प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस ने दंगों में 755 मामले दर्ज किए हैं और दंगा मामलों की स्वतंत्र रूप से और निष्पक्ष तरीके से जांच करने का विश्वास दिलाया। उन्होंने कहा कि भारत में 24 मार्च,2020 को एक राष्ट्रव्यापी तालाबंदी की घोषणा की गई थी। दिल्ली पुलिस के जवान इस मौके पर जनता से आत्मिक भाव से जुड़े और शहरवासियों को आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति की सुविधा प्रदान की। उनके इस मानवीय भाव प्रदर्शन को देखते हुए, आयुक्त पुलिस, दिल्ली ने कहा कि यह चरित्र की एक वास्तविक परीक्षा थी और दिल्ली पुलिस इन चुनौतीपूर्ण समय से लोगों की एक बड़ी सद्भावना, सम्मान और विश्वास अर्जित करके उभरी, और जनता के दिल

पर गहरी छाप छोड़ी लॉकडाउन के अनलॉक होने के साथ आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि होने की उम्मीद थी। एक बार फिर दिल्ली पुलिस ने अपराध पर नियंत्रण के लिए समर्पण के साथ लगन से काम किया, जिसके परिणामस्वरूप सड़क अपराध में आधी से अधिक गिरावट आई। कमजोर वर्गों के खिलाफ अपराध में महत्वपूर्ण गिरावट दर्ज की गई। लापता बच्चों की बरामदगी से प्रोत्साहन योजना को भी बल मिला।

शेष भाग पेज २

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कामधेनु आयोग का गठन

आयोग कामधेनु गौ विज्ञान प्रचार-प्रसार परीक्षा का आयोजन करेगी

» **मदरलैंड संवाददाता**

नई दिल्ली। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कामधेनु आयोग का गठन देसी नस्ल की गायों और उसकी संतति के संरक्षण संवर्धन और सुरक्षा के लिए किया गया है। राष्ट्रीय कामधेनु आयोग नीति का निर्धारण करने और गाय से संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन को दिशा निर्देश देने के लिए अधिकार प्राप्त स्थाई निकाय है। जिसमे किसानों महिलाओं की आजीविका पर अधिक जोर दिया जा सके। विद्यार्थियों द्वारा युवा पीढ़ी एवं जन जन तक देसी गायों के सर्वांगीण महत्व को पहुंचाने के लिए तथा लोगों को सही जानकारी मुहैया कराने के लिए तथा उनको इस उद्देश्य के लिए प्रेरित करने हेतु राष्ट्रीय कामधेनु आयोग कामधेनु गौ विज्ञान प्रचार-प्रसार परीक्षा का आयोजन करने जा रही है। यह परीक्षा ऑनलाइन होगी जिसके बारे में जानकारिय वेबसाइट kamdhenu.gov.in और kamdhenu.blog और सोशल मीडिया पर उपलब्ध होगी। देसी नस्ल की गायों के बारे में जो जानकारी जन समुदाय तक होनी चाहिए वह सभी एवं इस विषय में उत्सुकता जगाने की दिशा में शोध कार्यो के लिए प्रेरित करने की दिशा में तथा गायों के माध्यम से आमदनी कैसे की जा सकती है, इसकी सही जानकारी देने के लिए एक प्रभावी कदम होगा। गाय दूध देती है उससे भी समुचित आर्थिक उपयोग को गोपालक एवं समाज तक पहुंचाने में उपयुक्त वातावरण का निर्माण करने में सहायक होगा।

तीसरे कार्यकाल के एक वर्ष पूरे होने पर सीएम केजरीवाल ने गिनाई सरकार की उपलब्धियां

नई दिल्ली। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार के तीसरे कार्यकाल के एक साल पूरे होने पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल प्रेस कांफ्रेंस कर अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाई। सीएम केजरीवाल ने कहा कि एक साल पहले लोगों ने मुझे फिर से सेवा करने का मौका दिया। यह एक कठिन वर्ष होने के बावजूद, हमने कोरोना वायरस से निपटने के लिए मिलकर काम किया। सरकार ने प्रदूषण को रोकने के लिए किसानों को पूसा इंस्टीट्यूट के बायो डीकम्पोजर को दिया। इससे पराली उनके खेत में ही गलकर खाद बन गई।दरअसल, मुख्यमंत्री के तौर पर अरविंद केजरीवाल ने छह साल का कार्यकाल मंगलवार को यानी 16 फरवरी को पूरा कर लिया है। आम आदमी पार्टी की सरकार का यह लगातार तीसरा कार्यकाल है। बता दें कि दिल्ली में अरविंद केजरीवाल सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला साल 16 फरवरी पूरा हो रहा है। हालात कुछ ऐसे बने कि तीसरी पारी शुरू करते ही कोरोना की महामारी ने रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया।

चुनौती अभूतपूर्व थी, स्थितियां डरा रहीं थीं, असमंजस बढ़ रहा था, लेकिन देश के साथ दिल्ली भी जीती। सरकार की पूरी मशीनरी कोरोना पर काबू पाने में जुटी। परिस्थितियों को अनुकूल करने के लिए सरकार ने खजाना खोला। कई विकास कार्य रुके, लेकिन लोगों की जान बचाना ज्यादा जरूरी था। सरकार की तीसरी पारी का पहला साल कोरोना से जूझने में बीता-अकेले भी और केंद्र के साथ मिलकर भी। संक्रमण नियंत्रित हुआ तो अर्थव्यवस्था और विकास को पटरी पर लाने की दिशा में काम शुरू हुआ।

दो फ्लाईओवरों और दो अस्पतालों का उद्घाटन किया गया और राशन की डोर स्टेप डिलीवरी व दिल्लीवासियों को हेल्थ कार्ड जारी करने की योजनाएं शुरू करने की घोषणाएं भी की गईं। ये महत्वाकांक्षी योजनाएं गहरा असर डाल सकती हैं।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

दिल्ली की कोर्ट ने राजद्रोह मामले में कन्हैया, उमर खालिद, अनिर्बान व अन्य को 15 मार्च को तलब किया

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने 2016 के राजद्रोह मामले में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ (जेएनयूएसयू) के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार और नौ अन्य के खिलाफ दिल्ली पुलिस द्वारा दायर आरोप पत्र पर संज्ञान लिया और 15 मार्च को उन्हें तलब किया है। अदालत सूत्रों ने बताया कि मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट (सीएमएम) पंकज शर्मा ने दिल्ली पुलिस को मामले में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी मिलने के करीब एक साल बाद सोमवार को आरोप पत्र का संज्ञान लिया है।

कन्हैया कुमार के अलावा इस मामले के आरोपियों में जेएनयू के पूर्व छात्र उमर खालिद और अनिर्बान भट्टाचार्य भी शामिल हैं। उन पर भारत विरोधी नारे लगाने का आरोप है। मामले में जिन सात अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया गया है, उनमें कश्मीरी छात्र आकिब हुसैन, मुजीब हुसैन, मुनीब हुसैन, उमर गुल, रईया रसूल, बशीर भट और बशारत शामिल हैं। उनमें से कुछ जेएनयू, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्र हैं।

भाकपा नेता डी राजा की बेटी अपराजिता, शेहला रशीद (तत्कालीन जेएनयूएसयू उपाध्यक्ष), रमा नागा, आशुतोष कुमार, बनोज्योत्सना लाहिड़ी (सभी जेएनयू के पूर्व छात्र) समेत 36 अन्य के नाम आरोप पत्र के 12वें कॉलम में हैं, क्योंकि उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं हैं। आरोपियों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 124 ए (राजद्रोह), 323 (जानबूझकर चोट पहुंचाना), 471 (फर्जी कागज या इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड का वास्तविक की तरह इस्तेमाल करना), 143 (अवैध सभा का हिस्सा होना के लिए दंड), 149 (अवैध सभा का हिस्सा होना), 147 (दंगा करना) और 120 बी (आपराधिक साजिश) के तहत आरोप लगाए गए हैं। भाजपा के तत्कालीन सांसद महेश गिरी और आरएसएस की छात्र इकाई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की शिकायत पर 11 फरवरी 2016 को वसंत कुंज (उत्तर) थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए और 120बी के तहत मामला दर्ज किया गया था।

सरस्वती पूजा के दिन ही बच्चे करते हैं पढाई की शुरूआत

» **संध्या कुमारी**

नई दिल्ली। लोग कहीं भी रहें लेकिन अपनी लोक परंपरा और कुलाचार का निर्वहन करते ही हैं। वसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा पहले राजधानी दिल्ली में नहीं के बराबर देखी जाती है। हाल के वर्षों में जैसे जैसे बिहार के युवाओं ने दिल्ली में आना शुरू किया, तो यहां भी सरस्वती पूजा धूमधाम से होने लगी। अब तो शायद ही कोई मुहल्ला होगा, जहां विद्या की देवी सरस्वती पूजनोत्सव न होता हो। बुराडी क्षेत्र में भी सरस्वती पूजा धूमधाम से मनाया जा रहा है। बिहार में खासकर मिथिला में वसंत पंचमी के दिन लोग अपने बच्चे को पहली बार पढाई की औपचारिक शुरूआत इसी दिन करते हैं। इसे भट्ठा पकडाना भी कहते हैं। क्रास रोड संत नगर निवासी सतीश चन्द्र झा ने मंगलवार को इस परंपरा का निर्वहन किया। उन्होंने कहा कि हमारी पंरपराएं ही हमारा मार्गदर्शन करती है। जो लोकाचार में सदियों से चली आ रही है, वह तार्किक और वैज्ञानिक होंगी हीं। 21वीं सदी में एक पढा लिखा अभिभावक अपने लोक संस्कार के प्रति इस प्रकार से सचेष्ट रहेगा, तो हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हमारी अच्छी बातें यूं ही चलती रहेंगी। बीते साल इसी प्रकार सान्वी ने अपनी पढाई शुरू की। इस वर्ष वो खुद मां सरस्वती की अराधना की। असल में, वसंत पंचमी को अबूझ मुहूर्त के रूप में माना जाता है। इसके आगमन का प्रभाव प्रकृति और जीवन दोनों पर बखूबी पड़ता है। ज्योतिर्विद अवध नारायण द्विवेदी के अनुसार वसंत को विद्यारंभ की वैदिक परम्परा रही है। इस अवसर पर आचार्यों के सानिध्य में 3 से 5 साल के बच्चों का विद्यारंभ कराना चाहिए। इसके लिए विधि विधान से पाटी पूजन कराया जाता है। बच्चे का हाथ पकड़कर पाटी पर अनार या चमेली की कलम से ॐ लिखवाया जाता है।

पुलिस वर्दी में छिपे भेड़िये, रंगदारी और भ्रष्टाचार में गिरफ्तार

» **मदरलैंड संवाददाता**

नोएडा। खाकी के दम पर कब अपराध की दुनिया में कदम पड जाते हैं खाकी के नशे में पता ही नहीं चलता। ऐसा ही नोएडा साइबर क्राइम ब्रांच में तैनात 6 पुलिस वालों जिनमें एक सब इंस्पेक्टर चेतन प्रकाश तथा पांच कांस्टेबलों को भी पता नहीं चल पाया कि वे वर्दी के शरुर में अपराध कर रहे हैं। बीते 10 फरवरी को मौजूद चौहान नामक बंधन फाइनेंस सर्विसेज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ने नोएडा के थाना फेस थर्ड में शिकायत दर्ज करायी थी कि उसके तीन मजदूरों का अपहरण कर लिया है। जिन्हें छोडने की एवज में 7 लाख रुपये की मांग की जा रही है। बाद में सौदा पांच लाख में तय हुआ, दो लाख दे भी दिये गये। नोएडा का साइबर थाना लखनऊ से संचालित होता है। इस शिकायत के मिलने पर पुलिस ने जांच में पाया कि ये शिकायत सही है। इस मामले में सभी आरोपी साइबर क्राइम ब्रांच के थाने से संबंधित हैं जो लखनऊ से संचालित है। इस पर उच्च अधिकारियों से निर्देश लिये गये। तय समय पर रकम देने के लिए नोएडा स्टेडियम पर सोनू नामक युवक आया। जो आयल मिल गेट मोदीनगर का रहने वाला है। उसे रुपयों से भरे पैकेट के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। उसने बताया कि उसे चेतन प्रकाश दरोगा और नितिन चौधरी नामक सिपाही ने रुपये लेने भेजा है। उसके बाद थोडी दूरी पर मौजूद नितिन चौधरी को पकड लिया गया। लेकिन सब इंस्पेक्टर चेतन प्रकाश, सुमित मंडार, सुमित पावला, सुमित शर्मा व सुमित नागर सभी साइबर क्राइम ब्रांच के कर्मी फरार हो गये हैं।

संक्षिप्त समाचार

जून तक पिंक लाइन पर मेट्रो होगी ड्राइवरलेस

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो की सबसे बड़ी पिंक लाइन (58.6 किमी) जून तक ड्राइवरलेस हो जाएगी। मयूर विहार पॉकेट वन और त्रिलोकपुरी के बीच करीब डेढ़ किमी का निर्माण पूरा न होने की वजह से इसे ड्राइवरलेस नहीं किया है इस दायरे में निर्माण पूरा होने से पिंक लाइन पर यात्रियों को वैकल्पिक परिवहन साधनों की जरूरत नहीं होगी। डीएमआरसी ने मेजेंटा के बाद पिंक लाइन को ड्राइवरलेस बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। फिलहाल त्रिलोकपुरी-मयूर विहार (पॉकेट वन) के बीच लाइन बिछाने और पिलर निर्माण का काम अंतिम चरण में है। जमीन की उपलब्धता न होने की वजह से डेढ़ किमी दायरे में मेट्रो परिचालन शुरू नहीं हो सका। इस समस्या को दूर करने के बाद निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। डीएमआरसी के प्रबंध निदेशक डॉ. मंगू सिंह ने कहा कि पिंक लाइन पर त्रिलोकपुरी-मयूर विहार फेज-वन के बीच निर्माण मार्च तक पूरा हो जाएगा। सिग्नलिंग, टेस्टिंग और ट्रायल के बाद जून में पिंक लाइन कॉरिडोर पर मेट्रो दौड़ने लगेगी। इस सेक्शन पर निर्माण पूरा होने से मजलिस पार्क से मयूर विहार पॉकेट वन और इससे आगे त्रिलोकपुरी-शिव विहार के बीच यात्रियों को सफर का मौका मिल सकेगा। फेज-तीन की दो लाइनों को ड्राइवरलेस किया जा सकता है। फेज-तीन की दोनों लाइनों पर मेट्रो को बगैर चालक दौड़ाने के लिए सभी तकनीकी इंतजाम पहले से पूरे हैं। ड्राइवरलेस मेट्रो पर डॉ. मंगू सिंह का कहना है कि 99.9 फीसदी अनुभव काफी अच्छा है। 0.01 फीसदी कमियां हैं, जो सुरक्षा नहीं बल्कि परिचालन से संबंधित रहीं। इन्हें दूर किया गया। विदेश में ऐसी किसी पहल से पहले एक-डेढ़ साल तक ट्रायल होता है। देश में डीएमआरसी ने पहले ही परिचालन की शुरूआत कर दी। इसी दौरान टेस्टिंग और ट्रायल भी जारी रहा। इसके लिए देर रात में काम खत्म किया गया, ताकि यात्री सुविधा के साथ तकनीकी बदलाव को भी जल्द अमली जामा पहनाया जा सके। मेजेंटा लाइन को चालक रहित बनाने के बाद यात्रियों के फीडबैक के मुताबिक जरूरी बदलाव किए जा रहे हैं।

वसंत पंचमी पर मेवाड़ में विधि विधान से हुआ मां शारदे पूजन

» **नवीन दास**

गाजियाबाद। वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप आफ इंस्टीट्यूषंस के मंदिर में वसंत पंचमी पर्व श्रद्धा और उत्साह से मनाया गया। मां शारदे की मूर्ति को पंचामृत से स्नान कराया गया। विधि विधान से मां शारदे पूजन व स्नान मेवाड़ ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार गदिया व इंस्टीट्यूषंस की निदेषिका डा. अलका अग्रवाल ने कराया। वस्त्र, फूल-फल, मेवे का भोग लगाने के बाद मंदिर परिसर में मेवाड़ के षिक्षण स्टाफ व विद्यार्थियों ने भजन-कीर्तन से मां शारदे के प्रति अपनी आस्था, आराधना व वंदना के स्वर समर्पित किए। डा. गदिया के अनुसार ने हर वर्ष वसंत पंचमी का पर्व इसी प्रकार से मनाया जाता है। इसका मकसद षिक्षा के मंदिर में शारदे का वंदन कर षिक्षा का माहौल बनाये रखना तो है ही, हर सम्प्रदाय के विद्यार्थियों में मां शारदे का पूजन-वंदन करने की प्रेरणा देना भी है। प्रसाद वितरण के साथ इसका समापन हुआ। श्री ठाकुर द्वारा बालिका विद्यालय में भी हर वर्ष की तरह इस बार भी बसंत पंचमी का महोत्सव मंगलवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ देवी सरस्वती की वंदना से किया गया।

समस्त वेदध्वनियों और मंत्रों से सारा वातावरण गूंज उठा विद्यालय की छात्राओं ने हवन में आहुति देकर अपने उज्जवल भविष्य की कामना की विद्यालय के मैनेजर अजय गोयल तथा प्रधानाचार्या पूनम शर्मा ने सभी ही विद्यार्थियों और सभी अध्यापिकाओ को बसंत पंचमी की शुभकामनाएं दी।

रितिक का हत्यारा पुलिस मुठभेड़ में घायल 25 हजार था ईनाम

» **अजय प्रताप सिंह**

नई दिल्ली। बीते 24 जनवरी को सूरजपुर के गुलिस्तां गांव से बिहार वासी ब्रह्मदेव के 4 वर्षीय पुत्र रितिक का अपहरण और बाद में निर्मम हत्या कर देने वाले बदमाश विजय को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। इससे पहले हत्यारे विजय के दूसरे साथी अनिल को जांच अधिकारी शरत कांत शर्मा ने कन्नौज से दबोचकर अबोध रितिक की लाश बरामद की थी। रितिक के अपहरण और हत्या तथा षड्यंत्र का मुख्य आरोपी विजय फरार था, लेकिन जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर शरत कांत शर्मा ने अपने मुखबिर तंत्र को उसके सूराग ढूंढने पर लगाया हुआ था। इधर मृतक बच्चे के परिजन और मीडिया लगातार पुलिस पर दबाव बनाये हुए थे। बच्चे के परिजन हत्यारों को गोली मार देने की लगातार पुलिस से गुहार लगा रहे थे। तभी मुखबिरों की सही जानकारी पर सब इंस्पेक्टर शरत कांत शर्मा ने हत्या अभियुक्त को घेर लिया, अभियुक्त ने भागने का प्रयास किया और तमंचे से फायरिंग की। पुलिस टीम ने अपने बचाव में गोली चलाई जो हत्या अभियुक्त विजय के पैर में लगी। उसे गिरफ्तार कर अभिरक्षा में फिलहाल इलाज कराया जा रहा है।

शिष्यों के सामने अपमान के गुस्से में किया 5 लोगों का कत्ल

नई दिल्ली। रोहतक के अखाड़े में मुख्य कोच मनोज मलिक सहित पांच लोगों की हत्या करने वाले सुखविंदर ने खुलासा किया है कि कुश्ती सीख रहे शिष्यों के सामने अपमान से वह गुस्से में था। उसे शक था कि मेहनत से खड़े किए गए अखाड़े से उसे निकालने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। इसी कारण उसने वारदात की। दिल्ली पुलिस की पूछताछ में सुखविंदर ने बताया कि साजिश के कारण वह इतना परेशान था कि अवसाद में चला गया। दिल्ली पुलिस ने उसे अदालत में पेश करने के बाद तिहाड़ जेल भेज दिया। सोमवार को रोहतक पुलिस ने आगे की पूछताछ के लिए उसे अदालत के जरिये अपनी सुपुर्दगी में ले लिया। दिल्ली पुलिस ने समयपुर बादली इलाके में कार से घूम रहे सुखविंदर को गिरफ्तार किया था। उसके पास से पिस्टल और पांच कारतूस मिले। पूछताछ में उसने बताया कि एक दिन पहले ही उसने रोहतक के जाट कॉलेज अखाड़े के मुख्य कोच, उनकी पत्नी समेत पांच लोगों की हत्या की थी। पुलिस ने उसके खिलाफ शस्त्र अधिनियम का मामला दर्ज कर रोहतक पुलिस को इसकी सूचना दी।

लाल किला हिंसा: दीप सिद्धू की पुलिस कस्टडी 7 दिन बढ़ी

नई दिल्ली। कृषि कानूनों के विरोध में आंदोलन कर रहे किसानों ने 26 जनवरी के दिन जो ट्रैक्टर परेड निकाली थी, उसके दौरान लाल किले पर हुई हिंसा के मुख्य आरोपी दीप सिद्धू की पुलिस हिरासत 7 दिन के लिए बढ़ा दी गई है।

इस मामले में पुलिस की हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद सिद्धू को मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया था। पुलिस ने सिद्धू से हिरासत में पूछताछ के लिए और समय दिए जाने की अपील की थी और कहा था।

आपने अपने बेटे को एक बार फिर सेवा करने का मौका दिया: सीएम केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार को एक साल पूरे होने पर कहा कि आपने 1 साल पहले अपने बेटे को एक बार फिर सेवा करने का मौका दिया और हम सबने मिलकर पूरी दुनिया में दिल्ली का नाम रौशन किया। कोरोना के खिलाफ दिल्ली सरकार के होम आइसोलेशन, प्लाज्मा बैंक और ऑक्सीमीटर जैसे कामों की पूरी दुनिया में चर्चा हो रही है। दिल्ली सरकार ने लॉकडाउन के दौरान लाखों दिल्लीवासियों को खाना खिलाया, फ्री राशन बांटा और रास्ते में फंसे मजदूरों को उनके घर पहुंचाया। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा, हमने तमाम चुनौतियों के बीच फ्री बिजली व पानी योजना को जारी रखा और सरकारी स्कूलों के बच्चों ने बोर्ड परीक्षा में 98 प्रतिशत रिजल्ट लाकर दिल्ली वालों का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। यह दो करोड़ दिल्ली वासियों की सरकार है, जो 24 घंटे दिल्ली वासियों की जिंदगी आसान बनाने के लिए काम करती है और करती रहेगी। सीएम केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार ने एक साल का कार्यकाल पूरा कर लिया है। सीएम केजरीवाल ने कार्यकाल के एक साल पूरे होने वीडियो संदेश जारी किया।

सीएम केजरीवाल ने कहा कि एक साल पहले आप सबने एक बार फिर अपने बेटे को आप की सेवा करने का एक और मौका दिया। यह बहुत कठिन साल था, लेकिन हम सब दिल्ली वालों ने मिलकर एक परिवार की तरह काम किया और पूरी दुनिया में दिल्ली का नाम रौशन किया। कोरोना महामारी के बीच दिल्ली के सभी लोगों ने सरकार के साथ मिलकर शानदार काम करके दिखाया है। कोरोना के खिलाफ दिल्ली सरकार के होम आइसोलेशन, प्लाज्मा बैंक और ऑक्सीमीटर, इन जैसे कामों की तो पूरी दुनिया में चर्चा हो रही है। दिल्ली सरकार ने लॉकडाउन के दौरान लाखों दिल्लीवासियों को खाना खिलाया। लोगों को फ्री राशन बांटा और रास्ते में फंसे मजदूरों को उनके घर पहुंचाया।

सीएम केजरीवाल ने कहा कि इन तमाम चुनौतियों के बीच ह्यआपह्ण की सरकार ने फ्री बिजली और पानी की योजना को जारी रखा। इन सब के बीच हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चों ने बोर्ड परीक्षा में 98 प्रतिशत रिजल्ट लाकर दिल्ली के 2 करोड़ लोगों का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया।

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने...

प्रथम पेज का शेष

अपने काम में पुलिस कर्मियों को अधिक पेशेवर और आधुनिक तकनीक की दृष्टि से, दिल्ली पुलिस की खोजी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए साइबर और फोरेंसिक विशेषज्ञों को प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय, गांधी नगर, गुजरात के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

पुलिस कार्य में प्रौद्योगिकी की आवश्यकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए आईआईआईटी, दिल्ली के साथ एक और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए इस अवसर पर बोलते हुए, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री किशन रेड्डी ने दिल्ली पुलिस को शानदार उपलब्धियों के लिए बधाई दी और आने वाले वर्षों में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए बल के लिए कामना की। उन्होंने दिल्ली पुलिस की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसने शहर की सेवा करते हुए हमेशा नागरिकों को खुद से पहले रखा। रेड्डी ने कहा कि दिल्ली हमेशा सभी गतिविधियों के केंद्र में है और इसलिए यह हमेशा असहिष्णु ताकतों के निशाने पर है जो राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को पसंद नहीं करते हैं। । मुख्य अतिथि ने स्वर्गीय हेड कॉन्स्टेबल रतन लाल को भी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने इन दंगों के दौरान अपनी जान गंवाई थी। उन्होंने कहा कि कोरोना संकट काल के दौरान जब हर कोई डर गया था 24 घंटे की उपलब्धता के लिए दिल्ली पुलिस की सराहना की, । यह समर्पित दिल्ली पुलिस का मानवीय चेहरा था जिसने यह सुनिश्चित किया कि भारत की रणनीति महामारी को नियंत्रित करने में अच्छी तरह से आगे बढ़ती है। किशन रेड्डी ने 34 दिल्ली पुलिस कोरोना वारियर्स को श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने इस महामारी से अपनी जान गंवाई। उन्होंने पुलिस कर्मियों द्वारा दिखाए गए धैर्य, धैर्य, वीरता और संयम की भी प्रशंसा की, जब 26 जनवरी को राष्ट्र विरोधी ताकतों ने किसानों की ढाल ली और बड़े पैमाने पर बर्बरता की। हालांकि, एक भी जीवन नहीं गया, जो बल द्वारा दिखाई गयी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है, जिसने अपने 500 से अधिक कर्मियों को घायल देखा।

विश्वविद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनका भूतकाल उनका भविष्य न बने: सिसोदिया

नई दिल्ली। भारतीय विश्वविद्यालय संघ, उत्तरी जोन द्वारा गुरुगोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय वर्चुअल उपकुलपति संवाद कॉन्फ्रेंस के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया शामिल हुए। उपमुख्यमंत्री ने नई शिक्षा नीति के सलाह से बने शिक्षा मंत्रालय का स्वागत करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति ने यह मान लिया कि शिक्षा का काम केवल मानव को संसाधन मात्र बनाना नही है। उन्होंने कहा कि अबतक भारत का शिक्षा मॉडल बच्चों को एक संसाधन के रूप में ढाल रहा था, उन्हें टूल के रूप में तैयार रह रहा था, जबकि शिक्षा का असल उद्देश्य बच्चों को एक अच्छा मानव और नागरिक बनाना है, संसाधन नही।

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने वर्तमान में उच्च शिक्षा के 4 चुनौतियों पर बात की। उन्होंने कहा कि भारत के विश्वविद्यालयों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती विस्तार करने की है। पिछले बीस सालों में भारत में स्कूलों से बड़ी संख्या में बच्चे पास होकर निकल रहे है, लेकिन हमारे विश्वविद्यालयों के पास उन्हें उच्च शिक्षा देने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं है। इसलिए उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालयों के विस्तार की जरूरत है। सिसोदिया ने कहा कि देश में आजादी के बाद शिक्षा पर कार्य हुए, लेकिन उसका लाभ सिर्फ 5 प्रतिशत विद्यार्थियों को ही मिला, जबकि शेष 95 प्रतिशत बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिल पाई। सरकारों की नीतियां और प्राथमिकताएं चाहे जो भी रही हों, लेकिन आउटकम पर नजर डालें तो यही दिखेगा कि 95 प्रतिशत बच्चे अच्छी शिक्षा से वंचित रह गए। इसलिए आज यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि हम शिक्षा का एक न्यूनतम मानदंड जरूर तय करें।

डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने कहा कि आज हमारे विश्वविद्यालयों के सामने अपनी पहचान बनाए रखने की चुनौती है। अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए विश्वविद्यालयों को अनुसंधानों एवं नवाचारों पर काम करने की आवश्यकता है। अपने पाठ्यक्रमों में उद्यमिता को शामिल करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को यह समझना होगा कि उनका भूतकाल उनका भविष्य नही बन सकता। भविष्य की मांगों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयों को अपने ढाँचे में बदलाव लाना होगा। मनीष सिसोदिया ने कहा कि आज भारत से ह्यब्रेन-ड्रेनह्ण हो रहा है। हम भारत की प्रतिभाओं को विदेशी कम्पनियों को दान दे रहे है। अमेरिका और यूरोप के देश विकासशील देशों की प्रतिभाओं को ढूंढ कर अपने देशों में ले जाते है।

हमें यह समझने की जरूरत है कि हमारे विद्यार्थी उन देशों की ओर क्यों आकर्षित हो रहे हैं? हमारे विश्वविद्यालय विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने में तो कामयाब हो रहे है, पर राष्ट्र निर्माण में उन प्रतिभाओं को शामिल करने में विफल रहे हैं। हमें हमारे विश्वविद्यालयों के माध्यम से इन प्रतिभाओं को राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनाना होगा।

बसंत पंचमी के दिन मां देवी सरस्वती की कृपा प्राप्त होती : डॉ एमपी सिंह

» **हृदयेश सिंह**

फरीदाबाद। 16 फरवरी 2021 को अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एमपी सिंह ने स्लम बस्ती व झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चों को पढ़ने हेतु पुस्तकें प्रदान की तथा उन सभी को पढ़ाई का महत्व बताया लक्ष्य प्राप्ति का उदाहरण देते हुए गुब्बारा फुला कर उड़ा कर दिखाया तथा गुब्बारे भी भेंट किए डॉ एमपी सिंह ने उनके कंसंट्रेशन को चेक किया तथा दिनचर्या की अच्छी आदतें को बताया और बसंत पंचमी के दिन लोग विद्या की देवी सरस्वती की आराधना करते हैं शिक्षा प्रारंभ करने या किसी नई कला की शुरूआत करने के लिए ये दिन बेहद शुभ माना जाता है इस दिन लोग पीले रंग का वस्त्र पहन कर सरस्वती मां की पूजा करते हैं बसंत पंचमी पर रवि योग और अमृत सिद्धि योग का खास संयोग है आज मनाई जा रही है बसंत पंचमी के दिन से ही वसंत ऋतु की शुरूआत होती है. इस दिन मां देवी सरस्वती की आराधना की जाती है इस दिन लोग पीले रंग का वस्त्र पहन कर सरस्वती मां की पूजा करते हैं बसंत पंचमी को श्री पंचमी भी कहते हैं. इस दिन लोग विद्या की देवी सरस्वती की आराधना करते हैं।

हिंदी साहित्य देश का शैक्षणिक एवं बौद्धिक वातावरण अवश्य बदलेगी: रवींद्र शुक्ल

» **स्वतंत्र सिंह भुल्लर**

नई दिल्ली। हिन्दी साहित्य भारती की ऑनलाइन राष्ट्रीय बैठक संस्था के संस्थापक डॉ. रवींद्र शुक्ल के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई, जिसमें देश भर से हिन्दी के 55 विद्वान उपस्थित रहे। बैठक में केन्द्रीय कार्यकारिणी की घोषणा के संदर्भ में चर्चा के साथ ही संस्था के उद्देश्यों का पुनःस्मरण करते हुये, प्रदेशों की कार्यकारिणियों की सक्रियता और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने की मूहिम के तहत चल रहे पत्र झ्र लेखन कार्यक्रम की प्रगति तथा सदस्यता अभियान पर भी चर्चा हुई। डॉ. रवींद्र शुक्ल ने अपने उद्बोधन में हिन्दी के विद्वानो को संस्था में जोड़ने की बात कही। उन्होने विश्वास दिलाया की हिंदी साहित्य भारती देश का शैक्षणिक एवं बौद्धिक वातावरण अवश्य बदलेगी। डॉ. शुक्ल ने आगामी 6 मार्च को विश्व भर में संस्था की ओर से एक प्रेस वार्ता करने को कहा है, जिसमें मई माह में हरिद्वार में होने वाले साहित्य भारती के वैश्विक अधिवेशन को लेकर जानकारी दी जाएगी। संस्था के केन्द्रीय महामंत्री डॉ. अनिल शर्मा ने कहा की उनकी संस्था हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु राष्ट्रपति के नाम ऑनलाइन एवं ऑफलाइन पत्र लिखेगी तथा संस्था के माध्यम से देश - विदेश में हिंदी पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन होगा। छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल डॉ. शेखर दत्त ने हिंदी को रोजगार से जोड़ने की बात कही। इसके अलावा बैठक में अनेक गणमान्य विद्वान उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

गोशाला के प्रथम स्थापना दिवस गौपालकों को किया सम्मानित

मदरलैंड संवाददाता , आगरा। पिनाहट ब्लॉक के गांव विजयगढ़ी स्थित बृजराज गौ सेवा ट्रस्ट के प्रथम स्थापना दिवस पर गौपालक एवं पशु चिकित्सक को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि रमाकांत उपाध्याय गौसेवा प्रमुख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं जिला संघ चालक सुरेश रहे। उन्होंने सभी को सम्बोधित किया और सभी को गोसेवा के लिए प्रयासरत रहने को कहा। कार्यक्रम में सभी गौपालकों को सम्मानित किया गया। इस दौरान संचालक घनश्याम परिहार,पशु चिकित्सक अधिकारी पिनाहट डॉ रविंद्र दुबे,पशु चिकित्सक फतेहाबाद डॉ कैलाश चंद्र लोधी,पशुधन प्रसार अधिकारी सोमवीर एवं बलवीर ने सरकार की पशुपालन विभाग की योजनाओं की जानकारी दी। गौपालक योगेश सिंह परिहार,अतुल शर्मा,नरेन्द्र चौहान,बृजमोहन तोमर,सनील मुदगल सुरेश,नंद किशोर दुवे,महेश, सुमित,रामरतन,गिर्राज,सुशील शर्मा मौजूद रहे।

आगामी पंचायत चुनाव को लेकर तितावी पुलिस अलर्ट

मुजफ्फरनगर। तितावी पुलिस की संदिग्ध वाहनों पर ताबड़तोड़ कार्यवाही थाना प्रभारी राधे श्याम यादव ने शुरू कर दिया है। संदिग्ध वाहनों की ली गई तलाशी और संदिग्ध व्यक्तियों से की गई पूछताछ। तितावी थाना क्षेत्र के लालूखेड़ी चेक पोस्ट पर चलाया चेकिंग अभियान किसी भी तरीके से कोई भी सुस्ती नही बरत रहे है कोतवाल राधेश्याम यादव, हर तरीके से अपराध को खत्म करने की ठान लिया है। पूरी टीम के साथ लालू खेड़ी चौकी चेक पोस्ट पर की वाहनों की जबरदस्त चेकिंग चल रही है।

एस. जे.डी स्कूल में मनाया गया गया बसंत पंचमी का पर्व

मदरलैंड संवाददाता , मैनपुरी। शहर के राजा बाग स्थित एस. जे.डी स्कूल एवं पैरामेडिकल इंस्टिट्यूट मैं बसंत पंचमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस मौके पर प्रधानाचार्य लोकेंद्र पाल ने मां सरस्वती के चित्र के सामने दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित कर पूजा अर्चना की। इसी के साथ बच्चों ने भी मां की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए। इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। वही प्रधानाचार्य ने बच्चों को बसंत पंचमी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी। इस अवसर पर प्रबंधिका चंद्रवती, गुरप्रीत कौर, समीक्षा, विनय, राजेंद्र, नीलम, अनुराधा, अल्पना, गौरव, संदीप, नीतू, राजश्री, कंचन प्रभा, संतोष श्रीवास्तव, दामिनी तिवारी, डॉक्टर जय सिंह, राजेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

चोरी कर रहे तीन चोर रंगे हाथो पकडे

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली के 220केवी बिजलीघर की रैलिंग व अन्य सामान चोरी कर रहे तीन लोगो को चैकीदार व स्टॉफ ने पकडकर पुलिस को सौंपा। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मंगलवार की सुबह थाना सिंभावली के 220केवी बिजलीघर की रैलिंग व अन्य सामान चोरी कर रहे तीन लोगो को चैकीदार व स्टॉफ ने पकडकर पुलिस को सौंपा। इस संबंध में बिजलीघर के एसडीओ इंद्रजीत सिंह ने पुलिस को तहरीर देते हुऐ बताया कि पिछले कुछ समय से रैलिंग आदि सामान चोरी के प्रयास की सूचना उन्हें मिली थी उन्होने चैकीदार को सर्तक रहने ओर स्टॉफ का सहयोग लेने की बात कही थी जिसमें उन्हें मंगलवार को कामयाबी मिली जब ऑटो लेकर आये तीन चोर रंगे हाथो पकडे गये जबकि एक फरार हो गया। इस संबंध में सिंभावली थानाध्यक्ष राहुल चैधरी का कहना है कि पुलिस मामले की जांच कर रही है।

चाइल्ड लाइन सदस्यों ने बस्ती के बच्चों के साथ बसंत पंचमी मनाई

» शंकरदेव तिवारी

आगरा। चाइल्ड लाइन सदस्यों ने बस्ती के बच्चों के साथ बसंत पंचमी मना कर मानवता का परिचय दिया। चाइल्ड लाइन सदस्य द्वारा नगला उदा बस्ती के बच्चों के साथ बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर कार्यक्रम किया। जिसमें बड़े उत्साह के साथ बच्चों ने भागीदारी दिखाई। सभी बच्चों ने मां सरस्वती की वंदना करते हुए संस्कृति कार्यक्रम की प्रस्तुति की। चाइल्ड लाइन सदस्य ने बच्चों को चाइल्ड लाइन टोल फ्री नंबर की जानकारी से बच्चों व महिलाओं को अवगत कराया। श्रम विभाग की कार्यकर्ता आशी ने बच्चों व महिलाओं को सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे सुमंगला योजना वृद्धा पेंशन लेबर कार्ड श्रम विद्या योजना के आदि के बारे में बताया। साथ ही लेबर कार्ड रजिस्ट्रेशन कैसे कराया जाता है उसके बारे में सभी महिलाओं को बताया। चाइल्ड लाइन कोऑर्डिनेटर ने महिला व बालिकाओं को नारी शक्ति जागरूकता कार्यक्रम के बारे में बताया और साथ ही बच्चों को कोमल मूवी दिखाई। जिससे बच्चों को गुड टच बैड टच सही गलत के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान दर्जनों बच्चे,महिलाएं मौजूद थे। चाइल्ड लाइन समन्वयक ऋतु वर्मा,चाइल्ड लाइन सदस्य गरिमा भदौरिया,विमलेश,असलम खान,पूनम आदि मौजूद रहे।

बसंत पंचमी का त्यौहार हर्षोउल्लास के साथ मनाया

» मदरलैंड संवाददाता

आगरा। पिनाहट कस्बा स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में बसंत पंचमी का कार्यक्रम हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान विधालय के प्रधानाचार्य वासुदेव ने सरस्वती माँ के चित्र पर दीप प्रज्वलन और पुष्प अर्पित करके कार्यक्रम की शुरूआत की। इस दौरान सभी अध्यापकों और छात्र छात्रओं ने भी सरस्वती माँ के चित्र पर पुष्प अर्पित किये। इस दौरान हीरालाल,रविंद्र तोमर, राजकुमार गुप्ता, पल्लवी, कौशकी मौजूद रही। वही कस्बा स्थित श्री डीपी सिंह इंटर कॉलेज में भी बसंत पंचमी का कार्यक्रम हुआ। प्रधानाचार्य डॉ राघवेंद्र चौहान ने सरस्वती माँ के चित्र पर पुष्प अर्पित किये इस दौरान डॉ धीरज चौहान, शिवानंद चौहान, अनिल शर्मा, मोनू समाधिया मौजूद रहे। इधर बसई अरेला के हरप्रसाद राजाराम डिग्री कॉलेज में बसंत पंचमी पर प्रधानाचार्य रामदेव पाराशर द्वारा दीप प्रजलन और पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस दौरान मनीष शर्मा, हरिविलास शर्मा, ओमहरी, शशि शुक्ला, वीरेंद्र, यूएस शर्मा आदि मौजूद रहे।

गढ में महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह का आयोजन

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। बसंत पंचमी के अवसर पर महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह के अवसर पर गढ नगर के मुख्य चैराहे पर बने शहीद स्तंभ पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुऐ जिलाधिकारी, एसपी, सीडीओ व विधायक ने पुष्प अर्पित करते हुऐ महाराजा सुहेलदेव के शौर्य व बलिदान पर आधारित ह्य गौरवगीतह्न के गायन एवं चलचित्र के साथ प्रधानंमत्री व मुख्यमंत्री का वर्चुअल उद्बोधन एवं प्रियवचनों का एलईडी के माध्यम से सजीव प्रसारण किया गया। बसंत पंचमी के अवसर पर महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह के अवसर पर गढ नगर के मुख्य चैराहे पर बने शहीद स्तंभ पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुऐ जिलाधिकारी अनुज सिंह, एसपी नीरज कुमार जादौन, सीडीओ उदय सिंह व गढ विधायक कमल सिंह मलिक ने पुष्प अर्पित करते हुऐ महाराजा सुहेलदेव के शौर्य व बलिदान पर आधारित ह्य गौरवगीतह्न के गायन एवं चलचित्र के साथ प्रधानंमत्री व मुख्यमंत्री का वर्चुअल उद्बोधन एवं प्रियवचनों का एलईडी के माध्यम से सजीव प्रसारण किया गया। जिलाधिकारी अनुज सिंह व अन्य वक्ताओ ने महाराज सुहेलदेव के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में शहीदो के परिजनो को फूलमाला पहनाकर व शाल भेंट करके सम्मानित किया। कार्यक्रम में गढ पालिका चैयरमेन सोना सिंह, एसडीएम विजय वर्धन तोमर,जिला विकास अधिकारी संजय कुमार आदि मौजूद रहे।

दरगाही बाबा की समाधि पर वैदिक रीति रिवाज के बीच चादरपोशी

» कांति प्रसाद

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली क्षेत्र के गांव लिसडी में दरगाही बाबा की सदियों पुरानी समाधि पर आयोजित होने वाले बसंत मेले का शुभारंभ कुंवर राहुल ढाना ने चादर चढाकर किया। जिसके बाद हजारों भक्तों ने बाबा की समाधि पर हाजिरी लगाकर मन्नत मांगी। मेले क्षेत्रीय विधायक कमल सिंह मलिक सहित हजारो श्रद्धालु पहुंचे। सिंभावली क्षेत्र के गांव लिसड़ी में तीन सौ साल से भी अधिक समय से दरगाही बाबा की समाधि पर लगने वाले मेले का शुभारंभ मंगलवार को पूर्व की भांति कुंवर राहुल ढाना ने वैदिक रीति रिवाज के बीच समाधि पर चादर चढाकर किया। मेले में दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तराखंड सहित देश के विभिन्न स्थानो से जनपदों से जुड़े हजारों भक्तों ने दरगाही बाबा की समाधि पर हाजिरी लगाकर संतान प्राप्ति जैसी मन्नतें मांगी। विदेशों में जाकर बस चुके देश से जुड़े कई परिवार भी मेले में आये ओर बाबा की समाधि पर मत्था टेका। जिनका अटूट विश्वास है कि समाधि पर चादर चढ़ाकर मन्नत मांगने वालों की मनोकामना अवश्य ही पूरी होती है। अखाडे के महंत डा0 देवेश्वरानंद ने बताया कि बाबा दुगार्दास उदासीन संप्रदाय के संत थे जिन्होंने भगवान की चरणागति प्राप्त कर सिद्धि हासिल की थी। मेले के आयोजन में समाधि के संचालक मंडल से चंद्रमणि उज्जैन अखाडे के महंत, पीतमदास,सुबोधमुनि, स्वामी भजनानंद, परमेश्वरदास, गजराज सिंह, शिवम पंडित की महत्पूर्ण भूमिका है।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का समापन

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली के किसान पीजी कालिज में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनो इकाई के चल रहे सात दिवसीय शिविर का मंगलवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन हुआ।

इस अवसर पर वक्ताओ ने विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा करने ओर शिविर में सिखे स्वच्छता, अनुशासन,समाज सेवा को अपने जीवन में उतारने का आहवान किया गया।

कालिज प्राचार्य डा. तेजवीर सिंह ने शिविर में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में से विजेता बच्चों को पुरूस्कृत किया। मंगलवार को सिंभावली के किसान पीजी कालिज में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनो इकाई के चल रहे सात दिवसीय शिविर का मंगलवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर वक्ताओ ने विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा करने ओर शिविर में सिखे स्वच्छता, अनुशासन,समाज सेवा को अपने जीवन में उतारने का आहवान किया गया।

कालिज के प्राचार्य डा. तेजवीर सिंह ने शिविर में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में से विजेता बच्चों को पुरूस्कृत किया। कार्यक्रम में दोनो इकाईयों के कार्यक्रम अधिकारी डा. गिरीश कुमार सिंह व डा. वेद प्रकाश, अतिथि नेत्रपाल सिंह, डा. संजीव कुमार, अजयपाल सिंह, नासिर, अदीबा, अनुज, सायरा आदि मौजूद रहे।

डग्गामार वाहन स्वामी की दबंगई, युवक ने की पुलिस से कार्रवाई की मांग

» मदरलैंड संवाददाता

आगरा। जनपद के थाना वाह क्षेत्र के अंतर्गत कस्बा वाह से आगरा के लिए दर्जनों डग्गामार वाहन दौड़ रहे हैं। डग्गामार बस की चपेट में आने से युवक वाल-वाल बच गया। शिकायत करने पर वाहन स्वामी ने युवक को धमकाते हुए जान से मारने की धमकी दी,जिस पीड़ित ने डग्गामार वाहन स्वामी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। जानकारी के अनुसार कस्बा वाह से आगरा के लिए दर्जनों डग्गामार वाहन दौड़ रहे हैं। जिससे रोडवेज विभाग को लाखों रुपए के राजस्व का घाटा हो रहा है। वही दौड़ते डग्गामार वाहनों के चलते कई जगह दुर्घटना हो गई जिनमें लोगों की जान भी चली गई। तो वहीं कई लोगों की जान जाते-जाते बची है। ऐसा ही मामला कस्बा वाह के निवासी सोनू वर्मा पुत्र गुरुदयाल सोमवार को कस्बा के मुख्य मार्ग पर जन सेवा केंद्र पर रुपए निकालने जा रहा था तभी आगरा की तरफ से तेज रफ्तार लापरवाही से आ रही डग्गामार बस की चपेट में आने से वाल-वाल बच गया। जब पीड़ित युवक द्वारा डग्गामार बस स्वामी की जानकारी कर फोन से बात की जिस पर युवक सोनू ने डग्गामार वाहन स्वामी को मामले से अवगत कराया और शिकायत की जिस पर बस संचालक अपना आपा खो कर अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए युवक को जान से मारने की धमकी देने लगा।

महिला आयोग की सदस्या ने सुनी महिलाओं की समस्याए

» मदरलैंड संवाददाता

मुजफ्फरनगर। डा प्रियंवदा तोमर, सदस्या, उ प्र राज्य महिला आयोग, लखनऊ द्वारा निरीक्षण भवन, मुजफ्फरनगर में आवगमन किया गया है। निरीक्षण भवन के पश्चात माननीय सदस्या द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एव पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलाने हेतु जनसुनवाई समीक्षा बैठक कर जनपद की महिलाओं व बालिकाओं के अधिकारों की जानकारी देते हुए उनकी समस्याओं को सुना गया, जनसुनवाई के दौरान 12 प्रकरण प्राप्त हुए जो घरेलू हिंसा, महिला उत्पीडन इत्यादि से संबंधित पाये गये। प्राप्त प्रकरणों में सदस्या द्वारा सभी प्रकरणों में संबंधित अधिकारियों को आवेदन पत्रों पर त्वरित निस्तारण के निर्देश दिये गये तथा प्रकरण में फालोअप लेते हुए निस्तारण आख्या से उन्हें अवगत कराने के निर्देश पुलिस अधिकारियों को दिये गये। जनसुनवाई समाप्त करने के उपरांत सदस्या महोदया द्वारा जिला कारागार, मुजफ्फरनगर का निरीक्षण किया गया है। निरीक्षण के दौरान अरूण कुमार सक्सेना मौके पर उपस्थित पाये गये। समीक्षा बैठक जनसुनवाई कार्यक्रम में कुलदीप कुमार क्षेत्राधिकारी नगर, बीना शर्मा एसोसिएट वूमन पावर लाइन, निधी चौधरी प्रभारी महिला थाना, प्रतिनिधि जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी, नीरू रानी सेन्टर मैनेजर, शिवांगी महिला कल्याण अधिकारी, महिला शक्ति केन्द्र,नीना त्यागी, संरक्षण अधिकारी, संजय कुमार यादव, कनिष्ठ सहायक, सचिन कुमार, आंकडा विश्लेषक, मौ0 आरिफ, सहा0सह आंकडा प्रविष्टि प्रचालक, संजय कुमार व अजय कुमार आउटरीच कार्यकर्ता, जिला बाल संरक्षण इकाई आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

श्री राम कॉलेज में वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता लोगों के आकर्षण का केंद्र

» सरताज अहमद

मुजफ्फरनगर। श्रीराम ग्रुप ऑफ कालेज के खेल प्रांगण में चल रहे वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता खेल सप्ताह-2021 के दूसरे दिन की शुरूआत खो-खो महिला वर्ग व वालीवॉल पुरूष वर्ग खेलों के साथ हुई। खो-खो महिला वर्ग प्रतियोगिता में कुल चार मुकाबले हुए।

तीसरा मुकाबला विधि संकाय और कम्पयूटर एप्लिकेशन संकाय के बीच खेला गया, जिसमें कम्पयूटर एप्लिकेशन विभाग की छात्राओं ने अपनी जीत का परचम लहराया। प्रतियोगिता का चतुर्थ मुकाबला शारीरिक शिक्षा विभाग और बीबीए विभाग की छात्राओं के बीच खेला गया, जिसमें शारीरिक शिक्षा विभाग की टीम ने जीत दर्ज की।खो-खो महिला वर्ग प्रतियोगिता का फाईनल मुकाबला शारीरिक शिक्षा विभाग व बेसिक साईंस विभाग की टीमों के बीच खेला गया जिसमें शारीरिक शिक्षा विभाग की टीम की खिलाडियों प्रियंका, ऋतु, शिवांगी, रितिका, निधि, नेहा, फेजान, टीमसी, नीशू, रोचक ने अपने उम्दा प्रदर्शन को जारी रखते हुए जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। वालीवॉल प्रतियोगिता में कुल 6 मुकाबले खेले गये वालीवॉल का पहला मुकाबला बीपीईएस और पालिटेक्निक विभाग की टीमों के बीच खेला गया, जिसमें बीपीईएस की टीम ने जीत हासिल की।

दूसरा मुकाबला फामेर्सी और कम्प्यूटर एप्लिकेशन विभाग के बीच खेला गया, इसमें फार्मेसी विभाग की टीम ने जीत दर्ज की।

वहीं इस प्रतियोगिता का तीसरा मुकाबला फार्मेसी और बीटेक विभाग की टीमों के बीच खेला गया, इसमें बीटेक की टीम ने अपनी जीत का परचम लहराया। चैथा मुकाबला बीबीए और बीएससी एग्रीकल्चर के बीच खेला गया, इसमें बीबीए विभाग के छात्रों ने जीत दर्ज की।

पांचवा मुकाबला बीएससी एग्रीकल्चर और कार्मस विभाग के बीच खेला गया, इस मुकाबले को कामर्स विभाग की टीम ने जीता।छठा एवं अंतिम मुकाबला पत्रकारिता एंव जनसंचार विभाग और शारीरिक शिक्षा विभाग की टीम के बीच खेला गया, इसमें पत्रकारिता एंव जनसंचार विभाग की टीम ने जीत हासिल की।

सेन्ट मेरीज स्कूल में हर्षोल्लास से मनाया गया बसंत पंचमी पर्व

» अजय सक्सेना

मैनपुरी। नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय ह्यसेन्ट मेरीज स्कूलह्ल आश्रम रोड, मैनपुरी में बसंतोत्सव पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में विद्यालय की प्रधानाचार्या मनोरमा ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया। साथ ही विद्यालय की उप-प्रधानाचार्या वीना चौहान एवं अन्य वरिठ शिक्षक-शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों ने माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। विद्यालय की छात्राओं ने समवेत स्वर में माँ सरस्वती की वंदना ह्यहे वीणा वादिनी वर देह्ल का गान किया। विद्यालय की कक्षा-7 की छात्रा पलक यादव ने विद्यालय की हिंदी शिक्षिका भागरानी द्वारा लिखित मौलिक कविता ह्यह्रदय तल से करो स्वागत, मोहक बसंत आया है का सस्वर कविता पाठ किया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी छात्र-छात्राएँ एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने पीले रंग के पुपों एवं वस्त्रों से सुसज्जित होकर कार्यक्रम में आए। बसंत ऋतु के अनुकूल सभी विद्यार्थियों में पर्व के मनाने को लेकर अपार उत्साह दिखाई दे रहा था। कार्यक्रम में मंच संचालन विद्यालय की शिक्षिका सपना चौहान ने किया। इस अवसर पर कोविड गाइडलाइन्स को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम को दो पालियों में मनाया गया जिसमें सभी ने सामाजिक दूरी के अनुपालन तथा मास्क लगाने एवं माहमारी से सुरक्षित बचाव हेतु आवयक मार्गनिदेर्को का अनुपालन किया।

महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह का आयोजन

» मदरलैंड संवाददाता

मैनपुरी। महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह का आयोजन पूरी भव्यता के साथ किया गया, जनपद के महत्वपूर्ण शहीद स्थलों, स्मारकों पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गए, चित्तौरा, बहराइच से प्रधानमंत्री जी ने महाराजा सुहेलदेव जी के स्मारक का शिलान्यास का सजीव प्रसारण वेबलिंक के माध्यम से दिखाया गया। कार्यक्रम के माध्यम से महाराजा सुहेलदेव के शौर्य एवं बलिदान पर आधारित ह्यह्यगौरवगीतह्लह्ल के गायन एवं चलचित्र के साथ प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री का वर्चुअल उद्बोधन का सीधा प्रसारण दिखाया गया। भारतवर्ष के इतिहास में मध्यकाल 11वीं शती में उ. प्र. के बहराइच में महाराज सुहेलदेव प्रतापी राजा हुये, जिन्होंने विदेशी आक्रान्ताओं से भारतीय संस्कृति एवं विरासत की रक्षा की, महाराजा सुहेलदेव जी का शौर्य एवं पराक्रम वर्तमान पीढ़ी के लिए एक गौरवशाली उदाहरण है। सजीव प्रसारण में मुख्यमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज ज्ञान की देवी मा0 सरस्वती का पावन दिवस है, साथ ही आज विदेशी आक्रान्ताओं इस धरती को पूरी तरह सुरक्षित करने के लिए अपना शौर्य एवं पराक्रम का प्रदर्शन इस धरती पर करने वाले धर्मरक्षक, राष्ट्रनायक महाराजा सुहेलदेव की पावन जयंती का कार्यक्रम भी है। साथ ही आज प्रधानमंत्री के द्वारा महाराजा सुहेलदेव के भव्य स्मारक का शिलान्यास एवं इस क्षेत्र में महाराजा सुहेलदेव जी के नाम पर मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन भी किया गया है। पुलिस लाईन में स्थित शहीद स्मारक पर पुलिस बैंण्ड द्वारा राष्ट्रधुन, राष्ट्रभक्ति पर बैण्डवादन किया, जनपद के शहीद स्मारकों पर दीप प्रज्वलित किये गये ।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, अपर जिलाधिकारी बी.राम, अपर पुलिस अधीक्षक मधुबन कुमार सिंह, जिला विद्यालय निरीक्षक मनोज कुमार वर्मा, जिला कार्यक्रम अधिकारी अरविंद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी सनिल द्विवेदी, प्रशासनिक अधिकारी हरेंद्र कुमार, बाल संरक्षण अधिकारी अलका मिश्रा, रोहित दुबे, वीरेश पाठक, अनुज कुमार, वेद प्रकाश श्रीवास्तव, कंचन वर्मा आदि उपस्थित रहे ।

संक्षिप्त समाचार

बारात की बस से टक्कर लगने पर वृद्ध महिला की मौत

मदरलैंड संवाददाता, किठौर ।थाना क्षेत्र के गोविंदपुरी गांव में चारा लेने गई महिला को बारात की गाड़ी ने टक्कर मार दी जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इस घटना से गांव में शोक का माहौल है। बस को थाना पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गोविंदपुरी में राजो पत्नी भाग सिंह उम्र 65 वर्ष नाम की महिला घर से चारा लेने के लिए गई थी गांव में बारात आई थी। उस बारात की गाड़ी ने महिला को टक्कर मार दी जिससे उसकी दर्दनाक मौत मौके पर ही हो गई। बारात की गाड़ी ने भागने की कोशिश की मगर उसको थाना पुलिस ने पकड़ लिया है घटना से गांव में शोक की लहर है पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए मेरठ मोर्चरी भेज दिया है।

बाबा की भक्ति में डूबे श्रद्धालु

मदरलैंड संवाददाता, अलीगढ़। शहर के मोहल्ला पक्की सराय शिव साईं मंदिर से निकाली गई साईं पालकी जिसमे सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बाबा के जयकारे लगाते हुए खूब जमकर आनंद उठाया मंदिर के प्रबंधक राजेश गुप्ता ने बताया कि हर साल की भांति इस वर्ष भी बसंत पंचमी के पावन पर्व पर पक्की सराय स्थित शिव साईं मंदिर से साईं बाबा की पालकी का आयोजन किया गया साथ ही सैकड़ों संख्या में श्रद्धालुओं ने खूब जमकर जय कारे और भजन गाकर बाबा का गुणगान किया कार्यक्रम के मुख्य संयोजक विक्रांत विक्की वेद प्रकाश ने बताया की साईं बाबा की पालकी फूल माला एवं बैलून से सजावट की गई साथ ही ढोल नगाड़े एवं बैंड से बाबा की पालकी का भ्रमण किया गया साथ ही साईं बाबा की पालकी का पूजन मंदिर के प्रबंधक राजेश गुप्ता सपना गुप्ता ने किया साथ ही बाबा का भोग लगाकर प्रसाद वितरण किया गया जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बाबा भक्ति में नाच कर गुणगान करते हुए जयकारे लगाते हुए सिर झुका कर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया साथ ही बाबा का भोग ग्रहण किया इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे मंदिर के प्रबंधक राजेश गुप्ता सपना गुप्ता कार्यक्रम के मुख्य संयोजक वेद प्रकाश विक्रांत मुख्य कार्यकर्ता सेवक सुमित छोटू शिवम वर्धन तरुण वर्धन सनी मनी नवरत्न गुप्ता अन्ना वर्मा आदि लोग उपस्थित रहे ।

नो ट्रॉयल नो कागज दलाल बनवा देगें आरटीओ में ड्राइविगं लाइसेंस

मदरलैंड संवाददाता, अलीगढ़। अप्रशिक्षित चालक आये दिन हो रही सड़क दुर्घटनाओं का मुख्य कारण यह भी हैं कि यहाँ वास्तव में ही बिना किसी परीक्षा पास किये ही ज्यादातर शहरों,कस्बों और गावों में लोगों को लाइसेंस दे दिया जाता, सच तो यहाँ तक हैं की कभी-कभी जो आर.टी.ओ. के दलाल हैं वह लोगों को कह देते हैं की आपको वहाँ जाना भी नहीं पड़ेगा और हम सब कुछ करवा देंगे। आपको लाइसेंस आपके घर पर दे जाएंगे। ज्यादातर यह महिलाओं के साथ हो रहा हैं वैसे पुरुष भी इस मामले में बहुत ज्यादा पीछे नहीं हैं, लेकिन भारत सरकार के ट्रांसपोर्ट मंत्रालय ने लाइसेंस देने की प्रक्रिया को काफी मजबूती दी हुई हैं, विभाग के अनुसार जब तक आप स्वयं जा कर अपना पेपर नहीं देंगे और आपको ट्रायल भी देना पड़ेगा तब तक आपको ड्राइविंग लाइसेंस नहीं दिया जाएगा, लेकिन यह सब केवल मंत्रालय के कागजों और कार्यालयों के अंदर ही होता हैं, वास्तव में आर.टी.ओ.के ऑफिस में जहाँ पर यह पूरी प्रक्रिया होती हैं। वहां पर यह सब काम केवल आर.टी.ओ.के सिपाही दलाल ही करते हैं वही आपकी परीक्षा देते हैं, वही बाकी की प्रक्रिया करते हैं। आप अगर गए हैं तो बुत बनके बैठे रहिये बस, तो यहाँ भी जिम्मेदारी सरकार की ही निकल के आती हैं।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने 44 नमूनें लेकर जांच के लिए भेज

मदरलैंड संवाददाता, रामपुर। प्रदेश सरकार के आदेश पर जिलेभर में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में खाद्य दुकानों पर छापामार कार्रवाई करते हुए 44 नमूनें लेकर जांच के लिए भेजे हैं। अचानक पूरे जिले में खाद्य विभाग द्वारा छापामार कार्रवाई से दुकानदारों में हड़कंप मच गया। कुछ दुकानदार टीम को देखकर अपनी दुकानें बंद करके भाग खड़े हुए। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के अभिहित अधिकारी राजेश कुमार अग्रहरि ने बताया कि सरकार के आदेश पर रामपुर जिले में खाद्य दुकानों पर छापामार कार्रवाई की गई। जिसमें दूध, खोया, सरसों तेल, ब्लेण्डेड इडिबल वेजीटेबिल आयल, शुद्ध घी, गेहूं के आटे का सर्विलांस नमूनें संग्रहित कर जांच के लिए भेजे गये हैं। उक्त कार्यवाही में केन्द्र सरकार की खाद्य पदार्थो की रेग्युलेटरी संस्था एफएसएसएआई के निर्देश पर पूरे प्रदेश के सभी जिलों में एक साथ कार्रवाई की गई। राजेश अग्रहरि ने बताया कि जिलेभर में की गई छापामार कार्रवाई में 44 खादय पदार्थो के नमूने लिये गये हैं जो जांच के लिए लैब भेज दिये गये हैं।

आखिर किसके शह पर सीएससी कुरावली में चल रहा गोरखधंधा

» मदरलैंड संवाददाता

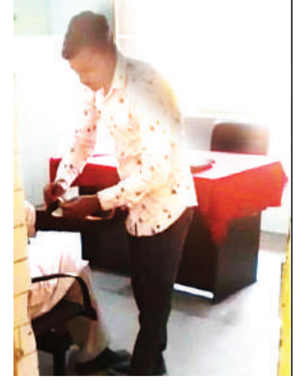

मैनपुरी। सूबे के मुखिया द्वारा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए भरपूर प्रयास किए जा रहे है। लेकिन उनके अधीनस्थों द्वारा लगातार पलीता लगाया जा रहा है। जहां पर उपस्थिति चिकित्सकों द्वारा अस्पताल परिसर में आने वाले मरीजों की जांच कराए जाने के लिए बाहर से प्राईवेट पैथोलॉजी संचालकों को बुलाकर उनकी जांच कराई जाती है। जबकि अस्पताल परिसर में मरीजों की होने वाली जांच की पूरी व्यवस्था है। फिर भी कुछ कमीशन खोर चिकित्सकों द्वारा बाहर जांच कराए जाने के लिए भेजा जाता है। जनपद मैनपुरी के कस्बा कुरावली स्थिति सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से एक वीडियो वायरल हो रहा है। जिसमें बाहर की प्राईवेट पैथोलॉजी संचालक के यहां काम करने वाला लड़का एक मरीज का जांच के लिए खून निकलते दिखाई दे रहा है। जबकि अस्पताल परिसर में बाहर से आने वाले मरीजों की जांच के लिए सारी व्यवस्थाएं होते हुए भी कुछ कमीशन खोर चिकित्सकों द्वारा खुद की जेब भरने के चक्कर में बाहर जांच कराई जाती है। जहां से उन चिकित्सकों के पास मोटी रकम आती है। यह मामला कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी कई बार ऐसे मामले प्रकाश में। आ चुके है। लेकिन यह कमीशन खोर चिकित्सक अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहे है। दिन रात गरीबों की जेबों पर डाका डालने में लगे हुए है। विशेष सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कुछ दवाओं के विक्रेता चिकित्सकों के बगल में कुर्सी डालकर अपनी दवाओं की बिक्री के लिए लिखवाते। जिससे उपस्थिति चिकित्सकों को कमीशन के तौर पर मोटी रकम प्राप्त होती है।

खनन माफिया को पैदा करने में प्रशासन की अहम भूमिका

» अफाक खान

रामपुर। प्रदेश की योगी सरकार एक तरफ जहां गुंडों व बदमाशों के खिलाफ अभियान चलाकर उन्हे जेल की सलाखों के पीछे धकेलने और उनकी सम्पत्ति कुर्क करने में लगी हुई हैं वही रामपुर में इसका उलट ही नजारा देखने को मिल रहा हैं। रामपुर पुलिस ने एक मामूली इंसान को अपनी गोद में बैठा कर खनन माफिया बना दिया। बताया जाता हैं कि ग्राम अटरिया का रहने वाला इकबाल पुलिस थानों में मामूली काम कराता था। पुलिस की मेहरबानी के चलते आज वह रामपुर का टॉप मोस्ट खनन माफिया बन चुका हैं। कोतवाली क्षेत्र की अटरिया चैकी व थाना गंज क्षेत्र की मंडी समिति चैकी इंचार्ज की पूरी कृपा द्दष्टि के चलते रात दिन इकबाल के डम्पर अवैध रूप से रात दिन खुलेआम खनन कर रहे हैं। इकबाल के डम्पर ने पत्रकार के अध्यापक चाचा को भी अपने वाहन से रौंद दिया था जिसको अपनी टांग गंवानी पड़ी जिनकी हालत आज तक ठीक नहीं हो पाई हैं। खनन माफिया के खिलाफ कई बार प्रमुखता से समाचार प्रकाशित करने पर विधान केसरी के रिपोर्टर को भी मंडी समिति के पास रोक कर इकबाल के गुंडों ने जान से मारने की धमकी दी थी जिसपर थाना गंज में तहरीर दी गई हैं लेकिन आज तक उसपर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई हैं। इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता हैं खनन माफिया इकबाल को पुलिस किस तरह अपनी गोद में बैठा कर दिन रात अवैध रूप से खनन करवा रहीं हैं। वैसे तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस प्रशासन को साफ आदेश दे रखे हैं कि पत्रकारों को धमकी देने वालों के खिलाफ तुरन्त कार्रवाई कर उन्हे जेल भेजा जाये लेकिन रामपुर का पुलिस प्रशासन पीएम व सीएम के आदेशों को नहीं मानता। कोतवाली क्षेत्र के अटरिया चैकी इंचार्ज व थाना गंज क्षेत्र के मंडी समिति चैकी इंचार्ज का कहना हैं कि इकबाल पर पुलिस विभाग के एक आला अफसर का हाथ हैं इसलिए वह उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रहें हैं। थाना गंज प्रभारी रामवीर सिंह ने बताया कि पत्रकार द्वारा दी गई तहरीर की जांच की जा रहीं हैं जांच के बाद कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

यातायात प्रभारी ने छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। राजकीय महिला डिग्री कालेज में एनएसएस के सात दिवसीय विशेष शिविर के दूसरे दिन यातायात प्रभारी संतराम कश्यप एवं पीटीओ अनीता वर्मा ने स्वयं सेविकाओं को सड़क सुरक्षा संबंधित नियमों की जानकारी दी। इस मौके पर यातायात प्रभारी संतराम कश्यप ने छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि जेब्रा क्रासिंग, तीर के निशान, जगह-जगह सफेद लकीरों का क्या मतलब होता हैं। हेलमेट पहनना और सील्ट लगाना क्यों जरूरी हैं। स्वयं सेविकाओं ने भी सड़क सुरक्षा माह से प्रेरित होकर नियमों की जानकारी देने के लिए रैली निकाल कर गांव के लोगों को जागरूक किया। सड़क सुरक्षा नियमों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी और उन्हे जीवन रक्षा का महत्व बताते हुए उनसे सड़क सुरक्षा नियमों को मानने की अपील की ताकि वह खुद भी सुरक्षित रहे एवं सड़क पर चलने वाले लोग भी सुरक्षित रहें और अपना सफर पूरा कर सकें।

सायमा, समरा, शालू, संगीता चक्रवर्ती, अनम मलिक, खदीजा, शाजिया, बुशरा शौकत, सोनाली, तैयबा, ज्योति ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम अधिकारी रजिया परवीन, शत्रुजीत ने छात्राओं में अनुशासन बनाये रखने पर जोर दिया तथा समाज सेवा से जुडे रहने का आहवान किया। इस मौके पर डा. अंकिता, डा. कादरी आदि मौजूद थे।

महाराजा सुहेलदेव जी की जयंती पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

» शकील सैफी

मेरठ। ग्यारहवी शताब्दी के प्रतापी शासक एवं पराक्रमी योद्धा महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह के अवसर पर जनपद के राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय शहीद स्मारक में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने महाराजा सुहेलदेव स्मारक एवं चित्तौरा झील का शिलान्यास एवं महाराजा सुहेलदेव स्वशासी चिकित्सा महाविद्यालय का लोकार्पण बटन दबाकर किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि गांव, गरीब, किसान व हर नागरिक का जीवन बेहतर हो व वह समर्थ बनें तथा हमारा संकल्प देश को आत्मनिर्भर बनाने का है। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के उद्बोधन का सजीव प्रसारण किया गया। वहीं मेरठ के शहीद स्मारक में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, विधायक सत्य प्रकाश अग्रवाल, आयुक्त अनीता सी मेश्राम, जिलाधिकारी के बालाजी ने शहीद स्तम्भ व शहीद भगत सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उनको नमन किया तथा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन किया। इस अवसर पर गुरू नानक गर्ल्स इंटर कालेज कंकरखेडा की छात्राओ द्वारा सरस्वती वंदना व देशभक्ति के गीत पर मनमोहक प्रस्तुति दी गयी। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सैनानियो, स्वतंत्रता संग्राम सैनानियो की वीर नारियां व उनके परिजनो को सांसद, विधायक व अधिकारियों ने सम्मानित भी किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि अपने पराक्रम से मातृभूमि का मान बढ़ाने वाले राष्ट्रनायक महाराजा सुहेलदेव जी की जन्मभूमि और ऋषि मुनियो ने जहां तप किया बहराइच की ऐसी पावन धरा को में आदरपूर्वक नमन करता हूँ। उन्होने बसंत पंचमी के पावन अवसर पर प्रदेश व देशवासियो को बधाई दी। उन्होने कहा कि महाराजा सुहेलदेव जी का जन्मोत्सव आधुनिक भारत में नयी उमंग व तरंग लेकर आया है।

उन्होने कहा कि यह जन्मोत्सव आने वाली पीढ़ी को प्रोत्साहित करेगा। उन्होने कहा कि मेडिकल कालेज से श्रावस्ती, सिद्धार्थनगर सहित समीपवर्ती जनपदो व नेपाल से आने वाले मरीजो को भी मदद करेगा। उन्होने कहा कि भारत के ऐसे अनेको सैनानी है जिनको वह मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि महाराजा सुहेलदेव जी की स्मृति में उनकी 40 फीट की कांस्य प्रतिमा स्थापित की जा रही है। उन्होने कहा कि स्मारक में महाराजा सुहेलदेव से जुडी ऐतिहासिक जानकारियां, स्मारक के आसपास की सडको का चैडीकरण किया जायेगा, बच्चो के लिए पार्क बनेगा, सभागार भवन बनेगा तथा शिल्पकारो को अपने उत्पाद की बिक्री के लिए यहां दुकानो का निर्माण भी कराया जायेगा।

पुलिस अधीक्षक शगुन गौतम द्वारा स्वार थाने का औचक निरीक्षण

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। पुलिस अधीक्षक शगुन गौतम ने अचानक आज स्वार थाने का औचक निरीक्षण किया। एसपी के औचक निरीक्षण से थाना स्वार पुलिस में हड़कंप मच गया। पुलिस अधीक्षक शगुन गौतम ने आज स्वार थाने का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसपी ने थाने में बने अपराध रजिस्टर, त्यौहार रजिस्टर, विवेचना रजिस्टर, डयूटी रजिस्टर, फ्लाई सीट आदि एवं उनके रख रखाव, उनमें अंकित की जाने वाली प्रविष्टीयों को चैक किया। साथ ही थाना परिसर में बने बैरक, भोजनालय, मालखाना, कम्प्यूटर रूम की साफ-सफाई एवं महिला हेल्प डेस्क को चैक किया। थाना परिसर में खड़े लावारिस वाहनों के निस्तारण के लिए सीओ स्वार व थाना प्रभारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। पुलिस अधीक्षक शगुन गौतम ने बताया कि जिलेभर में कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त रखने के लिए पुलिस बल हर संभव प्रयास कर रहीं हैं वहीं लगातार थानों का औचक निरीक्षण किया जा रहा हैं ताकि थानों की सफाई व्यवस्था व थानों का रख रखाव की स्थिति की हकीकत पता चल सकें।

मां सरस्वती की पूजा शहर में मची बसंत पंचमी की धूम

» अर्जुन वार्ष्णेय

अलीगढ़। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा अलीगढ़ वीरांगना इकाई की महानगर अध्यक्ष ममता सिंह राघव के आवास सासनी गेट पर बसंत पंचमी के अवसर पर विद्या की देवी सरस्वती माता की पूजा बच्चो के साथ की गई सभी ने विधिविधान से पूजा एवं माल्या अर्पण कर के प्रसाद वितरण किया गया और बच्चों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

प्रतिभा राघव ने सरस्वती पूजा का महत्व बच्चों को बताया और कहा कि हम सभी को सरस्वती पूजा जरूर करनी चाहिए क्योकि वह वाड़ी की दाती है और हमें कभी दूसरों से गलत न बोलने की शिक्षा देती है

सरस्वती पूजा में मीरा जादौन, कविता राघव, गरिमा राघव, उपासना सिंह, सुमन सिंह, सुगंधी, सोनल सिंह, कुमकुम राघव, खनक राघव, प्राजुल जादौन, मुक्ति राघव, रिद्धिमा, मीना सिंह, यशी सिंह शामिल हुए।

चंडौस थाना प्रभारी लाइनहाजिर

» मदरलैंड संवाददाता

अलीगढ़। एसएसपी मुनिराज ने सोमवार देररात चंडौस थाना प्रभारी अनिल कुमार को लाइनहाजिर कर दिया। उनके खिलाफ लापरवाही के मामलों में शिकायत मिल रही थी। फिलहाल थाने में कोई नई तैनाती नहीं की गई है। आरोप है कि महिला आईएएस अधिकारी व इसरो के वैज्ञानिक के घर हमला करने के आरोपी को भी थानाध्यक्ष पकड़ नहीं पाए थे। इसको लेकर 2 दिन पहले एसएसपी की ओर से थानाध्यक्ष को कड़ी फटकार भी लगाई गई थी ।साथ ही चेतावनी दी गई थी। लापरवाही रवे में सुधार न होने पर थानाध्यक्ष को कुर्सी हटाया गया है।

अचानक कार में आग लगने से हड़कंप, धू धू कर जली कार

» मदरलैंड संवाददाता

किठौर। मेरठ गढ़ रोड पर अचानक चलती कार में आग लग गई घटना से आसपास हड़कंप मच गया जब तक फायर ब्रिगेड की टीम पहुंचती तब तक पूरी तरह कार धू धू कर जल गई किसी तरह चालक ने कूदकर अपनी जान बचाई थाना पुलिस मौके पर पहुंच गए थी।

जानकारी के अनुसार मेरठ गढ़ रोड पर कस्बे के हापुर अड्डे के पास जब मेरठ की ओर से आ रही है कार मैं अचानक जबरदस्त आग लग गई इसी तरह कार से कूदकर ड्राइवर ने अपनी जान बचाई इस घटना को देखकर आसपास के लोगों में हड़कंप सा मच गया और सभी लोग कार की तरफ को भागे मगर आग ने तब तक काबू नहीं दिया जब तक कार पूरी तरह जल नहीं गई थाना पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम को भी सूचित किया गया मगर तब तक आग ने अपना पूरा काम कर चुकी थी और गाड़ी पूरी तरह जल गई कार के जलने के कारण का पता नहीं चल पाया है थाना पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है।

गाइडलाइन का नहीं हुआ उल्लंघन

अनिल विज के दिशा रवि को लेकर किए ट्वीट को हटाने से ट्विटर का इनकार

चंडीगढ़। किसान आंदोलन को लेकर देश में बयानों का तूफान उमड़ा हुआ है। हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने जलवायु परिवर्तन कार्यकर्ता दिशा रवि की गिरफ्तारी के संबंध में ट्वीट किया कि ह्रदेश में विरोध का बीज जहां कहीं भी हो, उसका समूल नाश कर देना चाहिएह्व। इस ट्वीट को लेकर मिली शिकायत के आधार पर जांच करने के पश्चात ट्विटर ने इसे हटाने से इनकार कर दिया। ट्विटर ने मंत्री को अधिसूचित किया कि उसे इस ट्वीट को लेकर एक शिकायत मिली थी, लेकिन जांच के बाद पाया गया कि इस ट्वीट ने किसी दिशा-निर्देश का उल्लंघन नहीं किया है।

कांग्रेस नेता शशि थरूर ने विज के ट्वीट की आलोचना करते हुए कहा, ह्वनिश्चित ही इस प्रकार के ट्वीट हमारे लोकतंत्र के लिए उस ह्वाट्सलकिटह्व से कहीं अधिक खतरनाक हैं, जिसे दिशा रवि ने रीट्वीट किया था।ह्व भाजपा नेता विज ने ट्वीट किया, देश विरोध का बीज जिस किसी के भी दिमाग में हो, उस बीज को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिये, फिर चाहे वह दिशा रवि हो या कोई और। विज ने यह टिप्पणी पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि की गिरफ्तारी के दो दिन बाद की है। दिशा रवि को सोशल मीडिया पर किसानों के प्रदर्शन से संबंधित टूलकिट कथित रूप से साझा करने को लेकर गिरफ्तार किया गया है।

दिल्ली पुलिस ने दावा किया है कि 21 वर्षीय कार्यकर्ता टूलकिट गूगल डॉक की संपादक हैं और दस्तावेज बनाने और उसका प्रसार करने वाली मुख्य साजिशकर्ता हैं। दिशा रवि को साइबर प्रकोष्ठ ने शनिवार को बेंगलुरु से गिरफ्तार किया था। पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन का समर्थन करने के लिए एक टूल किट साझा की थी। इस टूल किट में विभिन्न कदमों के बारे में जानकारी दी गई थी जिनमें ट्विटर पर विरोध करना, भारतीय दूतावासों के बाहर प्रदर्शन करना शामिल था।

पंजाब में निकाय चुनाव के परिणाम कल

किसान आंदोलन से बढ़ी आप-कांग्रेस की उम्मीद

चंडीगढ़। पंजाब निकाय चुनाव में मतदान प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 17 जनवरी बुधवार को मतगणना के बाद नतीजे घोषित हो जाएंगे। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस आमने-सामने है। वहीं, मुख्य विपक्षी दल की भूमिका निभा रही आम आदमी पार्टी (आप) भी सियासी मैदान में है।

चुनाव में कुल 9 हजार 222 उम्मीदवार शामिल हुए थे। राज्य में 14 फरवरी को 117 स्थानीय निकायों पर चुनाव हुए थे।

जिसमें से 109 नगरपालिका परिषद और नगर पंचायत हैं। वहीं, 8 नगर निगम शामिल हैं।

चुनावी रण की 8 नगर निगमों में अबोहर, बठिंडा, बाटला, कपूरथला, मोहाली, होशियारपुर, पठानकोट और मोगा का नाम शामिल है। खास बात है कि ग्राम पंचायत के चुनावों में पार्टी चिह्न शामिल नहीं होते हैं। यहां राजनीतिक दल या स्थानीय नेता पैनल तय करते हैं। राज्य चुनाव आयोग ने प्रक्रिया को पूरा कराने के लिए 145 रिटर्निंग अधिकारी और 145 असिस्टेंट रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किए हैं।

सरकार के आदेश के अनुसार शहरी स्थानीय निकाय चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। निकाय चुनाव के लिए कुल 39 लाख 15 हजार 280 रजिस्टर्ड मतदाता हैं। जिनमें से 20 लाख 49 हजार 777 पुरुष और 18 लाख 65 हजार 354 महिलाएं हैं। म्युनिसिपल चुनाव के लिए 149 मतदाता भी शामिल हैं।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कृषि कानूनों और किसान आंदोलन के चलते आप और कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन का अनुमान लगाया है।

सामाजिक सुरक्षा विभाग द्वारा विभिन्न स्कीमों के साथ आधार नंबर जोड़ने का फैसला

» **विनोद कुमार**

चंडीगढ़। योग्य लाभार्थियों को पारदर्शी ढंग से अपने हक लेने के योग्य बनाने के लिए पंजाब के सामाजिक सुरक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग ने दिव्यांग व्यक्तियों (नेत्रहीन, अपंग, बोलने और सुनने में असमर्थ और मानसिक तौर पर कमजोर व्यक्तियों) के लिए वित्तीय सहायता योजना के लाभार्थियों के लिए पहचान दस्तावेज के तौर पर आधार नंबर जोड़ने की प्रक्रिया शुरू की है।

इस सम्बन्धी जानकारी देते हुये पंजाब के सामाजिक सुरक्षा और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अरुणा चैधरी ने यहां शनिवार को बताया कि विभाग ने विभिन्न स्कीमों के साथ आधार नंबर जोड़ने की प्रक्रिया शुरू की है जिससे लाभार्थियों को निर्विघ्न ढंग से अपने हक मिल सकें। उन्होंने कहा कि योजना के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने के लिए योग्य व्यक्ति को अपने आधार नंबर का सबूत देना होगा या आधार प्रमाणीकरण करवाना होगा। उन्होंने आगे कहा कि इस स्कीम के अधीन लाभ लेने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति, जिसके पास आधार कार्ड नहीं है या अभी तक आधार कार्ड के लिए अप्लाई नहीं किया, को आधार कार्ड बनवाने के लिए आवेदन करना होगा और ऐसे व्यक्ति अपना आधार कार्ड बनवाने के लिए, आधार कार्ड बनाने वाले किसी भी केंद्र तक पहुँच कर सकता है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि विभाग ऐसे लाभार्थियों के लिए, आधार कार्ड बनवाने की सहूलतें प्रदान करेगा जिन्होंने अभी तक आधार कार्ड के लिए अप्लाई नहीं किया और यदि सम्बन्धित ब्लॉक या तहसील में कोई आधार कार्ड बनाने वाला केंद्र नहीं है तो विभाग अनुकूल स्थानों पर आधार नामांकन सहूलतों का प्रबंध करेगा। उन्होंने बताया कि जब तक व्यक्ति का आधार कार्ड नहीं बन जाता तब तक ऐसा व्यक्ति अपनी आधार नामांकन पहचान स्लिप, वोटर पहचान पत्र, वोटर सूची, जन्म सर्टिफिकेट, मैट्रिक सर्टिफिकेट, अपंगता सर्टिफिकेट दिखा कर स्कीम के अधीन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विभाग के विशेष तौर पर नामजद अधिकारियों के द्वारा इन दस्तावेजों की जांच की जा सकती है।

उन्होंने आगे कहा कि ऐसे मामलें जहाँ खराब बायोमैट्रिक्स या किसी अन्य कारण से आधार प्रमाणिकता फेल हो जाती है तो प्रमाणिकता के लिए आइरिस स्कैन या फेस प्रमाणिकता विधि अपनाई जाये और विभाग फिंगर-प्रिंट प्रमाणिकता के साथ आइरिस स्कैनर या फेस प्रमाणिकता विधि के लिए प्रबंध करेगा। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि अगर फिंगरप्रिंट या आइरिस स्कैन या फेस प्रमाणिकता के जरिये बायोमैट्रिक तस्दीक फेल हो जाती है तो जहां भी संभव और स्वीकार्य हो, सीमित समय की वैधता के साथ आधार वन टाइम के पासवर्ड या टाइम-आधारित वन-टाईम के पासवर्ड के द्वारा तस्दीक की पेशकश की जायेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलें जहां बायो-मैट्रिक या आधार वन टाईम के पासवर्ड या टाईम आधारित वन-टाईम के पासवर्ड प्रमाणीकरण संभव नहीं है तो योजना के अधीन लाभ फिजिकल आधार कार्ड के आधार पर दिए जा सकते हैं।

संक्षिप्त समाचार

शिवसेना ने किसानों के समर्थन में सरकार के विरूध किया रोष प्रदर्शन

मदरलैंड संवाददाता, चंडीगढ़। किसान प्रदर्शन के समर्थन में मंगलवार को मलोया में शिवसेना चंडीगढ़ प्रदेश अध्यक्ष परमजीत राजपूत के दिशा निर्देशों पर भाजपा सरकार के किसान विरोधी बिलों को लेकर विरोध में प्रदर्शन किया गया। शिव सेना ने भाजपा सरकार पर किसानों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार कुछ लोगों को मुनाफा पहुंचाने के चक्कर में किसानों की बली देने पर तुली हुई है। जारी एक बयान में शिवसेना ने कहा है कि लगभग तीन महिनों से किसान सड़कों पर किसान बिल को रद्द करने की मांग कर रहे है लेकिन सरकार उनकी मांगों को अनसुना कर रही है। उन्होंने कहा कि किसान बिल किसी भी मायने में उनके हितों के विरुध है। यह जानते है कि अगर यह कानून लागू हुआ तो किसान ने केवल अपनी जमीनों से हाथ धोना पड़ेगा बल्कि गुलामी की नई दास्ता की शुरूआत होगी। यह विरोध प्रदर्शन मलोया वार्ड के प्रधान राजीव अग्निहोत्री के अध्यक्षता में किया गया। अग्निहोत्री ने इस मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान बिल ऐसे होने चाहिए जो किसानों के हितों में लंबे समय तक लाभ मिले ना की उन्हें अपनी जमीन से ही दूर कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि अन्नदाओं के लिए ऐसे कानूनों को लाने से पहले बिलों को जनता के बीच लाना चाहिए ताकि कानून बनाने में किसानों की बातों को प्रमुख्ता से शामिल किया जा सकें। विरोध प्रदर्शन के दौरान शिवसेना चंडीगढ़ कार्यकारिणी सदस्य जतिंदर चौहान, गोपी पाल, हिमांशु, सोनू, सुषमा, रानी सहित भारी संख्या में शिवसेना कार्यकताओं ने भाग लेते हुए किसानों के समर्थन में नारे बाजी की।

गमाडा द्वारा ईको सिटी-2 में 289 रिहायशी प्लॉट्स का ड्रा 22 फरवरी को

मदरलैंड संवाददाता, चंडीगढ़। ग्रेटर मोहाली एरिया डिवैल्पमैंट अथॉरिटी (गमाडा) द्वारा ईको सिटी-2, न्यू चंडीगढ़ में 289 रिहायशी प्लॉटों का ड्रा 22 फरवरी, 2021 को निकाला जाएगा।

इस सम्बन्धी जानकारी देते हुए गमाडा के एक प्रवक्ता ने बताया कि इन प्लॉट्स के लिए योग्य पाए गए आवेदनकर्ताओं की सूची गमाडा की वैबसाईट पर डाल दी गई है और ड्रा 22 फरवरी को प्रातःकाल 11 बजे कम्युनिटी सैंटर, पूर्व प्रीमियम अपार्टमैंट, सैक्टर-88, एस.ए.एस. नगर में निकाला जाएगा। उन्होंने बताया कि ड्रा के नतीजे 23 फरवरी, 2021 को गमाडा की वैबसाईट पर डाल दिए जाएंगे। बताने योग्य है कि गमाडा द्वारा ईको सिटी-2 में 200, 300, 400, 450, 500, 1000 और 2000 वर्ग गज के रिहायशी प्लॉट्स का ड्रा निकाला जाना है।

हरियाणा में सुबह छा रही धुंध, दोपहर को बढ़ रहा तापमान

चंडीगढ़। हरियाणा में पिछले पांच दिनों से मौसम लगातार बदल रहा है। एक तरफ रात और सुबह के समय जहां धुंध छा रही है तो वहीं दिन के समय तापमान बढ़ रहा है। सुबह 4 बजे ही धुंध छाने के कारण सड़कों पर वाहन रेंगते हुए निकले। सुबह करीब 11 बजे मौसम साफ हो गया और तापमान भी बढ़ने लग गया। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है। सुबह के समय धुंध आ रही है। ऐसे में फसलों को फायदा भी हो रहा है। लेकिन दोपहर बाद गर्मी भी बढ़ रही है। ऐसे में किसान अपनी फसलों का निरीक्षण करते रहे। गेहूं की फसल में सिंचाई जरूरी है। किसान कम से कम 15 दिनों के अंतराल में एक बार सिंचाई करे। वहीं सरसों की फसल में पानी की जरूरत नहीं है। जिस तरह तापमान कभी बढ़ रहा है तो कभी घट रहा है यह फसलों के लिए सही नहीं है। ऐसे में गेहूं की फसल में चेपा बीमारी का प्रकोप भी हो सकता है। पिछले साल की तुलना में गेहूं के पौधों में बढ़ोतरी नहीं हुई है। जिससे किसान परेशान है।

टूलकिट मामले में किए ट्वीट से बढ़ी गृह मंत्री की मुसीबत, एफआईआर की उठी मांग

चंडीगढ़। हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज द्वारा टूलकिट मामले में किए गए ट्वीट ने उनकी मुसीबत बढ़ा दी है। दरअसल, विज द्वारा गिरफ्तार पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि को लेकर किए गए ट्वीट को लेकर उनके खिलाफ बेंगलुरु पुलिस में शिकायत देकर एफआईआर दर्ज करने की मांग की गई है। विज के ट्वीट पर ट्विटर ने उनको नोटिस भेजा है। यह नोटिस एक जर्मन उपयोगकर्ता से मिली शिकायत के आधार पर भेजा गया है। नोटिस में लिखा कि जर्मन ह्नेटवर्क प्रवर्तन अधिनियमर के तहत, ट्विटर को जर्मनी के लोगों द्वारा सूचित उपयोगकर्ताओं को नोटिस प्रदान करना है।

लुधियाना में पति बना हैवान, संबंध न बनाने पर तोड़ डाली पत्नी की बाजू

लुधियाना। लुधियाना में एक युवक ने सैक्स की डिमांड पूरी न करने पर पत्नी की बैट से जमकर पिटाई की। मारपीट में महिला की बाजू टूट गई। इस मामले में पीड़ित पत्नी ने पति के खिलाफ मारपीट का मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि उसका 15 साल का एक बेटा है। वह एक घरेलू महिला है। 18 साल पहले उसकी अरेंज मैरिज सलेम टाबरी के एक युवक के साथ हुई थी, जो अक्सर उससे कथित तौर पर मारपीट करता था और जबरन सैक्स करता था। इंकार करने पर मारपीट करता था। कई बार उसने वूमैन सैल में शिकायत की, परंतु हर बार माफी मांग कर उसे मना लेता था और कुछ दिनों बाद ही पुरानी हरकतों पर उतर आता था। पीड़िता ने बताया कि 9 फरवरी की रात उसके पति ने फिर जबरन सैक्स करने की कोशिश की। तब उसका बेटा व सास घर पर मौजूद थे। ऐसे में उसने सैक्स करने से मना किया तो पति गुस्से में आग बबूला हो उठा और बैट से कथित तौर पर पीट-पीट कर उसका सारा शरीर नीला कर दिया और उसकी दाईं बाजू तोड़ दी। किसी तरह से पति के चंगुल से छूटकर उसने अपनी जान बचाई। इसके बाद पीड़िता जख्मी हालत में टूटी बाजू लेकर 4 दिनों तक थाने के चक्कर लगाती रही, लेकिन उस पर किसी को तरस नहीं आया। हर बार एएसआई प्रभजीत सिंह कोई न कोई बहाना बनाकर उसे टाल देता था और अगले दिन आने को कहता था। मजबूर होकर उसे पुलिस कमिश्नर के पास पेश होना पड़ा। इस बात का पता चलते ही पुलिस हरकत में आ गई और उसका केस दर्ज कर लिया गया। पीड़िता का कहना है कि पुलिस ने अभी तक उसके आरोपी पति को गिरफ्तार नहीं किया है।

पेपर देने पहुंचे विद्यार्थी को दो लोगों ने उतारा मौत के घाट, भाई ने भागकर बचाई जान

बटाला। बटाला के घुमाण में पेपर देने पहुंचे विद्यार्थियों पर दो युवकों ने स्कूल के बाहर तेजधार हथियारों से जानलेवा हमला कर दिया। इस हमले में 12वीं के छात्र की मौके पर मौत हो गई जब कि उसके भाई ने भागकर अपनी जान बचाई। दरअसल, मृतक सिमरन सिंह और हरमनदीप सिंह पुत्रान चरणजीत सिंह निवासी शेरोवाल कस्बा घुमाण के सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। सिमरन सिंह का 12वीं कक्षा का पेपर था जबकि हरमनदीप सिंह 9वीं में पढ़ता है। दोनों भाई जब स्कूल के बाहर गेट के पास पहुंचे तो 2 युवकों ने उन पर तेजधार हथियारों से हमला कर दिया।

उन्होंने सिमरन सिंह के सिर पर 2-3 बार तेजधार हथियार से वार करके उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया जबकि हरमनदीप ने भागकर अपनी जान बचाई। इसके बाद स्कूल अध्यापकों ने सिमरन को सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया, जहां से डाक्टरों ने उसे अमृतसर के लिए रैफर कर दिया लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। डी.एस.पी. हरकृष्ण सिंह ने बताया कि मृतक के परिवार का उसके पड़ोस में रहते व्यक्ति के साथ प्लाट का झगड़ा था। इसी रंजिश के चलते पड़ोसी व्यक्ति के लड़के ने अपने साथी के साथ मिलकर उसका कत्ल कर दिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और जो भी तथ्य सामने आएंगे, उसके आधार कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

18 फरवरी को मांगो के समर्थन में होने वाले मटका फोड़ आंदोलन की तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। ज्वाइंट एक्शन कमेटी ऑफ चंडीगढ़ एडमिनिस्ट्रेशन एंड एमसी एम्प्लाईज एंड वर्कर्स की कार्यकारणी की बैठक सुरमुख सिंह की अध्यक्षता में एमसी सब कार्यलय मनीमाजरा में हुई। 18 फरवरी को डीसी रेट बढ़ाने और अन्य मांगों को लेकर दूसरा मटका फोड़ प्रदर्शन को तैयारियों लेकर चर्चा की गई। सभी यूनियंस के नेताओं ने कहा के सभी विभागें में मटका फोड़ आंदोलन की तैयारियां पूरी कर ली है और कर्मचारी मटका फोड़ प्रदर्शन में शामिल होंगे। बैठक को ज्वाइंट एक्शन कमेटी के कन्वीनर अशवनी कुमार और चेयरमैन सुरमुख सिंह ने संबोधन करते हुए कहा के प्रशासन और केंद्र सरकार की कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ कर्मचारी लगातार संघर्ष कर रहे हैं। बैठक को राजा राम, नरिंदर कुमार, कुलदीप सिंह, राजिंदर सिंह, रविंदर बिंदु, हुकमचंद, सतविंदर नारद, नरिंदर चौधरी ने संबोधन किया।

लिखकर देंगे कांग्रेसी, अगर टिकट ना मिला तो निर्दलीय नहीं लड़ेंगे चुनाव

मंडी। हिमाचल प्रदेश के मंडी में जिला कांग्रेस कमेटी ने नगर निगम चुनावों को लेकर टिकट के दावेदारों पर नई शर्त लगा दी है। जो लोग नगर निगम चुनावों में कांग्रेस पार्टी से टिकट के लिए आवेदन करेंगे उन्हें साथ में एक हल्फनामा भी देना होगा। हलफनामे में उन्हें लिखकर देना होगा कि अगर उन्हें टिकट नहीं मिला तो वह पार्टी प्रत्याशी के खिलाफ मैदान में निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर नहीं उतरेंगे। यह निर्णय मंडी जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष प्रकाश चौधरी ने की। बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में प्रकाश चौधरी ने बताया कि नगर निगम चुनावों को लेकर दावेदारों से 17 फरवरी तक आवेदन मांगे गए हैं। आवेदन के साथ अब एक हलफनामा भी मांगा गया है। चौधरी ने कहा कि अगर फिर भी कोई इसकी अवहेलना करता है तो उसे पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा।

हिमाचल में फिर बढ़े गैस सिलेंडर के दाम, 11 दिनों में 75 रुपये हुआ महंगा

शिमला। हिमाचल प्रदेश में एक बार फिर गैस सिलेंडर की दाम बढ़ गए हैं। इस महीने घरेलू उपभोक्ताओं को सिलेंडर के 866 रुपये चुकाने पड़ेंगे। 11 दिनों के भीतर रसोई गैस सिलेंडर 75 रुपये महंगा हो गया है। इससे पहले, एक फरवरी को रसोई गैस सिलेंडर का दाम 791 रुपये तय हुआ था। इसके बाद चार फरवरी को 25 रुपये और अब 50 रुपये महंगा हो गया है। वहीं, व्यावसायिक गैस सिलेंडर 9 रुपये सस्ता हुआ है। इस महीने व्यावसायिक सिलिंडर 1666 रुपये में मिलेगा। साथ ही घरेलू उपभोक्ताओं को सब्सिडी के तौर पर 31 रुपये लौटाए जाएंगे। बता दें कि बीते कई माह से रसोई गैस सिलेंडर के दाम बढ़ने के बावजूद सब्सिडी की राशि में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है।

गैस कंपनियों के स्थानीय अधिकारियों ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर से ही सब्सिडी तय होती है। हिमाचल प्रदेश के पूर्व मंत्री सुधीर शर्मा ने बढ़ती महंगाई पर सवाल उठाया है। उन्होंने एक फोटो पोस्ट करते हुए लिखा कि अच्छे दिन? वहीं, लोग भी सिलेंडर के दाम बढ़ने से परेशान हैं। इसके अलावा, प्याज की कीमतों में भी इजाफा हो रहा है। ऐसे में लोगों की रसोई पर खासा असर पड़ रहा है।

पंजाब के एसएएस नगर में दो बूथों पर फिर से चुनाव के आदेश

चंडीगढ़। पंजाब राज्य निर्वाचन आयोग (एसईसी) ने एसएएस नगर के नगर निगम चुनाव में 14 फरवरी को मतदान के दौरान दो बूथों पर अनियमितता की खबरें मिलने के बाद इन स्थानों पर फिर से चुनाव कराने के निर्देश दिए हैं। इससे पहले पटियाला के पतरन और समाना नगर परिषद के तीन बूथों पर भी चुनाव के निर्देश दिए गए थे और इन जगहों पर आज दोबारा मतदान हो रहा है। यहां कुछ शरारती तत्वों द्वारा ईवीएम को क्षति पहुंचाने की खबरें आई थीं।

पंजाब राज्य निर्वाचन आयोग के एक अधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि आयोग को एसएएस नगर जिले के उपायुक्त सह जिला निर्वाचन अधिकारी के जरिए उप संभागीय मजिस्ट्रेट सह निर्वाचन अधिकारी (आरओ) से मतदान के दौरान अनियमितता की जानकारी मिली थी। उन्होंने साहिबजादा अजीत सिंह (एसएएस) नगर एमसी के वार्ड संख्या 10 के बूथ संख्या 32 और 33 में दोबारा चुनाव कराने की अपील की थी।

आयोग ने इन बूथों पर हुए मतदान को अमान्य ठहराने की घोषणा करने के साथ ही इन बूथों पर 17 फरवरी को सुबह आठ बजे से शाम चार बजे तक मतदान कराने के आदेश दिए हैं। एसएएस नगर में मतों की गिनती 18 फरवरी को होगी। रविवार को विपक्षी पार्टियों ने सत्तारूढ़ कांग्रेस पर 'बूथ पर कब्जा करने' और 'हिंसा में संलिप्त' रहने के आरोप लगाए थे।

जगुआर लैंड रोवर ने डिजाइन द्वारा आधुनिक लक्जरी के भविष्य की पुनर्कल्पना की

» **मदरलैंड संवाददाता**

करनाल। जगुआर लैंड रोवर अपने दो अलग, ब्रिटिश ब्रांडों के माध्यम से डिजाइन द्वारा आधुनिक लक्जरी के भविष्य की पुनर्कल्पना करेगी। सही अर्थों में निरंतरता या स्थायित्व के कैनवास के विपरीत स्थापित, जगुआर लैंड रोवर सबसे कद्रदान ग्राहकों के लिए दुनिया के सबसे वांछनीय लक्जरी वाहनों और सेवाओं का एक दक्ष निर्माता बन जाएगा। एक रणनीति जो लक्जरी व्यवसाय के लिए पर्यावरण, सामाजिक और सामुदायिक प्रभाव में एक नया मानक बनाने के लिए डिजाइन की गई है।

'जगुआर लैंड रोवर वैश्विक ऑटोमोटिव उद्योग में अद्वितीय है। अद्वितीय मॉडल के डिजाइनर, अपने ग्राहकों की भविष्य की लक्जरी की जरूरतों की एक बेजोड़ समझ, भावनात्मक रूप से समृद्ध ब्रांड इक्विटी, ब्रिटिश होने की भावना, टेक्नोलॉजी में अग्रणी वैश्विक कंपनियों तक बेजोड़ पहुंच और व्यापक टाटा समूह के भीतर स्थिरता।

श्री बोलोरे ने कहा, ह्नहम कल के बिजनेस, दो ब्रांड और ग्राहक अनुभव की पुनर्कल्पना के लिए आज उन सामग्रियों को निखार रहे रहे हैं। पुनर्कल्पना रणनीति हमें उस विशिष्टता को बढ़ाने और उसका सम्मान करने की अनुमति देती है जैसा पहले कभी नहीं हुआ। आज हम मिलकर अपने आसपास की दुनिया पर और भी अधिक सुदृढ़ और सकारात्मक प्रभाव डिजाइन कर सकते हैं।

दो विशिष्ट आधुनिक लक्जरी ब्रांड जिसके केंद्र में स्थिरता है अपनी रिइमैजिन योजना के केंद्र में दो स्पष्ट, बेजोड़ विशेषताओं के साथ अलग आर्किटेक्चर पर लैंड रोवर और जगुआर दोनों ब्रांड का विद्युतीकरण होगा।

लैंड रोवर में वाहन और चालक रोमांच से एकजुट होते हैं। अभूतपूर्व, नई चुनौतियों का सामना करने और उम्मीद से बढ़कर, लैंड रोवर वास्तव में लोगों को 'ऊपर और आगे' जाने में मदद करता है। अगले पांच वर्षों में लैंड रोवर छह ऑल-इलेक्ट्रिक वैरिएंट्स का स्वागत करेगा। लक्जरी एसयूवी के क्षेत्र में यह रेंज रोवर, डिस्कवरी तथा डिफेंडर की श्रृंखला के माध्यम से दुनिया भर में अग्रणी बना हुआ है। पहला ऑल-इलेक्ट्रिक वैरिएंट 2024 में आएगा।

हिमाचल सहित देशभर की 16 दवाओं के सैंपल फेल

नालागढ़। देशभर में फेल हुई 16 दवाओं में हिमाचल के 7 उद्योगों की दवाएं भी शामिल है। इनमें दवाओं के साथ सेनेटाइजर व स्टेरिल वॉटर का सैंपल भी शामिल है। ताजातरीन ड्रग अलर्ट में फिर हिमाचल के प्रमुख औद्योगिक हब बीबीएन की पांच और सोलन, सिरमौर व ऊना जिला के एक-एक उद्योग की दवा गुणवत्ता की कसौटी में उतर नहीं पाई है।

सीडीएससीओ द्वारा निकाले गए ड्रग अलर्ट के बाद विभाग ने सैंपल फेल होने वाली दवाओं का बैच मार्किट से उठाने के निर्देश जारी कर दिए है।

फेल होने वाली दवाओं में मैसर्ज कोरोना रिमेडिज जटोली सोलन की ऑनटिक सिरप, मैसर्ज जी लैबोरेट्रीज पांवटा साहिब की निटजो-216, मैसर्ज मेडिपोल फार्मास्यूटिकल इंडिया प्राईवेट लिमिटेड भुड्ड बद्दी की एमिट्रिप्टायलिन टेबलेट्स, मैसर्ज ऑस्पर फामूलेशन प्राईवेट लिमिटेड फेज-1 झाड़माजरी बद्दी की एनसेफ-1जीएम, मैसर्ज लिजेंसी रिमेडिज प्राईवेट लिमिटेड बद्दी के स्टेरिल वॉटर फॉर इंजेक्शन, मैसर्ज यादवज हैल्थ एंड ब्यूटी हर्बल प्रोडक्टस फेस-2 टाणा बद्दी का डेज 2एक्स हैंड सेनेटाइजर, मैसर्ज हॉस्टस बायोटेक इंडस्ट्रियल एरिया टाहलीवाल ऊना की डॉक्सीसाईक्लीन एंड लैक्टिक एसिड बैसीलस कैप्सूल, मैसर्ज मेडिपोल फार्मास्यूटिकल भुड्ड बद्दी की क्लोपीडोजरेल एंड एस्प्रीन टेबलेटस शामिल है।

पत्रकारिता का स्वरूप,विविध आयाम व महत्व

“पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया (स्तम्भ) भी कहा जाता है। पत्रकारिता ने लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण स्थान अपने आप नहीं हासिल किया है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्त्व को देखते हुए समाज ने ही दर्जा दिया है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका अपनाये।”

प्रो.शरद नारायण खरे

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' का हिंदी रूपांतर है। शब्दार्थ की दृष्टि से 'जर्नलिज्म' शब्द 'जर्नल' से निर्मित है और इसका आशय है 'दैनिक'। अर्थात जिसमें दैनिक कार्यों व सरकारी बैठकों का विवरण हो। आज जर्णल शब्द 'मैगजीन' का द्योतक हो चला है। यानी, दैनिक, दैनिक समाचार-पत्र या दूसरे प्रकाशन, कोई सर्वाधिक प्रकाशन जिसमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के समाचार हो। पत्रकारिता लोकतंत्र का अविभाज्य अंग है। प्रतिपल परिवर्तित होनेवाले जीवन और जगत का दर्शन पत्रकारिता द्वारा ही संभंव है। परिस्थितियों के अध्ययन, चिंतन-मनन और आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति और दूसरों का कल्याण अर्थात लोकमंगल की भावना ने ही पत्रकारिता को जन्म दिया है ।

सी. जी. मूलर ने बिल्कुल सही कहा है कि-

सामायिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति उनका मूल्यांकन एवं ठीक-ठाक प्रस्तुतीकरण होता है।

डॉ॰ अर्जुन तिवारी के कथानानुसार-

ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह वह विद्या है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यो, कर्तव्यों और लक्ष्यों का विवेचन होता है। पत्रकारिता समय के साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी के अनुसार पत्रकारिता विशिष्ट देश, काल और परिस्थिति के आधार पर तथ्यों का, परोक्ष मूल्य का संदर्भ प्रस्तुत करती है

टाइम्स पत्रिका के अनुसार- पत्रकारिता इधर-उधर उधर से एकत्रित, सूचनाओं का केंद्र, जो सही दृष्टि से संदेश भेजने का काम करता है, जिससे घटनाओं का सहीपन को देखा जाता है

डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार- पत्रकारिता वह विद्या है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाए वह पत्रकारिता है

डॉ भुवन सुराणा के अनुसार- पत्रकारिता वह धर्म है जिसका संबंध पत्रकार के उस धर्म से है जिसमें वह तत्कालिक घटनाओं और समस्याओं का अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है

उपरोक्त परिभाषाएं के आधार पर हम कह सकते हैं कि पत्रकारिता जनता को समसामयिक घटनाएं वस्तुनिष्ठ तथा निष्पक्ष रुप से उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य है सत्य की आधार शीला पर पत्रकारिता का कार्य आधारित होता है तथा जनकल्याण की भावना से जुड़कर पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन का साधन बन जाता है

पत्रकारिता का स्वरूप व विशेषताएं--

सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। सामाजिक सरोकारों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुँचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सबसे निचले तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वाह ही सार्थक पत्रकारिता है।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया (स्तम्भ) भी कहा जाता है। पत्रकारिता ने लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण स्थान अपने आप नहीं हासिल किया है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्त्व को देखते हुए समाज ने ही दर्जा दिया है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका अपनाये। पत्रकारिता के इतिहास पर नजर लडालें तो स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य था। स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता ने अहम और सार्थक भूमिका निभाई। उस दौर में पत्रकारिता ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ-साथ पूरे समाज को स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा।

इंटरनेट और सूचना के आधिकार (आर.टी.आई.) ने आज की पत्रकारिता को बहुआयामी और अनंत बना दिया है। आज कोई भी जानकारी पलक झपकते उपलब्ध की और कराई जा सकती है। मीडिया आज काफी सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी हो गया है। पत्रकारिता की पहुँच और आभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का व्यापक इस्तेमाल आमतौर पर सामाजिक सरोकारों और भलाई से ही जुड़ा है, किंतु कभी कभार इसका दुरपयोग भी होने लगा है।

संचार क्रांति तथा सूचना के आधिकार के अलावा आर्थिक उदारीकरण ने पत्रकारिता के चेहरे को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। विज्ञापनों से होनेवाली अथाह कमाई ने पत्रकारिता को काफी हद्द तक व्यावसायिक बना दिया है। मीडिया का लक्ष्य आज आधिक से आधिक कमाई का हो चला है। मीडिया के इसी व्यावसायिक दृष्टिकोन का नतीजा है कि उसका ध्यान सामाजिक सरोकारों से कहीं भटक गया है। मुद्दों पर आधारित पत्रकारिता के बजाय आज इन्फोटेमेंट ही मीडिया की सुर्खियों में रहता है।

इंटरनेट की व्यापकता और उस तक सार्वजनिक पहुँच के कारण उसका दुष्प्रयोग भी होने लगा है। इंटरनेट के उपयोगकर्ता निजी भड़ास निकालने और अतंर्गततथा आपत्तिजनक प्रलाप करने के लिए इस उपयोगी साधन का गलत इस्तेमाल करने लगे हैं। यही कारण है कि यदा-कदा मीडिया के इन बहुपयोगी साधनों पर अंकुश लगाने की बहस भी छिड़ जाती है। गनीमत है कि यह बहस सुझावों और शिकायतों तक ही सीमित रहती है। उस पर अमल की नौबत नहीं आने पाती। लोकतंत्र के हित में यही है कि जहाँ तक हो सके पत्रकारिता हो स्वतंत्र और निर्बाध रहने दिया जाए, और पत्रकारिता का अपना हित इसमें है कि वह आभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग समाज और सामाजिक सरोकारोंके प्रति अपने दायित्वों के ईमानदार निवर्हन के लिए करती रहे।

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है। उसे वह सब जानना अच्छा लगता है जो सार्वजनिक नहीं हो अथवा जिसे छिपाने की कोशिश की जा रही हो। मनुष्य यदि पत्रकार हो तो उसकी यही कोशिश रहती है कि वह ऐसी गूढ़ बातें या सच उजागर करे जो रहस्य की गहराइयों में कैद हो। सच की तह तक जाकर उसे सतह पर लाने या उजागर करने को ही हम अन्वेषी या खोजी पत्रकारिता कहते हैं। खोजी पत्रकारिता एक तरह से जासूसी का ही दूसरा रूप है जिसमें जोखिम भी बहुत है। यह सामान्य पत्रकारिता से कई मायनों में अलग और आधिक श्रमसाध्य है। इसमें एक-एक तथ्य और कड़ियों को एक दूसरे से जोड़ना होता है तब कहीं जाकर वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होती है। कई बार तो पत्रकारों द्वारा की गई कड़ी मेहनत और खोज को बीच में ही छोड़ देना पड़ता है, क्योंकि आगे के रास्ते बंद हो चुके होते हैं। पत्रकारिता से जुड़ी पुरानी घटनाओं पर नजर दौड़ायें तो माई लाई कोड, वाटरगेट कांड, जैक एंडर्सन का पेंटागन पेपर्स जैसे अंतरराष्ट्रीय कांड तथा अन्य राष्ट्रीय घोटाले खोजी पत्रकारिता के चर्चित उदाहरण हैं।

यह लेखक की निजी राय है

संपादकीय

निजता पर नजर

संदेश सेवा प्रदाता कंपनी वाट्स एप ने जैसे ही अपने गोपनीयता नियमों में बदलाव की घोषणा की, स्वाभाविक ही उसे लेकर विरोध के स्वर फूट पड़े। जैसे-तैसे कंपनी ने घोषणा की कि वह अपने नियम लागू करने की अवधि को आगे बढ़ा रही है। मामले में सरकार ने भी दखल दिया। लेकिन अब पूरा विवाद सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर है। कोर्ट भी इस मामले में गंभीर दिख रही है। मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने वॉट्सएप से कहा कि आपकी नई प्राइवेसी के बाद भारतीय लोगों में निजता को लेकर काफी आशंकाए हैं। चीफ जस्टिस एसए बोबडे ने कहा कि आप भले ही खरबों डॉलर की कंपनी होंगे, लेकिन लोगों के लिए निजता का मूल्य पैसों से ज्यादा है। चीफ जस्टिस ने इस प्राइवेसी पॉलिसी को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर वॉट्सएप, फेसबुक और केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। अदालत ने वरिष्ठ वकील श्याम दीवान की उस दलील का भी समर्थन किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत में डेटा प्रोटेक्शन को लेकर कोई कानून नहीं है। चीफ जस्टिस बोबडे की बेंच ने एक सुर में कहा कि ऐसा कानून प्रभाव में लाना चाहिए। बता दें कि वॉट्सएप अपनी नई प्राइवेसी के तहत भारतीयों का डेटा शेयर करेगा। इस डेटा शेयरिंग को लेकर भारतीयों में आशंकाएं हैं। वॉट्सएप यूजर जो कंटेंट अपलोड, सबमिट, स्टोर, सेंड या रिसीव करते हैं, कंपनी उसका इस्तेमाल कहीं भी कर सकती है। कंपनी उस डेटा को शेयर भी कर सकती है। यह पॉलिसी 8 फरवरी 2021 से लागू होनी थी, लेकिन विवाद बढ ेके बाद डेडलाइन को बढ़ाकर 15 मई कर दिया गया है। पहले दावा किया गया था कि अगर यूजर इस पॉलिसी को एग्री नहीं करता है तो वह अपने अकाउंट का इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। हालांकि, बाद में कंपनी ने इसे ऑप्शनल बताया था। हाल ही में सरकार ने सोशल मीडिया पर किसान आंदोलन के बारे में फेक न्यूज, आपत्तिजनक और हिंसा भड़काने वाले कंटेंट को लेकर नाराजगी जताई थी। राज्यसभा में केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा था, हम सोशल मीडिया का सम्मान करते हैं। इसने आम लोगों को ताकत दी है। डिजिटल इंडिया प्रोग्राम में भी सोशल मीडिया की भूमिका काफी अहम है, लेकिन अगर इससे फेक न्यूज और हिंसा को बढ़ावा मिलता है तो हम कार्रवाई करेंगे। फिर वो ट्विटर हो या कोई प्लेटफार्म। हाल के सालों में जिस तरह इस गोपनीयता का कुछ शरारती तत्वों ने बेजा इस्तेमाल किया है, अफवाहें फैलाने, गलत सूचनाएं प्रसारित करने और भीड़ को भड़काने, किसी का चरित्र हनन या उसका अपमान करने वाले संदेश परोसने आदि में वे कामयाब होते रहे हैं, उसे देखते हुए इस माध्यम को अनुशासित करने की मांग भी खूब उठती रही है। इस लिहाज से देखें, तो वाट्सएप की नई शर्तें कुछ हद तक मनमानियों पर लगाम लगाने में कारगर साबित हो सकती हैं। मगर अक्सर देखा गया है कि संचार तकनीक में अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए उपाय दूसरे तरीके से मनमानी के रास्ते खोल देते हैं, इसलिए इस पर उठे विवाद को गंभीरता से परखने की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। यों स्मार्ट फोन और इंटरनेट सेवाओं के आने से बहुत सारे कामों में काफी सुविधा हो गई है, मगर इसके जरिए लोगों की निजता में सेंधमारी की घटनाएं भी बढ़ी हैं।

इंटरनेट शटडाउन के बढ़ते मामले अर्थव्यवस्था पर डालते हैं विपरीत असर

26 जनवरी को दिल्ली में हुई हिंसा के बाद हरियाणा के कई जिलों सहित सिंघु, गाजीपुर तथा टीकरी बॉर्डर पर सरकार के निदेर्शों पर इंटरनेट सेवा बाधित की गई थी, जो विभिन्न स्थानों पर करीब दस दिनों तक जारी रही। हरियाणा में दूरसंचार अस्थायी सेवा निलंबन (लोक आपात या लोक सुरक्षा) नियम, 2017 के नियम 2 के तहत क्षेत्र में शांति बनाए रखने और सार्वजनिक व्यवस्था में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोकने के लिए इंटरनेट सेवाएं बंद करने के आदेश दिए गए थे। इंटरनेट आज न केवल आम जनजीवन का अभिन्न अंग बन चुका है बल्कि इस पर पाबंदी के कारण हरियाणा में कोरोना वैक्सीन कार्यक्रम भी प्रभावित हुआ। इंटरनेट सुविधा पर पाबंदी के कारण छात्रों की ऑनलाइन कक्षाएं बंद हो गई थीं और इंटरनेट पर आधारित व्यवसाय ठप्प हो गए थे।

विभिन्न सेवाओं और योजनाओं के माध्यम से एक ओर जहां सरकार ह्यडिजिटल इंडियाह्न के सपने दिखा रही है, अधिकांश सेवाओं को इंटरनेट आधारित किया जा रहा है, वहीं बार-बार होते इंटरनेट शटडाउन के चलते जहां लोगों की दिनचर्या प्रभावित होती है और देश को इसका बड़ा आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ता है। डिजिटल इंडिया के इस दौर में जिस तरह इंटरनेट शटडाउन के मामले लगातार बढ़ रहे हैं और लोगों को बार-बार नेटबंदी का शिकार होना पड़ रहा है, उससे भारत की छवि पूरी दुनिया में प्रभावित हो रही है। ब्रिटेन के डिजिटल प्राइवेसी एंड सिक्योरिटी रिसर्च ग्रुप 'टॉप-10 वीपीएन' की एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले वर्ष भारत में कुल 75 बार इंटरनेट शटडाउन किया गया। कुल 8927 घंटे तक इंटरनेट पर लगी पाबंदी से जहां 1.3 करोड़ उपभोक्ता प्रभावित हुए, वहीं इससे देश को करीब 2.8 बिलियन डॉलर (204.89 अरब रुपये) का नुकसान हुआ। इंटरनेट पर जो पाबंदियां 2019 में लगाई गई थी, वे 2020 में भी जारी रहीं और भारत को 2019 की तुलना में गत वर्ष इंटरनेट बंद होने से दोगुना नुकसान हुआ। फेसबुक की पारदर्शिता रिपोर्ट में बताया गया था कि जुलाई 2019 से दिसम्बर 2019 के बीच तो भारत दुनिया में सर्वाधिक इंटरनेट व्यवधान वाला देश रहा था। वर्ष 2019 में कश्मीर में तो सालभर में 3692 घंटों के लिए इंटरनेट शटडाउन किया गया।

'शीर्ष 10 वीपीएन' की रिपोर्ट में बताया गया है कि बीते वर्ष विश्वभर में कुल इंटरनेट शटडाउन 27165 घंटे का रहा, जो उससे पिछले साल से 49 प्रतिशत ज्यादा था। इसके अलावा इंटरनेट मीडिया शटडाउन 5552 घंटे रहा। ब्रिटिश संस्था द्वारा इंटरनेट पर पाबंदियां लगाने वाले कुल 21 देशों की जानकारियों की समीक्षा करने पर पाया गया कि भारत में इसका जितना असर हुआ, वह अन्य 20 देशों के सम्मिलित नुकसान के दोगुने से भी ज्यादा है और नुकसान के मामले में 21 देशों की इस सूची में शीर्ष पर आ गया है। वर्ष 2020 में 1655 घंटों तक इंटरनेट ब्लैकआउट रहा तथा 7272 घंटों की बैंडविथ प्रभावित हुई, जो किसी भी अन्य देश की तुलना में सर्वाधिक है। रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनियाभर में नेटबंदी से होने वाले कुल 4.01 अरब डॉलर के नुकसान के तीन चौथाई हिस्से का भागीदार बना है। इंटरनेट शटडाउन के मामले में भारत के बाद दूसरे स्थान पर बेलारूस और तीसरे पर यमन रहा। बेलारूस में कुल 218 घंटों की नेटबंदी से 336.4 मिलियन डॉलर नुकसान का अनुमान है। रिपोर्ट में 'इंटरनेट शटडाउन' को परिभाषित करते हुए इसे 'किसी विशेष आबादी के लिए या किसी एक स्थान पर इंटरनेट या इलैक्ट्रॉनिक संचार को इरादतन भंग करना' बताया गया है और इस ब्रिटिश संस्था के अनुसार ऐसा 'सूचना के प्रवाह पर नियंत्रण' कायम करने के लिए किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि भारत में सरकार द्वारा इंटरनेट सेवाओं पर रोक लगाने के लिए अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग कानूनों का सहारा लिया जाता है, जिनमें कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर (सीआरपीसी) 1973, इंडियन टेलीग्राफ एक्ट 1885 तथा टेंपरेरी सस्पेंशन ऑफ टेलीकॉम सर्विसेज रूल्स 2017 शामिल हैं। पहले सूचना के प्रचार-प्रसार सहित इंटरनेट शटडाउन का अधिकार इंडियन टेलीग्राफ एक्ट 1885 तथा धारा-144 के तहत सरकार व प्रशासन को दिया गया था लेकिन टेंपरेरी सस्पेंशन ऑफ टेलीकॉम सर्विसेज रूल्स 2017 के अस्तित्व में आने के बाद इंटरनेट शटडाउन का फैसला अब अधिकांशतः इसी प्रावधान के तहत लिया जाने लगा है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2016 में एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जो इंटरनेट को मानवाधिकार की श्रेणी में शामिल करता है और सरकारों द्वारा इंटरनेट पर रोक लगाने को सीधे तौर पर मानवाधिकारों का उल्लंघन बताता है लेकिन यह प्रस्ताव किसी भी देश के लिए बाध्यकारी नहीं है।

इंटरनेट शटडाउन किए जाने पर सरकार और प्रशासन द्वारा सदैव एक ही तर्क दिया जाता है कि किसी विवाद या बवाल की स्थिति में हालात बेकाबू होने से रोकने तथा शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अफवाहों, गलत संदेशों, खबरों, तथ्यों व फर्जी तस्वीरों के प्रचार-प्रसार के जरिये विरोध की चिंगारी दूसरे राज्यों तक न भड़कने देने के उद्देश्य से ऐसा करने पर विवश होना पड़ता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि सोशल मीडिया के जरिये कुछ लोगों द्वारा झूठे संदेश और फर्जी वीडियो वायरल कर माहौल खराब करने के प्रयास किए जाते हैं लेकिन उन पर शिकंजा कसने के लिए इंटरनेट पर पाबंदी लगाने के अलावा प्रशासन के पास और भी तमाम तरीके होते हैं। विश्वभर में कई रिसर्चरों का दावा है कि इंटरनेट बंद करने के बाद भी हिंसा तथा प्रदर्शनों को रोकने में इससे कोई बड़ी सफलता नहीं मिलती है, हां, लोगों का काम धंधा अवश्य चौपट हो जाता है और व्यक्तिगत नुकसान के साथ सरकार को भी बड़ी आर्थिक चपत लगती है। इंटरनेट पर बार-बार पाबंदियां लगाए जाने का देश को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है।

सरकार द्वारा इंटरनेट के जरिये अफवाहों और भ्रामक तथा भड़काऊ खबरों का प्रसार रोकने के लिए इंटरनेट शटडाउन किया जाता है लेकिन इससे लोगों की जिंदगी थम-सी जाती है क्योंकि रोजमर्रा की जिंदगी को चलाए रखने से जुड़ा हर कार्य अब इंटरनेट पर निर्भर जो हो गया है। ऐसे में ये सवाल उठने स्वाभाविक हैं कि एक ओर जहां सरकार हर सुविधा के डिजिटलीकरण पर विशेष बल दे रही है और बहुत सारी सेवाएं ऑनलाइन कर दी गई हैं, वहीं आन्दोलनों को दबाने के उद्देश्य से नेटबंदी किए जाने के कारण लोगों के आम जनजीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। किसी को अपना आधार कार्ड बनवाना या ठीक कराना हो, किसी सरकारी सेवा का लाभ लेना हो, ऑनलाइन शॉपिंग करनी हो, खाने का ऑर्डर करना हो या फिर ऑनलाइन कैब, टैक्सी, रेल अथवा हवाई टिकट बुक करनी हो, बिना इंटरनेट के इन सभी सुविधाओं का इस्तेमाल किया जाना असंभव है। इंटरनेट शटडाउन के चलते एक ओर जहां ऐसे क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं पर प्रतिकूल असर पड़ता है, वहीं सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठाना भी लोगों के लिए मुश्किल हो जाता है। नेटबंदी की स्थिति में कोई अपनी फीस, बिजली व पानी के बिल, बैंक की ईएमआई इत्यादि समय से नहीं भर पाता तो बहुत से युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के फॉर्म भरने तथा इंटरनेट का उपयोग कर उनकी तैयारी करने में खासी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं।

एक अनुमान के अनुसार देश में आज 480 मिलियन से भी ज्यादा स्मार्टफोन यूजर्स हैं, जिनमें से अधिकांश इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं। आज हमें जीवन के हर कदम पर इंटरनेट की जरूरत पड़ती है क्योंकि आज का सारा सिस्टम काफी हद तक कम्प्यूटर और इंटरनेट की दुनिया से जुड़ चुका है। सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीओएआई) ने कुछ समय पूर्व बताया था कि देश में इंटरनेट शटडाउन के कारण हर घंटे करीब ढ़ाई करोड़ रुपये का नुकसान होता है। 'सॉफ्टवेयर फ्रीडम लॉ सेंटर' (एसएलएफसी) भी चिंता जताते हुए कह चुका है कि डिजिटल इंडिया के इस दौर में हम 'डिजिटल डार्कनेस' की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे में इस महत्वपूर्ण तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि इंटरनेट शटडाउन से लोगों की जिंदगी किस कदर प्रभावित होती है और देश की अर्थव्यवस्था को इसके कारण कितना बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ता है।

ऐसे में जरूरत है कुछ ऐसे विकल्प तलाशे जाने की, जिससे पूरी तरह इंटरनेट शटडाउन करने की जरूरत ही न पड़े। मसलन, प्रभावित इलाकों में पूरी तरह इंटरनेट बंद करने के बजाय फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम इत्यादि सोशल साइटों पर अस्थायी पाबंदी लगाई जा सकती है, जिससे विषम परिस्थितियों में भी इंटरनेट का इस्तेमाल कर लोग अपने जरूरी काम कर सकें।

-योगेश कुमार गोयल

मरीज इलाज से बच भी जाए तो इलाज के खर्चे से मरीज गरीबी रेखा से नीचे चला जाता है

» **अशोक भाटिया**

कोरोना से जंग की जिसमें दिन-ब-दिन हिंदुस्तान मजबूत होता जा रहा है और वायरस कमजोर होता दिख रहा है। देश में आज कोरोना वायरस के खिलाफ वैक्सीनेशन का का काम चालू हैं । स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक अब तक देश भर में 10 लाख से ज्यादा लोगों को कोरोना वैक्सीन दी जा चुकी है।तो दूसरी ओर जिस तरह मजबूती से पिछले 1 साल से हिंदुस्तान कोरोना से लड़ रहा है, उसका नतीजा है कि 7 महीने बाद कोरोना के एक्टिव मामले 2 लाख के नीचे पहुंच गए हैं और देश में 8 महीने बाद कोरोना संक्रमण की वजह से 1 दिन में होने वाली मौत का आंकड़ा भी कम होता जा रहा है।एक ओर कोरोना वायरस पर वैक्सीन का प्रहार जारी है। लगातार बरती जा रही सावधानियों और तैयारियों का नतीजा है कि वायरस के अंत का आगाज हो चुका है और वो दिन दूर नहीं, जब हालात नॉर्मल हो जाएंगे। लेकिन कोरोना वायरस की चपेट में आए लोगों के इलाज में हुए खर्च से उन लोगों और उनके परिवारों की जो आर्थिक सेहत बिगड़ी है, वो नॉर्मल होने में शायद बहुत वक्त लग जाएगा और जब तक सबको वैक्सीन नहीं लग जाती है, तब तक ना जाने कितने लोग आर्थिक तंगी के शिकार हो जाएंगे।क्योंकि एक विश्लेषण के मुताबिक 80 फीसदी से ज्यादा परिवार किसी एक सदस्य के कोरोना संक्रमित होने के बाद उसके इलाज पर होने वाले खर्च से आर्थिक तंगी का सामना कर सकते हैं। भले ही राज्यों में इलाज के खर्च की एक सीमा तय कर दी गई हो, लेकिन उसके बाद भी 10 दिन के इलाज का बिल उनके मासिक खर्च से कई गुना ज्यादा है।

इस चिंता को इन दिनों बढ़ा दिया है सोशल मीडिया पर वायरल हो रही एक दवा की तस्वीरों और उसमें छपी कीमतों की तस्वीरें हैं, जिसमें एक दवा के दो पत्ते दिख रहे हैं। ये कोरोना के दौरान दी जाने वाली दवा है ।फोटो में आइवरमेक्टिन टैबलेट के दो पत्ते रखे हुए हैं।एक की मैन्यूफैक्करिंग डेट सितंबर 2020 है और दूसरे की अक्टूबर 2020। पहले की टफढ 195 रुपये है और दूसरे की 350 रुपये. यानी करीब-करीब 80 प्रतिशत की बढ़ोतरी ।सोशल मीडिया यूजर्स इस तस्वीर को शेयर करते हुए कोरोना काल में भी जारी लूट के लिए फार्मा कंपनियों, सरकार और सिस्टम पर सवाल उठा रहे हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दवा के दाम तय करने का सरकारी सिस्टम क्या है ।कैसे उसकी टफढ तय होती है, और कैसे चंद पैसों में बनने वाली एक गोली कई गुना ज्यादा दाम में बिककर आपकी और हमारी जेब पर किसी गोले की तरह गिरती है।

भारत में दवा मरीजों का इलाज भी करती है और उन्हें मर्ज भी देती है। महंगी दवाएं खाकर भले ही मरीज ठीक हो जाए, लेकिन उसकी और उसके परिवार की आर्थिक सेहत बुरी तरह बिगड़ जाती है। इलाज और दवा पर होने वाले खर्च की वजह से देश में हर साल 3 करोड़ 8 लाख लोग गरीबी रेखा से नीचे चले जाते हैं। ये दर्द लोगों को उन गोलियों से मिलता है, जो एक ओर उनकी बीमारी दूर करने के काम आती हैं. लेकिन दूसरी ओर जेब पर गोले की तरह गिरकर उन्हें आर्थिक तौर पर बीमार बना देती है और कोरोना काल में भी ये बदस्तूर जारी है ।सोशल मीडिया पर वायरल आइवरमेक्टिन 12 टऋ टैबलेट के पत्ते की तस्वीरों के मुताबिक सितंबर 2020 मैन्यूफैक्करिंग डेट वाली एक गोली की कीमत 19 रुपये 50 पैसे बैठती है ।जो अक्टूबर 2020 की मैन्युफैक्करिंग डेट वाले पैक में बढ़कर 35 रुपये प्रति गोली हो जाती है। लेकिन आप चौंक जाएंगे कि इसी आइवरमेक्टिन 12 टऋ टैबलेट की अलग-अलग कंपनियों में बनी एक गोली की टफढ 1 रुपये 70 पैसे से लेकर 58 रुपये पचास पैसे तक है ।ये सिर्फ एक दवा की कहानी नहीं है, बल्कि सैकड़ों दवाओं की हैं, जो हिंदुस्तान में बनती हैं, बिकती हैं। देश में दवाओं की कीमत नियंत्रित करने के लिए ठढढअ यानी नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी है ।देश में 10 हजार से ज्यादा दवाइयां बनाई और बेची जाती हैं। लेकिन इनमें से सिर्फ 874 एसेंशियल ड्रग की कीमतों को सरकार कंट्रोल करती है।

मतलब ये कि 874 को छोड़कर बाकी दवाओं को फार्मास्युटिकल कंपनियां कहने के लिए तो टफढ पर बेच रही हैं. लेकिन हकीकत में मनमाफिक दाम वसूल रही हैं. लेकिन ये टफढ तय कैसे होता है, अब ये समझ लीजिए. फार्मा कंपनियां दवा बनाती हैं, इनमें से सरकार कुछ दवाओं की टफढ तय करती है, कुछ की नहीं। कंपनियां अपनी लागत और मुनाफा जोड़कर डिस्ट्रीब्यूटर को देती हैं। डिस्ट्रीब्यूटर 16% मार्जिन पर रिटेलर्स को देते हैं और रिटेलर्स 8% मार्जिन पर बेचते हैं ।देश में करीब 3000 फार्मास्यूटिकल कंपनियां दवा बनाती हैं। इनमें 90% से ज्यादा प्राइवेट कंपनियां हैं।

यह लेखक की निजी राय है

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक संजय कुमार उपाध्याय द्वारा हैल्थ ऑफ भारत व दैनिक अमन प्रेस आर. जेड.-138, रविनगर एक्सटेंसन, नियर पार्क हॉस्पिटल, न्यू दिल्ली-110018 से मुद्रित एवं एस-503ए स्कूल ब्लॉक, शक्करपुर दिल्ली-110092 से प्रकाशित। सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही किया जाऐगा। संपादकः संजय कुमार उपाध्याय। मो.: 8700635881, आर.एन.आई नं. DELHIN/2019/78266

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

संक्षिप्त समाचार

प्रशंसकों को मेरे ब्रेकअप की चिंताः गायक शेल्टन

लॉस एंजेलिस। अमेरिकी गायक ब्लेक शेल्टन के प्रसंशकों को उनके ब्रेकअप की चिंता सताने लगी है। शेल्टन की माने तो उन्हें हर दिन ऐसे मैसेजेस और कमेंट्स आते हैं, जिसमें उनके फॉलोअर्स ग्वेन स्टेफनी संग उनके ब्रेकअप की बात कर रहे होते हैं। ये दोनों हाल ही में सुपर बाउल के एक विज्ञापन में नजर आए, जो जारी होने के बाद देखते ही देखते वायरल हो गई। शेल्टन ने बताया, ₹हर रोज जब मैं सोशल मीडिया या कहीं और देखता हूं, तो कोई न कोई यह सवाल पूछ ही लेता है कि 'यार, इस दुनिया में आखिर हो क्या रहा है। ग्वेन स्टेफनी और ब्लेक शेल्टन अब साथ नहीं रहे क्या।₹' गायक ने आगे कहा कि सुपर बाउल का विज्ञापन उनके प्रशंसकों को छेड़ने का एक नया तरीका था। अक्टूबर, 2020 में अपनी सगाई का ऐलान करने से पहले इन्होंने आपस में एक-दूसरे को पांच साल तक डेट किया था। अब उनके प्रशंसकों के ऐसे मैसेजेस और कमेंटस आ रहे हैं, जिसमें वे अपने चहेते कलाकारों के बारे में जानने को उत्सुक है।

रूस का मानवरहित मालवाहक यान अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए रवाना

मॉस्को। रूस के महात्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के तहत मालवाहक यान को सोमवार को सफलतापूर्वक अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए रवाना किया गया। प्रोग्रेस एमएस-16 मालवाहक यान को रूसी ह्यलीजह्ण वाले कजाकिस्तान के बैकनूर प्रक्षेपण केंद्र से स्थानीय समय अनुसार सुबह पौने दस बजे प्रक्षेपित किया गया और वह अपने निर्धारित कक्ष में पहुंच गया है। यह पानी, प्रणोदक और अन्य सामान लेकर जा रहा है और बुधवार को यह अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचेगा। अंतरिक्ष स्टेशन का संचालन नासा के केट रूबिन्स, माकइल हॉपकिन्स, विक्टर ग्लोवर और शैनन वाकर; जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी के अंतरिक्ष यात्री सोइची नौगुची और रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रॉसकॉसमॉस के सर्गेई राइजीकोव और सर्गे कुड-स्वेर्चकोव कर रहे हैं।

क्या न्यूजीलैंड में खत्म हुआ कोरोना? नहीं आया एक भी मामला सामने

वेलिंग्टन। न्यूजीलैंड में लगातार दूसरे दिन कोविड-19 का कोई नया मामला सामने नहीं आने के बाद बुधवार को ऑकलैंड से लॉकडाउन हटाए जाने की उम्मीदें बढ़ गई हैं। न्यूजीलैंड के सबसे बड़े शहर ऑकलैंड में एक परिवार में माता-पिता और उनकी बेटी संक्रमित पाई गई थीं। इसके बाद ऑकलैंड में सोमवार से तीन दिन का लॉकडाउन लगाया गया था। गौरतलब है कि कोरोना वायरस को मात देने के करीब छह महीने बाद, पहली बार देश में लॉकडाउन लगाया गया है, जो बुधवार तक जारी रहेगा। 'कोविड-19 रिस्पॉन्स मिनिस्टर' क्रिस हिपकिन्स ने बताया कि पाबंदियां हटाने को लेकर सांसदों का अंतिम निर्णय अगले 24 घंटे में कोविड-19 के मामलों की अद्यतन जानकारी पर निर्भर करेगा। हिपकिन्स ने कहा, ह्यह्य यकीनन जिस दिन संक्रमण का एक भी मामला सामने नहीं आता, वह एक अच्छा दिन ही होता है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने नए मामले सामने आने के बाद से जांच भी बढ़ा दी है। सोमवार को 15 हजार से अधिक नमूनों की जांच की गई थी। अधिकारियों ने बताया कि ऑकलैंड में माता-पिता और उनकी बेटी संक्रमित पाई गई थीं। महिला एक कैटरिंग कम्पनी में काम करती है, जहां एयरलाइन्स के कर्मचारियों के कपड़े धोने का काम होता है और इस पहलू को ध्यान में रखकर भी जांच की जा रही है, कहीं कोई यात्री तो संक्रमित नहीं था। अधिकारियों ने बताया कि परिवार के सम्पर्क में आए सभी लोगों और करीबियों के, जांच में संक्रमित ना होने की पुष्टि हुई। न्यूजीलैंड में 'फाइजर' और 'बायोएनटेक' द्वारा विकसित कोविड-19 के टीके की करीब 60 हजार खुराके भी इस सप्ताह यहां पहुंच गई हैं और टीकाकरण अभियान शनिवार से शुरू किया जाएगा।

अमेरिका में मौसम के तेवर बिगड़े, भारी बर्फबारी से ठहरा जीवन, उड़ानें रद्द, बिजली गुल

डैलस। अमेरिका के दक्षिण मैदानी क्षेत्र में मौसम के तेवर बिगड़ने से भारी बर्फबारी के साथ आए बर्फीले तूफान के चलते यहां के निवासियों का जीवन ठहर सा गया है। हवाई उड़ानें रद्द किए जाने और वाहनों का आवागमन प्रभावित होने के बाद अगले दिन सोमवार को पारा काफी लुढ़क गया और बिजली आपूर्ति रोक दी गई। टेक्सस के इलेक्ट्रिक रिलायबिलिटी काउंसिल (इरकॉट) ने सोमवार तड़के बारी-बारी से बिजली काटना शुरू किया यानी हजारों घरों में थोड़ी थोड़ी अवधि के लिए बिजली आपूर्ति बंद कर दी गयी। डैलस और ह्यूस्टन के आसपास तापमान शून्य के बहुत नीचे चला गया। काउंसिल ने ट्वीट किया, ह्यहम टेक्सस से अपनी सुरक्षा को सर्वोपरि रखने की अपील करते हैं। उसने लोगों से बिजली का उपयोग घटाने की अपील की। काउंसिल राज्य में बिजली आपूर्ति का प्रबंधन करती है। उसने कहा, ह्ययातायात लाइट और अन्य बुनियादी सुविधाओं में अस्थायी रूप से बिजली आपूर्ति रोकी जा सकती है।

इरकॉट ने बिजली व्यवस्था के भरोसेमंद बनाए रहने के लिए बारी से बारी से बिजली की कटौती को आखिरी उपाय बताया। उसने कहा कि विद्युत वितरण कंपनियों से पूरे तंत्र में मांग को कम करने के तौर-तरीके पता लगाने को कहा गया है। टेक्सस में स्थानीय समय के अनुसार सुबह सात बजे तक 23 लाख से अधिक लोग बिना बिजली के कारण अंधेरे में थे। 'नेशनल वेदर सर्विस' के मुख्य मौसम वैज्ञानिक बॉब ओरावेक ने कहा, हाल में बर्फबारी के चलते कई दुर्घटनाओं की खबरें हैं। मुझे लगता है कि आज बड़ा खतरा है क्योंकि मौसम का दबाव उत्तरपूर्व दिशा में बढ़ रहा है। उनके अनुसार पूर्वी लुइसियाना, मिसीसिपी, मध्य तेन्नेसी, केंटकी और पश्चिम वर्जीनिया में 0.25 से लेकर 0.6 सेंटीमीटर तक बर्फ जमा होने की आशंका है।

इस सर्द तूफान की वजह से ह्यूस्टन में अधिकारियों ने लोगों को बिजली की आपूर्ति ठप होने, रास्ता बाधित होने समेत ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए तैयार रहने को कहा है जैसा कि श्रेणी-5 के चक्रवात के समय होता है। वहीं, ह्यूस्टन क्षेत्र में रविवार को बारिश के बाद तापमान जमाव बिंदु तक पहुंच गया। मौसम पूवार्नुमान केंद्र के मौसम वैज्ञानिक मार्क चेनार्ड ने बताया कि सोमवार को दक्षिणी मैदानी इलाकों में 12 इंच तक बर्फबारी की आशंका है। अमेरिका का बड़ा हिस्सा अभी सर्द मौसम से प्रभावित है लेकिन दक्षिण तक ऐसी स्थिति का बनना लगभग दुर्लभ ही है। टेक्सस के गवर्नर ग्रेग अबॉट ने राज्य के सभी 254 काउंटी के लिए 'आपदा' की चेतावनी जारी की। उन्होंने शनिवार को कहा था, ह्यटेक्सस बेहद खतरनाक सर्द तूफान का सामना कर रहा है।

अटलांटा जाने पर तुम्हारे रेस्टोरेंट जरूर आऊंगा, बाइडेन ने नील और समीर से किया वादा

वॉशिंगटन। कोरोना संक्रमण का पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है। इसकी सबसे ज्यादा मार छोटे कारोबारियों पर पड़ी है। पिछले दिनों अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडन ने ऐसे ही छोटे कारोबारियों से बातचीत कर उनके बिजनेस का हाल-चाल जाना। इसी कड़ी में उन्होंने पिछले दिनों भारतीय रेस्टोरेंट 'नान-स्टॉप' को चलाने वाले नील और समीर इंदनानी से बातचीत की।

बातचीत के दौरान जो बाइडन ने कहा कि अगर वह अटलांट आएंगे तो वह उनके रेस्टोरेंट में जरूर आएंगे। व्हाइट हाउस ने इस बातचीत का एक वीडियो जारी किया है। जहां देखा जा सकता है कि वह 'नान स्टॉप' के मालिक से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बातचीत कर रहे हैं। नील ने राष्ट्रपति से कहा कि कोरोना के चलते उनके बिजनेस पर जबरदस्त असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि करीब 75 फीसदी बिजनेस कम हो गया है। उन्होंने बताया कि कोरोना से पहले उनके यहां 20-25 कर्मचारी थे, इन दिनों इसकी संख्या घट कर महज 10-15 रह गई है।

राष्ट्रपति जो बाइडन ने इन दोनों से पूछा कि बिजनेस को फिलहाल बचाने के लिए किस चीज की जरूरत है? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हर किसी को सबसे पहले कोरोना की वैक्सीन लगाई जाए जिससे कि लोग दोबारा बाहर निकल सकें। राष्ट्रपति जो बाइडन ने इसके बाद कहा कि छोटे बिजनेस को बचाने के लिए उन्होंने राहत पैकेज का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि राहत के नाम पर 8-10 मिलियन डॉलर खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा हमें ज्यादा से ज्यादा निवेश करना होगा। आप सबको पटरी पर लाने के लिए मौका दिया जाएगा।

इन 15 देशों में भारतीय मूल के 200 लोग टॉप पदों पर, 60 ने बनाई कैबिनेट में जगह

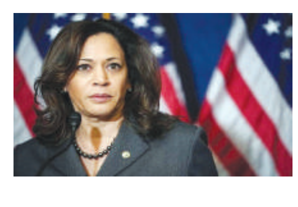

वाशिंगटन। अमेरिका और ब्रिटेन समेत दुनियाभर के 15 देशों में भारतीय मूल के 200 से अधिक लोग नेतृत्व के पदों पर काबिज हैं और इनमें से 60 लोगों ने मंत्रिमंडल में जगह बनाई है। '2021 इंडियास्पोरा गर्वनमेंट लीडर्स' की अपनी तरह की पहली सूची में यह जानकारी दी गई। सरकारी वेबसाइटों और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध अन्य संसाधनों के आधार पर तैयार की गई इस सूची में बताया गया है कि भारतीय मूल के 200 से अधिक नेता दुनियाभर के 15 देशों में लोक सेवा के उच्चतम सोपान पर पहुंचे हैं और इनमें से 60 से अधिक लोग मंत्रिमंडलों में पद संभाल रहे हैं।

'इंडियास्पोरा' के संस्थापक, उद्योगपति एवं निवेशक एम आर रंगास्वामी ने कहा, यह अत्यंत गौरवान्वित करने वाली बात है कि दुनिया के सबसे पुराने लोकतांत्रिक देश की पहली महिला और पहली अश्वेत उपराष्ट्रपति भारतीय मूल की हैं। अमेरिकी सांसद अमी बेरा ने कहा, '2021 इंडियास्पोरा गर्वनमेंट लीडर्स' की सूची में शामिल होना मेरे लिए गर्व की बात है। संसद में सबसे लंबे समय से सेवाएं दे रहे सांसद के तौर पर, मुझे भारतीय-अमेरिकी समुदाय का नेता बनकर गर्व है। यह समुदाय अमेरिकी जीवन एवं समाज का अभिन्न अंग बन गया है।

इंडोनेशिया में भूकंप और बाढ़ के बाद राहत और बचाव के काम में लगी एक राहत टीम। - फोटो

ब्रिटेन में घातक स्ट्रेन से बचाव के लिए बने नए नियम, तोड़ने पर 10 साल कैद और 10 हजार पाउंड तक जुमार्ना

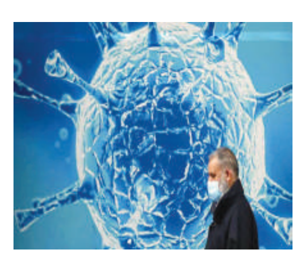

लंदन। ब्रिटेन में जानलेवा कोरोना वायरस के नए स्ट्रेन के संक्रमण के बाद हड़कंप मचा है और उसके प्रसार को रोकने के लिए यात्रा के नियम कड़े बना दिए गए हैं। इसके तहत 33 उच्च खतरा वाले 'रेड लिस्ट' देशों से ब्रिटेन लौटने वाले लोगों को आवश्यक रूप से होटल में आइसोलेशन में रहना होगा। नए मानकों का गंभीर उल्लंघन करने वालों को दस साल की जेल और 10 हजार पाउंड तक का जुमार्ना हो सकता है। यहां आने वाले लोगों को सरकार की तरफ से निर्धारित होटलों में दस दिनों तक आइसोलेशन में रहने के लिए पहले से बुकिंग करानी होगी और इसके लिए उन्हें 1750 पाउंड का भुगतान करना होगा। इसमें होटल का खर्च, परिवहन और पहुंचने के बाद दो अलग-अलग जांच का खर्च शामिल है। जिन लोगों ने भारत जैसे 'रेड लिस्ट' देशों का दौरा नहीं किया है, उन्हें दस दिनों तक आवश्यक रूप से घर में आइसोलेशन में रहना पड़ेगा और पहुंचने के दूसरे और आठवें दिन दो आवश्यक कोविड-19 जांच कराने होंगे।

ब्रिटेन के स्वास्थ्य मंत्री मैट हैनकॉक ने कहा, ह्यनए स्वरूप के सामने आने के बाद हमें और आगे कदम बढ़ाना होगा। आज से लागू नियम आइसोलेशन की व्यवस्था को और मजबूत बनाएंगे और सीमा पर नए स्वरूप के खिलाफ सुरक्षा का स्तर सुदृढ़ करेंगे।

उन्होंने कहा, ह्यअपने टीकाकरण कार्यक्रम की रक्षा के लिए ये नए उपाय जरूरी हैं जिसके तहत अब तक 1.5 करोड़ लोगों को टीका लगाया जा चुका है। हम सभी सामान्य जीवन बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं।

ब्रिटेन या आयरलैंड का कोई भी निवासी जो उच्च खतरों वाले 'रेड लिस्ट' देशों से लौट रहा है उसे निर्धारित स्थल से इंग्लैंड में प्रवेश करना होगा और सरकार के 'प्रबंधन वाले किसी आइसोलेशन केंद्र' के लिए पहले से बुकिंग करानी होगी।

पाक के साथ मिलकर कश्मीर में आतंक को बढ़ावा देने के एदोर्गान को बड़ा झटका

अंकारा। आतंकवादियों की पनाहगाह बने पाकिस्तान के साथ मिलकर कश्मीर में आतंकी गति-विधियां चलाने के इरादे संजो रहे तुर्की को इराक में बड़ा झटका लगा है। कुर्दिश छापामार गुट पीकेके ने तुर्की के 13 सैनिकों और पुलिस अधिकारियों की उत्तरी इराक में एक गुफा के अंदर बेहद निर्मम तरीके से हत्या कर दी है। इन सभी सैनिकों को कुर्दिश वर्कर्स पार्टी या पीकेके के छापामारों ने मार दिया है। सैनिकों की हत्या से विपक्ष के निशाने पर आए तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैय्यप एदोर्गान बुरी तरह से भड़क उठे हैं और उन्होंने अमेरिका पर निशाना साधा है। पीकेके के गुरिल्ला छापामार पिछले 3 दशक से तुर्की की सरकार के साथ संघर्ष कर रहे हैं। इराक की सरकार ने बताया कि तुर्की के सैनिकों ने उत्तरी इराक में एक सैन्य कार्रवाई के दौरान गुफा से मारे गए सैनिकों के शव को बरामद किया है। तुर्की के 12 सैनिकों के सिर को काटा गया था, वहीं एक सैनिक के सिर में गोली मारी गई थी। इन सैनिकों की मौतों से तुर्की की राजनीति में तूफान आ गया है।

मुस्लिम देशों में खलीफा बनने की फिराक में लगे तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैय्यप एदोर्गान और उनके राजनीतिक सहयोगियों इस हमले की निंदा की है, वहीं विपक्षी दलों ने सरकार की कार्य प्रणाली पर सवाल उठाए हैं। विपक्षी दलों ने एदोर्गान से सवाल किया है कि सरकार क्यों अपने सैनिकों को रिहा कराने में असफल रही। साथ ही इन सैनिकों को छुड़ाने के लिए असफल सैन्य अभियान को चलाया। उधर, पीकेके ने कहा है कि उसने तुर्की के सैनिकों की मौत तुर्की की सेना के हवाई हमले की वजह से हुई। बता दें कि 10 फरवरी से तुर्की की सेना ने सैन्य अभियान शुरू किया है। वहीं तुर्की के रक्षामंत्री हुलुसी अकार ने कहा है कि जैसे ही यह सैन्य अभियान शुरू हुआ पीकेके के कमांडर ने उनके बंधक सैनिकों की हत्या कर दी। इस बीच तुर्की के राष्ट्रपति एदोर्गान ने सोमवार को अमेरिका पर कुर्द आतंकियों के समर्थन का आरोप लगाया है।

राइज शहर में सत्ताधारी पार्टी के समर्थकों को संबोधित करते हुए एदोर्गान ने अमेरिकी विदेश मंत्रालय के एक बयान पर भी निशाना साधा। इस बयान में अमेरिका ने बंधकों की हत्या की तो निंदा की लेकिन यह भी कहा कि अमेरिका इन मौतों की ह्यकड़े से कड़े शब्दों मेंह्ण निंदा करेगा अगर यह पुष्टि हो कि वे कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी या पीकेके के हाथों मारे गए हैं। पीकेके से संबद्ध सीरियाई कुर्दिश समूहों के संदर्भ में एदोर्गान ने कहा, ह्यक्या आप यह नहीं कहेंगे कि आप पीकेके, द वाईपीजी या द पीवाईडी का समर्थन करते हैं? आप उनके साथ हैं तथा यह बात बिल्कुल स्पष्ट है। तुर्की इन संगठनों को आतंकवादी संगठन मानता है जबकि इस्लामिक स्टेट के खिलाफ लड़ाई में यह संगठन अमेरिका के सहयोगी हैं। एदोर्गान ने कहा, ह्यअगर हम नाटो में साथ हैं, और अगर हमें नाटो (गठबंधन) में बने रहना है तो आपको हमारे प्रति गंभीर होना होगा। उन्होंने कहा, ह्यआप आतंकवादियों का पक्ष नहीं ले सकते। आपको हमारी तरफ होना पड़ेगा।

प्रशंसकों को मेरे ब्रेकअप की चिंताः गायक शेल्टन

लॉस एंजेलिस। अमेरिकी गायक ब्लेक शेल्टन के प्रसंशकों को उनके ब्रेकअप की चिंता सताने लगी है। शेल्टन की माने तो उन्हें हर दिन ऐसे मैसेजेस और कमेंट्स आते हैं, जिसमें उनके फॉलोअर्स ग्वेन स्टेफनी संग उनके ब्रेकअप की बात कर रहे होते हैं। ये दोनों हाल ही में सुपर बाउल के एक विज्ञापन में नजर आए, जो जारी होने के बाद देखते ही देखते वायरल हो गई। शेल्टन ने बताया, हर रोज जब मैं सोशल मीडिया या कहीं और देखता हूं, तो कोई न कोई यह सवाल पूछ ही लेता है कि ह्ययार, इस दुनिया में आखिर हो क्या रहा है। ग्वेन स्टेफनी और ब्लेक शेल्टन अब साथ नहीं रहे क्या।

गायक ने आगे कहा कि सुपर बाउल का विज्ञापन उनके प्रशंसकों को छेड़ने का एक नया तरीका था। अक्टूबर, 2020 में अपनी सगाई का ऐलान करने से पहले इन्होंने आपस में एक-दूसरे को पांच साल तक डेट किया था। अब उनके प्रशंसकों के ऐसे मैसेजेस और कमेंटस आ रहे हैं, जिसमें वे अपने चहेते कलाकारों के बारे में जानने को उत्सुक है।

जिस स्टेशन से प्राइवेट ट्रेन चले, 50 किलोमीटर दूर तक दूसरे स्टेशन से वैसी ही ट्रेन नहीं चलेः प्राइवेट प्लेयर्स

नई दिल्ली। रेलवे में प्राइवेट पैसेंजर ट्रेन चलाने से पहले प्राइवेट प्लेयर्स ने कुछ शर्तें रखी हैं। उन्होंने रेलवे से कहा है कि जिस स्टेशन से प्राइवेट ट्रेन चलेगी, उससे 50 किलोमीटर दूर तक किसी भी दूसरे स्टेशन से वैसी ही ट्रेन चलाए जाने की इजाजत नहीं होनी चाहिए। भारतीय रेलवे इस शर्त सहित और भी कुछ सुझावों पर विचार कर रहा है। इससे पहले बोली लगाने के दस्तावेज में रेलवे ने कहा था कि जहां से भी प्राइवेट ट्रेन चलेगी, वहां आस-पास के किसी भी स्टेशन से 60 मिनट तक वैसी कोई ट्रेन नहीं चलेगी। हालांकि, प्राइवेट प्लेयर्स ने कहा था कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और बेंगलुरु सहित तमाम शहरों में कई स्टेशन हैं और सबअर्बन ट्रेनें भी हैं। उन्होंने कहा था कि इस नियम का दायरा थोड़ा बढ़ाने की जरूरत है। बोली के दस्तावेज में कहा गया है कि एक घंटें के अंदर दूसरी ट्रेन नहीं चलने का प्रतिबंध सिर्फ उस स्थिति में काम नहीं करेगा, जब प्राइवेट ट्रेन में लगातार तीन महीने तक 80 फीसदी से अधिक यात्री रहेंगे।

रेलवे तमाम सुझावों पर ध्यान देगा और उसके बाद 109 जोड़ी रूट्स पर चलने वाली 151 ट्रेनों की तरफ से मिलने वाली बोलियों के आधार पर फैसला लेगा। सूत्र ने बताया कि प्राइवेट प्लेयर्स को ट्रेन चलाने के लिए भारी निवेश करना होगा, जो करीब 30 हजार करोड़ रुपये तक होगा। वह खुद ही अपना किराया भी तय करने वाले हैं, जो सामान्य किराए से महंगा होगा, क्योंकि प्राइवेट प्लेयर्स आधुनिक कोच लाएंगे, जिनमें अधिक सुविधाएं भी मिलेंगी।

पैंगॉन्ग झील से सहमति के बाद अंततः चीन झुका, सेना पीछे हटाई,

पेइचिंग। लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर जारी गतिरोध के बीच पैंगॉन्ग झील से भारत और चीन के बीच सेनाएं पीछे लेने पर सहमति कायम करने के बाद अंततः चीन ने अपना अपनी सेना पीछे हटानी शुरू कर दी है। दोनों देशों के बीच इस बात को लेकर समझौता हुआ था कि चीन की पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) फिंगर 8 को छोड़ेगी। भारतीय सैनिक भी धान सिंह थापा पोस्ट पर फिंगर 2 और 3 के बीच पीछे जाएंगे। चीनी पीएलए पैंगॉन्ग झील के उत्तरी किनारे पर फिंगर 4 को आखिरकार खाली कर रही है। माना जा रहा है कि दोनों ओर से पूरी प्रक्रिया एक हफ्ते में कर ली जाएगी। यहां पिछले साल पीएलए ने कब्जा कर रखा था और भारत के साथ यथास्थिति को बदला था। चीनी सैनिक यहां बने शेल्टर और दूसरे ढांचों को हटा रहे हैं। भारत का कहना है कि फिंगर 8 तक हमारा क्षेत्र है जबकि चीन फिंगर 4 तक अपना दावा ठोंकता है। दोनों सेनाओं में इस क्षेत्र के बीच झड़पें हुई हैं। यह इलाका पैंगॉन्ग के उत्तरी तट से 8 किमी दूर है। दोनों सेनाओं के पीछे हटने के बाद पट्रोलिंग तब शुरू होगी जब दोनों पक्ष कूटनीतिक और सैन्य वार्ता के जरिए कोई समझौता करेंगे।

दरअसल, सेनाएं पीछे लेने के लिए की जा रही बातचीत के दौरान भारत ने साफ कह दिया था कि अगर फिंगर 5 खाली नहीं हुआ तो समझौता नहीं हो सकता। इस पर चीन ने कम-से-कम 30 सैनिकों को फिंगर 5 पर मौजूद रहने देने की इजाजत मांगी, लेकिन भारत फिर भी नहीं माना। आखिरकार, चीन जब फिंगर 8 से पूरी तरह वापस जाने को राजी हुआ तब भारत ने भी अपनी सेना फिंगर 3 तक वापस लाने की हामी। इसके बाद भी भारत ने यह शर्त रखी थी कि फिंगर 3 से 8 के बीच कोई भी देश पेट्रोलिंग नहीं करेगा। भारत ने चीन से यह बात मनवा ली कि अप्रैल 2020 के बाद पीएलए ने जो भी इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा किए, उन्हें नष्ट किया जाएगा। चीन ने फिंगर 8 और 4 के बीच निर्माण कार्य का सिलसिला तब शुरू किया जब भारत 1999 में पाकिस्तान के साथ करगिल युद्ध में उलझा हुआ था। 10 साल में चीन ने यहां ने भारी निर्माण कराया है।

वुहान में बहुत पहले फैल चुका था कोरोना... चीन का डाटा शेयर करने से इंकार : डब्ल्यूएचओ

जेनेवा। पूरी दुनिया को घातक वायरस कोरोना की चपेट में लाने वाले चीन ने इसकी उत्पत्ति की जांच के लिए वहां गए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) दल के साथ कोरोना मामलों का डाटा शोयर करने से इनकार कर दिया।

वहीं रिपोर्ट के मुताबिक भले ही चीन ने डब्ल्यूएचओ को अच्छे से जांच न करने दी हो लेकिन टीम को कुछ ऐसे सबूत मिले हैं जिससे पता चलता है कि चीन में दिसंबर, 2019 में ही कोरोना वायरस के व्यापक फैलाव के संकेत मिल चुके थे। डब्ल्यूएचओ के दल के प्रमुख जांचकर्ता पीटर बेन एम्बार्क ने एक इंटरव्यू में इसकी पुष्टि की है।

एम्बार्क ने कहा कि चीन में 2019 में ज्यादा बड़े पैमाने पर वायरस के फैलने के संकेत मिलने की बाच पता चली है। उन्होंने कहा कि दिसंबर में वुहान में पहले से ही वायरस का स्ट्रेन मौजूद थे।

बता दें कि डब्ल्यूएचओ ने सदस्य ऑस्ट्रेलिया के संक्रामक रोग विशेषज्ञ डोमिनिक ड्वायर ने शनिवार को बताया कि दल ने चीन के अधिकारियों से दिसंबर 2019 में वुहान शहर में शुरूआती चरण में कोरोना वायरस के मरीजों के 174 मामलों और अन्य का डाटा साझा करने अनुरोध किया था लेकिन उन्होंने केवल इसका सार उपलब्ध कराया। अल जजीरा की रिपोर्टर्स के अनुसार इस तरह के डाटा को ह्यलाइन लिस्टिंगह्ण के रूप में जाना जाता है।

इस विवरण में मरीजों से पूछे गए व्यक्तिगत प्रश्न, उनकी प्रतिक्रियाएं और उनकी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कैसे किया गया शामिल है।

उन्होंने कहा कि जांच के लिए शुरूआती डाटा मिलना जरूरी होता है लेकिन चीनी अधिकारियों ने उसे साझा करने से इनकार कर दिया।

प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस छोड़ पाक गृहमंत्री बोले- खराब हो रही थी, कर्मचारियों पर की टेस्टिंग

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सरकार के गृहमंत्री मंत्री शेख राशिद अहमद अपने विवादित बयानों को लेकर अक्सर आलोचना का शिकार होते रहते है। कुछ ऐसा ही शर्मनाक बयान एक बार फिर चर्चा में है। देश में वेतन बढ़ोतरी के लिए प्रदर्शन कर रहे कर्मचारियों पर आंसू गैस छोड़े जाने को लेकर शेख राशिद अहमद ने कहा है कि पिछले काफी समय से आंसू गैस के गोले रखे हुए थे, इसलिए इसकी टेस्टिंग जरूरी थी। रावलपिंडी में एक कार्यक्रम के दौरान अहमद ने कहा कि इस्लामाबाद पुलिस ने थोड़े से आंसू गैस के गोले दागे और यह जरूरी था क्योंकि आंसू गैस काफी लंबे समय से पड़ी थी और इसका इस्तेमाल नहीं किया गया था। उन्होंने यह भी दावा किया कि थोड़ी सी मात्रा में ही आंसू गैस का इस्तेमाल किया गया।

राशिद ने आगे कहा, ह्यअसल समस्या आंसू गैस के गोले दागना नहीं है बल्कि वेतन बढ़ाना है, जिससे इस महंगाई के दौर में सरकारी खजाने पर अरबों रुपये का बोझ बढ़ेगा।

बता दें कि पाकिस्तानी पुलिस ने 10 फरवरी को वेतन और पेंशन में बढ़ोतरी की मांग लेकर प्रदर्शन करने वाले सरकारी कर्मचारियों पर आंसू गैस के गोले दागे थे। हालांकि, पाकिस्तानी मंत्री के इस बयान की उनके अपने ही देश में काफी आलोचना की जा रही है और लोग उनको माफी मांगने के लिए कह रहे हैं। खबरों के मुताबिक, कम से कम दो हजार प्रदर्शनकारी संसद भवन की ओर बढ़ रहे थे जब पुलिस ने उनपर आंसू गैस के गोले छोड़े।

कोरोना के नए स्वरूप के मद्देजनर इटली में नहीं शुरू की जाएगी स्की

रोम। कोविड-19 के घातक वायरस से सबसे प्रभावित इटली में सरकार ने कोरोना वायरस के नए स्वरूप के कई मामले सामने आने के बाद फिलहाल स्की शुरू नहीं करने का फैसला किया। स्वास्थ्य मंत्री रॉबर्टो स्पीरैनजा ने स्की के पांच मार्च तक शुरू नहीं होने को लेकर एक अध्यादेश जारी किया है, जिससे स्की रिजॉर्ट के मालिकों और अन्य लोगों की व्यापार से जुड़ी उम्मीदें टूट गई हैं। इटली में सर्दी के मौसम में स्की पर्यटकों को आकर्षित करने का एक बड़ा माध्यम है। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब इटली में स्की व्यापार से जुड़े लोगों ने सभी तैयारियां कर ली थीं। मंत्रालय ने इस बात को रेखांकित किया कि इटली में हाल में संक्रमित पाए गए लोगों में से 17.8 प्रतिशत लोग ब्रिटेन में सामने आए वायरस के नए स्वरूप से संक्रमित हैं। बयान में कहा गया, 'वायरस के नए स्वरूप के फैलने के भय के कारण' फ्रांस और जर्मनी ने भी स्की को लेकर यही एहतियाती कदम उठाए हैं। इटली में वायरस से अब तक 93,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। विश्व में ब्रिटेन के बाद कोविड-19 से सबसे अधिक मौत के मामले इटली में ही सामने आए हैं। इटली के ह्यविंटर स्पोर्ट्स फेडरेशनह्ण के अध्यक्ष फलैविया रोडा ने अंतिम क्षणों में लिए इस फैसले की निंदा की है। उन्होंने कहा, ह्यस्की स्टेशन ने ढलान बनाने (स्की के लिए), कर्मचारियों की भर्ती करने, होटलों के साथ अनुबंध आदि करने में काफी पैसे लगाए थे। काफी पैसे निवेश किए गए थे और एक बार फिर हमें बड़ा खामियाजा उठाना पड़ा है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

बसंत पंचमी पर्व पर 136 बालिकाओं को गार्गी पुरस्कार से सम्मानित किया

» मदरलैंड, अमित भारद्वाज

रामगढ़। बसंत पंचमी के अवसर पर रामगढ़ कस्बे के बहादरपुर पुर रोड पर स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में बालिकाओं को गार्गी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । समारोह का आयोजन। सीबीओ कार्यालय रामगढ़ के तत्वधान में कार्य कार्यक्रम का आयोजन मंगलवार को किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रामगढ़ विधानसभा की विधायक साफिया खान रही वहीं विशिष्ट अतिथि बतौर एडवोकेट राजकुमार यादव ब्लॉक अध्यक्ष विमल चंद जैन जिला पार्षद लखमी चंद सैनी पूर्व सरपंच महेंद्र अलावड़ा सरपंच जुम्मा खान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य रमेश पालीवाल आदि रहे। इस अवसर पर 136 बालिकाओं को गार्गी पुरस्कार एवं 173 बालिकाओं को बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बसंत पंचमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

» मदरलैंड, नागपाल शर्मा

माचाडी कस्बे तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में हर वर्ष की भांति इस वर्ष माघ शुक्ल पंचमी को बसंत पंचमी का उत्सव घरों दुकानो तथा सभी विद्यालयों व कार्यालयों में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की वंदना के साथ पूजा अर्चना की जाती है । अबकी बार इस कोरोना काल के समाप्ति की ओर जाने के शुभ अवसर पर करीब एक वर्ष से शिक्षण संस्था बंद होने के कारण कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालयों में नहीं किया गया करीब एक वर्ष बाद विद्यालयो में विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ शिक्षण संस्था खुलने के बाद पहला त्यौहार बसंत पंचमी पर्व के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाया राजकीय सीनियर सेकंडरी विद्यालय माचाड़ी व आसपास के विद्यालयों में यह पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया । वहीं दूसरी ओर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय थौसड़ी में कक्षा छह से आठ के विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा बसंत ऋतु के आगमन

पर कविता और गीतों की प्रस्तुति दी ।विद्यालय के शिक्षक शिवजी राम चौधरी ने विद्यार्थियों को संकल्प लेकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा बच्चों को बताया कि प्रकृति में नवचेतना की शुरूआत के साथ सभी बच्चों को नई शुरूआत के साथ पढ़ाई के प्रति समर्पित होकर जागरूक होना चाहिए तथा बच्चों को इस पर्व के इतिहास के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा फागोत्सव होने के कारण इस त्यौहार को हल्दी व पीले चावलों के द्वारा बड़ी धूम-धाम के साथ पूजा जाता है।

संक्षिप्त समाचार

बसंत पंचमी उत्सव पर विद्यालय में किया वेदों के मंत्रों से हवन कार्यक्रम

मदरलैंड संवाददाता, तिजारा कस्बे के कस्तूरबा गांधी विद्यालय बसंत पंचमी के उत्सव पर विद्यालय में हवन किया गया। साथ ही छात्रावास केजीबीवी नीना शर्मा पीटीआई मिलकपुर द्वारा सौ छात्राओं को बेडशीट डोनेट की गई । प्राचार्य मीरा मुख्खीजा ने आभार जताया । छात्रों में भारी उत्साह देखने को मिला । गाइडिंग की छात्राओं ने विशेष सेवा दी ।हवन के कार्यक्रम में विद्यालय परिसर को स्वच्छ कार्य किया इस अवसर पर नीना शर्मा ,किरण सैनी , सुमित यादव , रोहतास विष्णु अलका मैडम आदि मौजूद रहे । को धन्यवाद जिन्होंने अपना अनुपम समय निकाला और छात्राओं के हित में बेडशीट गांधी विद्यालय में छात्रावास परिवार आपका दिल से धन्यवाद देता है और भविष्य में भी छात्रावास में आपके द्वारा इस प्रकार से सहयोग की अपेक्षा रखता है धन्यवाद

स्वयंसेवकों ने निकाली यातायात जागरूकता रैली

मदरलैंड संवाददाता, तिजारा। राजकीय महाविद्यालय तिजारा की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा महा के अंतर्गत मंगलवार को एक जागरूकता रैली निकाल कर संदेश दिया तथा लोगों को पंपलेट, बेनर बांटे गए । कार्यक्रम अधिकारी प्रो. रामजीत यादव ने बताया कि जागरूकता रैली को प्राचार्य प्रो श्याम नाथ मिश्र ने महाविद्यालय परिसर से अपने संबोधन के बाद हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया । रैली – मेहंदी वाला कुआं से होती हुई वापस कालेज परिसर पहुंची । रैली में प्रो सुभाष शास्त्री प्रो हरिशंकर गुप्ता प्रो अफसाना सहित स्वयंसेवक रामवीर गुर्जर सीमा सैनी रजनी तथा पूर्व स्वयंसेवक भानु प्रताप एवं कपिल सैनी आदि ने यातायात नियमों की जानकारी दी उन्होंने यात्रियों एवं ग्रामीणों से हेलमेट पहनने सीट बेल्ट बांधने स्पीड नियंत्रण आदि के विषय में जानकारी प्रदान की इसी सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत महाविद्यालय में निबंध ,वाद–विवाद, पोस्टर तथा नारा लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा ।

नेतवाडी के पास हुई लूट की घटना का हुआ खुलासा

आरोपी को गिरफ्तार कर लूटी हुई राशि 170000 की बरामद

» मदरलैंड, रेख चंद भारद्वाज

भरतपुर जुरहरा, रेखचन्द्र भारद्वाजः जुरहरा-कामां रोड पर सोमवार को ग्राम नेतवाड़ी के पास एक पिकअप चालक के साथ में कथित रूप से हुई 170000/ रुपये की लूट का खुलासा करते हुए लूट की मनगढ़ंत कहानी रचने के आरोप में पिकअप ड्राइवर को गिरफ्तार कर उसके घर से 170000/ रूपयों को बरामद कर लिया गया है। जानकारी के अनुसार जिला पुलिस अधीक्षक भरतपुर देवेन्द्र विश्नोई के द्वारा थाना जुरहरा इलाके के गांव नेतवाडी के पास सोमवार को हुई लूट की घटना को गम्भीरता से लेते हुये उक्त घटना का जल्द से जल्द खुलाशा करने हेतु निर्देश दिये गये थे। जिसके चलते सीओ कामां प्रदीपसिंह यादव के नेतृत्व में थानाधिकारी जुरहरा राजवीर सिंह मय जाप्ता द्वारा एक टीम गठित की गई और तेजी से कार्यवाही करते हुए लूट की झूँठी कहानी बनाने के आरोपी में आसिफ पुत्र सत्तार जाति मेव निवासी भोजन थाली कस्बा कामां को गिरफतार कर उसके कब्जे से राशी 170000/ रुपए को बरामद किया गया है।

पुलिस की गिरफ्त में आरोपी व बरामद राशि।

क्या था मामला- सोमवार 15 फरवरी 2021 को वैभव जैन उर्फ मोनू पुत्र मुकेश जैन जाति वैश्य निवासी दीवान मौहल्ला कस्बा कामां ने जुरहरा थाने में मामला दर्ज कराया कि सोमवार दिनांक 15 फरवरी 2021 को समय करीब 8:00 बजे उसकी पिकअप गाडी का ड्राईवर आसिप पुत्र सत्तार जाति मेव निवासी भोजनथाली के पास कस्बा कामां राशि 170000/रूपया नकद लेकर जुरहरा गुड लेने के लिए जा रहा था। तभी रास्ते में जुरहरा-कामां मार्ग पर गांव गुरीरा के पास दो अपाची बाइकों पर सवार चार अज्ञात बदमाशों ने बाइकों को गाडी के सामने लाकर गाडी को रूकवा लिया और ड्राईवर पर कट्टा तानकर उससे 170000/ रूपया व एक एंड्राइड मोबाइल फोन को भी छीन लिया। उक्त मामले में पुलिस द्वारा मामला दर्ज कर तुरन्त एक्शन लिया गया। पुलिस के द्वारा कार्यवाही करते हुए किया खुलासा- सीओ कामा प्रदीप यादव के नेतृत्व में थानाधिकारी थाना जुरहरा राजवीर सिंह मय जाप्ता के एक टीम गठित की गई। जिसके द्वारा कार्यवाही करते हुये तकनीकी एवं मनोवैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करते हुये आसिप पुत्र सत्तार जाति मेव निवासी भोजनथाली के पास कस्बा कामां से गहन पूछताछ की गई तो बार-बार अज्ञात नकाबपोश हथियार बन्द बदमाशों के द्वारा स्वयं के साथ लूट होना बताया गया। जिससे वारदात को खोलना काफी चुनौतिपूर्ण रहा। पूछताछ ये तथ्य सामने आया कि कुछ दिन पूर्व चालक आसिफ ने अपने मालिक वैभव जैन उर्फ मोनू से ड्राईविंग लाईसेन्स बनवाने के लिये रुपए मांगे थे। जिस पर वैभव जैन उर्फ मोनू ने रुपए देने से इन्कार कर दिया था इसी बात से नाराज होकर चालक आसिफ ने वैभव जैन उर्फ मोनू के साथ कोई बडी वारदात करना चाहता था। सोमवार को मोनू उर्फ वैभव जैन के द्वारा गुड खरीदने के लिये दिये गये 170000/ रूपयों को नेतवाडी के पास अज्ञात चार बदमाशों द्वारा लूटने की घटना बनाकर बदनियती पूर्वक अपने मालिक को बताई। जिस पर मालिक वैभव जैन उर्फ मोनू के द्वारा यह प्रकरण दर्ज कराया गया। आरोपी आसिप पुत्र सत्तार जाति मेव निवासी भोजनथाली के पास कस्बा कामां को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से उसके घर की आलमारी में रखे 170000/ रुपए बरामद किये जा चुके हैं।

चिकित्सक व स्टाफ ने कोविड-19 नियंत्रण में नजीर पेश की हैः मंत्री टीकाराम जूली

» मदरलैंड, देशबंधु जोशी

अलवर। श्रम, कारखाना एवं बॉयलर्स निरीक्षण विभाग (स्वतंत्र प्रभार), सहकारिता एवं इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग राज्य मंत्री टीकाराम जूली ने कहा कि जिले के चिकित्सक व स्टाफ ने कोविड- 19 नियंत्रण में नजीर पेश की है। श्रम राज्य मंत्री जूली ने मंगलवार को राजीव गॉधी सामान्य चिकित्सालय में 251 पीपीई किट भेंट किये तथा अस्पताल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कहा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में राज्य में कोरोना को नियंत्रित करने में चिकित्साकर्मियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि अलवर के सामान्य चिकित्सालय में लगातार बडी संख्या में रोगियों का उपचार किया जा रहा है। जो कि यहां की व्यवस्थाओं और चिकित्सकों के समर्पण से संभव हो रहा है। उन्होंने आयुष्मान भारत महात्मा गॉधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना की विण्डों का निरीक्षण कर लोगों को इस योजना से आमजन को लाभ की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने पीएमओ को निर्देशित किया कि योजना का लाभ सुगमतापूर्ण आमजन को मिले इसके लिए प्रभावी मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि पूर्व में भी सामान्य चिकित्सालय को बडी संख्या में पीपीई किट, एम्बूलेन्स एवं अन्य उपकरण भेट किये है और भविष्य में भी आवश्यकता के अनुरूप सहयोग किया जायेगा। इस दौरान पीएमओ डॉ. सुनील चैहान, डॉ. राजीव गुप्ता, डॉ. मोहनलाल सिंधि, नरेन्द्र मीणा, राकेश बैरवा, महेन्द्र सैनी, कमलेश सैनी, सोनू गोपालिया व साजिद खान सहित प्रबुद्व व्यक्ति उपस्थित रहे।

बीएड कॉलेज में बसंत पंचमी महोत्सव हर्ष के साथ मनाया गया

» मदरलैंड संवाददाता

रैणी। कस्बे की सरस्वती बीएड कालेज मे मंगलवार को बसंत पंचती महोत्सव मुख्य अतिथि श्रीकान्त सैदावत के आतिथ्य मे मनाया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता कालेज चेयरमेन मदन मीणा परबैणी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की तस्वीर के आगे दीप प्रज्वलित व पुष्प चढाकर किया कार्यक्रम मे भाषण व निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमे विजेता छात्र छात्राओ को पुरस्कार वितरण किये गये । इस अवसर पर कालेज स्टाफ व छात्र छत्राऐ मौजूद रही।

बसन्त पंचमी पर्व कच्ची बस्ती की निर्धन कन्याओं के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया

सरस्वती देवकृष्ण गौड़ ने बसन्त पंचमी को किया कन्यापूजन

» मदरलैंड संवाददाता

जयपुर। विप्र परशुराम शक्ति की प्रदेश महामंत्री पूजा पाठक द्वारा बसन्त पंचमी के दिन कन्या पूजन करके फल उपहार वितरित किये गए। अपने आवास पर कच्ची बस्ती की बालिकाओं को आमंत्रित करके पाठक ने सभी कन्याओं के साथ सरस्वती वंदना की ततपश्चात उनको कुंकुम टीका करके फल बिस्किट वितरित किये। पाठक ने बताया कि प्रधान अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य सरस्वती देवकृष्ण गौड़ के निदेर्शानुसार बसन्त पंचमी का पर्व कच्ची बस्ती की निर्धन कन्याओं के साथ बड़े धूमधाम से मनाया।

18 फरवरी को होगी किसान महापंचायत

रायसिंहनगर में जुटेंगे किसान आंदोलन के दिग्गज

» मदरलैंड, रामस्वरूप नायक

श्रीगंगानगर । तीनों कानूनों के विरोध में व टरढ खरीद गारण्टी कानून का निर्माण करने की को लेकर किसान आंदोलन को तेज करने के लिए पूरे देश मे किसान महापंचायतों का दौर शुरू हुआ है उसी क्रम में जिले में कभी किसान आंदोलन का केंद्र रहे रायसिंहनगर में 18 फरवरी को सयुंक्त किसान मोर्चा द्वारा किसान महापंचायत होगी, 18 फरवरी को नई धानमंडी में हजारों किसानों को एकजुट करने का आह्वान लेकर किसान टीमों ने जिले भर में प्रचार प्रसार शुरू किया है किसान महापंचायत में किसान आंदोलन के दिग्गज बलवीर सिंह राजेवाल, डॉ दर्शनपाल सिंह, योगेंद्र यादव, जोगेंद्र सिंह उग्राहा, कॉमरेड अमराराम, राजाराम मील, तारासिंह सिधु मुख्य वक्ता के तौर शिरकत करेंगे किसान सभा की केंद्रीय किसान कौंसिल के सदस्य ने केंद्र सरकार की नीतियों को जनविरोधी करार देते कहा कि भाजपा देश बेचने की नीतियों को लागू कर रही है वहीं किसान आज देश बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है किसान की अगुवाई में सभी वर्गों को एकजुट होना बेहद जरूरी है श्योपत मेघवाल ने 18 फरवरी को रायसिंहनगर में घोषित किसान महापंचायत को ऐतिहासिक बनाने का आह्वान करते हुए आज गांव 34, 39, 40, 43, 44 पीएस, बरूवाला, 19 ढळऊ समेजा सहित दर्जन भर गांवों में में किसान नेता जगतार सिंह बराड़ ,बलविंद्र गिल,दलीप सहारण,हर्ष खोसा, हरभजनसिंह, मंगलसिंह रंधावा ,मनीष कांटीवाल ने जनसम्पर्क किया।

बैंड बाजों के साथ निकाली कलश यात्रा

भागवत सप्ताह का हुआ शुभारंभ

» मदरलैंड संवाददाता

भरतपुर जुरहरा, रेखचन्द्र भारद्वाजः कस्बे के प्राचीन श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर से कस्बे में मंगलवार को बैंड बाजों की धार्मिक धुनों पर निकाली गई कलश यात्रा के साथ भागवत सप्ताह का शुभारंभ किया गया। जिसमें जुरहरा कस्बा निवासी दीदी राजकिशोरी शास्त्री कथा वाचन करेंगी। कलश यात्रा कस्बे के रामतलाई मंदिर, पुरानी पुलिस चौकी, ठाकुर मोहल्ला, बस स्टैंड, पुरानी सब्जी मंडी, कलाकार मोहल्ला, गंगा मंदिर होते हुए पंचमुखी हनुमान मंदिर पहुंची जहां पर विधि-विधान के साथ श्रीमद्

कलश यात्रा निकालते हुए।

भागवत सप्ताह का शुभारंभ किया गया। श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर के महंत कन्हैया लाल पाराशर ने बताया कि मंगलवार से मंदिर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें राजकिशोरी शास्त्री के द्वारा कथा का वाचन किया जाएगा। कथा का 24 फरवरी को महाप्रसाद भंडारे के साथ समापन होगा।

दो वीर सैनिको ने एक गरीब अंधी मां की बेटी की शादी करा मिसाल कायम किया

» मदरलैंड, अशोक भारद्वाज

कठूमर। देश की सरहद पर ड्यूटी दे रहे कठूमर क्षेत्र के दो वीर सैनिको ने मंगलवार को अपने गांव टिटपुरी मे रह रही एक गरीब अंधी मां की बेटी की शादी करा मिसाल कायम की है। सैनिको की इस पहल को सराहा जा रहा है। गांव टिटपुरी निवासी मेघश्याम बलाई और निजाम खान दोनों जवान सेना जो आयुध क्षेत्र ख&' में सेवारत हैं। इन सेना के दोनों जवानो ने सोशल मीडिया पर एक कन्यादान नाम से ग्रुप बनाकर व्हाट्सएप और फेसबुक के जरिए एक गरीब परिवार की अंधी मां की कन्या की शादी का सारा व्यवस्था कराई। गांव टिटपुरी में लड़की के पिता रामजीलाल कोली 20साल पहले व एक साल पूर्व भाई रमेश कोली जो कि सूरत (गुजरात) कमाने के लिए गया ।उसकी अज्ञात कारणों से मौत हो गई। घर में केवल एक जवान बेटी व अंधी मां के सहारे के रूप में सेना के दोनों जवान व गांव के ही वीरेंद्र सिंह बलाई, दीपक अध्यापक, तारा फौजी, उमाशंकर आयुर्वेदिक कंपाउंडर ,बाबूसिंह चौहान,पायलेट खान ,राकेश क्ळइढ, नटवर फ्ढ, पुस्पेंद्र सिंह फ्ढ, जोगेंद्र फ्ढ, अकबर उफ्ढत्रः गजेन्द्र चौहान, मिलन शर्मा, मोहन शर्मा, जशवंत फ्ढत्रः अनील यादव फ्ढ, जगदीश बलाई, राधेश्याम मीणा,तोफिक, रफी मोहम्मद, आदि के सहयोग से 75000 हजार रूपए देकर आर्थिक सहयोग किया ।तथा लड़की को आवश्यक घरेलू सामान व बारातियों के लिए खाने से लेकर सारे इंतजाम किए गये ।

विवाहिता के साथ दुष्कर्म का मामला दर्ज

» मदरलैंड, महावीर प्रसाद

तिजारा थाना अंतर्गत ग्राम की एक विवाहिता महिला ने अपने गांव के एक युवक द्वारा दुष्कर्म करने का मामला दर्ज कराया । रिपोर्ट के अनुसार पुलिस ने बताया तिजारा थाना क्षेत्र के एक गांव की विवाहिता महिला ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि 15 फरवरी की दोपहर 1:30 बजे , अपनी 12 व 9 वर्षीय दो भतीजियों के साथ अपने खेत में पशुओं के लिए चारा लेने के लिए गई थी । जैसे ही पीड़िता पशु के लिए चारे के लिए कासनी काट रही थी । उसी वक्त पहले से ही सरसों के खेत मे घात लगाये बैठे उसी गांव के साकिर पुत्र सुबेदीन मेव ने पीडिता को पीछे पकड़कर , दोनों नाबालिग भतीजीयो को जान से मारने की धमकी देकर , पीड़िता के साथ जबरन दुष्कर्म कर डाला और जाते वक्त घटना की किसी को बताने पर उसके पति को जाने से मारने की धमकी देकर भाग गया । पीडित के घर पहुचे पर परिवार को आपबीती बात बताई जिसपर अपने परिजनों के साथ आकर साकिर के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज करवाया पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी ।

देवरिया विद्यालय मे मां सरस्वती की दुग्ध अभिषेक एवं हवन कर मनाई बसंत पंचमी

» मदरलैंड, बद्रीलाल माली

गुरला। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवरिया रायपुर के वरिष्ठ अध्यापक श्री दिनेश चंद्र व्यास ने बताया कि स्थानीय विद्यालय में बसंत पंचमी पर विद्यालय में मां सरस्वती की मूर्ति की पूजा अर्चना की गई श्री दिनेश चंद्र व्यास ने वैदिक मंत्रोचार के साथ सरस्वती माता का दुग्ध अभिषेक वह हवन कार्य करवाया गया इस कार्यक्रम में प्रधानाचार्य नवरत्न मल सेन अध्यापक श्याम लाल सेन ,प्रमिला

त्रिपाठी ,,भेरू लाल जीनगर, महेंद्र सिंह यादव वह छात्र छात्रा और विद्यालय परिवार ने भाग लिया विगत 3 वर्षों से मां सरस्वती की श्री दिनेश चंद्र व्यास पूजा अर्चना का कार्य करवा रहे हैं।

केवी-1, आनन्द स्वरूप आर्य में हुआ हवन, पोस्टर, पतंग प्रतियोगिता

» राजकुमार

रुड़की। आनन्द स्वरुप आर्य सरस्वती विद्या मन्दिर रुड़की में बसंत पंचमी उत्सव का आयोजन किया गया। अतिथियों, शिक्षकों ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन किया। विद्यालय परिसर में आयोजित सामूहिक यज्ञ में समस्त शिक्षक एवं छात्रों ने सहभाग किया।संस्कृताचार्य विवेक पाण्डेय एवं योगेश शास्त्री ने पूर्ण विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस दौरान विद्यालय में पोस्टर और पतंग मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें छात्रों ने अपनी रचनात्मकता एवं रंगों की सूझ-बूझ से शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय उपाध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद कुलश्रेष्ठ ने कहा कि वीणा और वाणी की देवी मां सरस्वती की आराधना का दिन बसंत पंचमी का विशेष महत्व है। ब्रह्मा की सृष्टि में मन का अभाव था इस कारण देवी सरस्वती का आविर्भाव हुआ। ब्रह्मा के कमंडल से उत्पन्न देवी सरस्वती की कृपा दृष्टि सृष्टि को मधुर एवं सरस बनाती है। मां सरस्वती विद्या धन देने वाली देवी है। यह एक मात्र ऐसा धन है जिसे जितना व्यय किया जाय उतनी वृद्धि होती है। जिला प्रचारक नरेन्द्र ने कहा कि बसंत

पंचमी सकारात्मक ऊर्जा का पर्व है। बसंत का सीधा अर्थ है सौन्दर्य, अर्थात शब्द, वाणी, प्रकृति, प्रवृत्ति का सौंदर्य। मां सरस्वती साहित्य, विद्या, बुद्धि एवं विवेक की देवी है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को मां सरस्वती की आराधना करनी चाहिए। विद्यालय प्रबन्धक मनमोहन शर्मा ने कहा कि मां सरस्वती की कृपा से ही विद्या मन्दिर के छात्र अपने ज्ञान और विद्या के आधार पर नित नये आयाम रच रहे है। प्रधानाचार्य अमरदीप सिंह ने कहा कि बसंत पंचमी स्वयं सिद्व मुहूर्त है, अर्थात यह दिन शुभ मंगल कार्य करने के लिए सर्वोत्तम है। हमें आज के दिन अपने भीतर के ज्ञान बुद्धि और विवेक का समुचित उपयोग करते हुए भविष्य के बारे में बेहतर निर्णय लेकर मां सरस्वती का आशीर्वाद लेना चाहिए।इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य मोहन सिंह मटियानी, उप प्रधानाचार्य (प्रशासन) कलीराम भट्ट, आशुतोष शर्मा, शमा अग्रवाल, जसवीर सिंह पुण्डीर समेत समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी मौजुद रहे। उधर केंद्रीय विद्यालय न.-1 रूड़की में वसंत पंचमी पर मां सरस्वती की पूजा हुई। इसमे मुख्य अतिथि के रूप में सुरेश जोशी, प्राचार्य वीके त्यागी, उप प्राचार्या अंजू सिंह, समस्त शिक्षक व विद्यालय के पूर्व छात्रों ने भाग लिया। पूर्व छात्र बृजेश त्यागी, नीलम सिंह, पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त पर्यावरण संरक्षण समिति महासचिव प्रभाकर पन्त, अश्विनी भरद्वाज, प्रकाश चन्द्र पन्त, योगेन्द्र रघुवंशी, युगल किशोर पन्त, आकाश चैधरी, डॉ गोविन्द सिंह देवडी, कैप्टेन महेश चन्द्र रानाकोटी, प्रो स्वर्णलता मिश्रा, जानकी पाठक, विजय चैहान, ऋषि चैरसिया व शिक्षकों का योगदान रहा। मुख्य अतिथि सुरेश जोशी ने कहा कि विद्यालय कार्यक्रम से जुड़ना उन्हे हमेशा से उत्साहित करता है। विद्यालय में मां सरस्वती की मूर्ति स्थापना से छात्रों, शिक्षकों को अपनी संस्कृति को जानने वं उससे जुड़ने का अवसर मिलेगा। मां सरस्वती कला, संगीत एवं ज्ञान की देवी है, वह बच्चों को उत्साहित एवं प्रेरित करती रहेगी। प्राचार्य वीके त्यागी ने कहा कि बहुत दिनों से माँ सरस्वती की मूर्ति स्थापना का प्रयास चल रहा था। आज वो बहुप्रतीक्षित कार्य पूर्ण हुआ है। ज्ञान एवं शिक्षा की देवी होने के कारण बच्चों का भावनात्मक जुडाव मां सरस्वती से होता है। मां बच्चों के अंतर्मन को प्रकाशित कर समाज में ज्ञान का प्रकाश भरेंगी। उप प्राचार्या अंजू सिंह ने कहा कि वसंत पंचमी पर मां सरस्वती की विद्यालय में स्थापना सकारात्मक उर्जा का संचार करेगा और छात्रों के अंतर्मन को आलोकित करेगा।

संक्षिप्त समाचार

सड़क दुर्घटनाओं में दो युवकों की मौत

मदरलैंड संवाददाता, मंगलौर। राष्ट्रीय राजमार्ग पर अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दो पीआरडी घायल हुए हैं जिन्हें उपचार हेतु हायर सेंटर रेफर किया गया है। मृतकों में एक की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस के अनुसार 3 अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत हुई है। कोतवाली के निकट एक अज्ञात युवक को तेज रफ्तार वाहन ने अपनी चपेट में ले लिया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। युवक के ऊपर से कई गाड़ियां एक साथ गुजर गई। जिससे उसका शरीर सड़क से चिपक कर रह गया। पुलिस ने मौके पर पहुंच शव को किसी तरह शव उठाकर मोर्चरी भेजा। कपड़ों आदि के आधार पर मृतक की शिनाख्त कराए जाने का प्रयास चल रहा है। दूसरी दुर्घटना में ग्राम लिब्बरहेडी के निकट बाइक सवार 21 वर्षीय युवक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की शिनाख्त मोहित निवासी ग्राम पुरबालियान थाना मंसूरपुर, मुजफ्फरनगर के रूप में हुई है। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना भिजवा दी है। तीसरी दुर्घटना देवबंद तिराहे पर हुई जहां बाईक पर सवार पीआरडी के दो जवानों को अज्ञात वाहन ने अपनी चपेट में ले लिया। इसमें दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को उपचार हेतु सिविल अस्पताल रुड़की में भर्ती कराया गया जहां से दोनों को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। घायल पीआरडी जवानों के नाम सेवाराम पुत्र रामपाल मुनेश पुत्र बलजीत निवासी खुड्डा हालीपुर थाना झबरेड़ा बताए गए हैं। कोतवाली में दिवस अधिकारी उप निरीक्षक रोशनी रावत ने बताया कि किसी भी मामले में अभी तक पुलिस को तहरीर नहीं मिली है। तहरीर आने पर आगे की कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

फिर पकड़ी कोरोना ने रफ्तार, 15 मिले पॉजिटीव

मदरलैंड संवाददाता, हरिद्वार। शहर व देहात में कोरोना मरीजों के मिलने का सिलसिला थमने का नाम नही ले रहा है। मंगलवार को जिलेभर में 15 लोगों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। इनमें रुड़की में 5 व बहादराबाद में 4 कोरोना संक्रमित मरीज पाए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग की टीम कोरोना मरीजों से संपर्क कर उन्हें आइसोलेट करने की तैयारी कर रही है। मौसम में बदलाव के बावजूद कोरोना मरीजो की संख्या में भी लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। स्वास्थ्य विभाग पहले ही कोरोना मरीजो की संख्या में बढ़ोतरी की आशंका जता चुका था। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक मंगलवार को जिले भर में 15 लोगों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। इनमें रुड़की में सबसे अधिक 5 लोग कोरोना संक्रमित पाए गए हैं इसके अलावा, बहादराबाद में 4 जबकि भगवानपुर व लक्सर, खानपुर, नारसन में कोई कोरोना का नया केस सामने नही आया है। वही अन्य जिले का भी 6 कोरोना मरीज मिले है। स्वास्थ्य विभाग की टीम उन्हें आइसोलेट करने की तैयारी कर रही है। जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ एसके झा ने बताया कि जिलेभर में 15 लोगों के रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। फिलहाल कोविड सेंटरो में 4 मरीज भर्ती हैं, जबकि 6 मरीज होम आइसोलेट है। बताया कि जिले भर में फिलहाल एक्टिव केस 9 है जबकि अब तक जिले भर में 13298 कोरोना मरीज मिल चुके हैं। उन्होंने बताया कि जिले भर में 3609 कोरोना सेम्पल लिए गए हैं। बताया कि संबंधित अधिकारियों को कोरोना मरीजो से संपर्क कर उन्हें आइसोलेट करने के निर्देश दिए गए हैं।

पशु क्रूरता में दो पर मुकदमा, गौमांस बेचता एक गिरफ्तार

मदरलैंड संवाददाता, मंगलौर। छोटे वाहन में गोवंश लेकर जा रहे दो लोगों को विश्व हिंदू परिषद कार्यकताओं ने पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। सोमवार देर शाम एक छोटे वाहन में गोवंश लेकर दो लोग जा रहे थे जैसे ही वह ग्राम लिब्बरहेडी के निकट पहुंचे तो विश्व हिंदू परिषद नेता शिवप्रसाद त्यागी ने उन्हें रोक लिया। गौमांस मिलने पर कार्यकताओं ने पुलिस को सूचना दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपितों को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने गौ वंश को मुक्त कराया। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वह दूध व्यापारी हैं। लगातार वह गोवंश लेकर आते-जाते हैं। बताया कि दोनों गोवंश गर्भवती है। दूध के लिए ही उन्होने गोवंश को खरीदा है लेकिन पुलिस ने वाहन छोटा होने के कारण विश्व हिंदू परिषद नेता शिवप्रसाद त्यागी की तहरीर पर दोनों के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया। पुलिस ने गिरफ्तारी के बाद आरोपी अफजल उर्फ छोटा व दिलदार निवासी ज्वालापुर हरिद्वार को जमानत दे दी।

चेकपोस्टों पर हुई कोरोना जांच, 2 मिले पॉजिटीव

» मदरलैंड संवाददाता

भगवानपुर। बसंत पंचमी के स्नान को लेकर पुलिस ओर स्वास्थ्य विभाग अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहे है, तो वहीं स्नान के लिए श्रद्धालुओं को थर्मल स्किनिंग ओर कोविड टेस्ट के बाद ही उत्तराखंड में प्रवेश होने की अनुमति मिल रही है। पुलिस प्रशासन पहले से ही स्नान को लेकर हाई अलर्ट पर है। बसंत पंचमी के स्नान को देखते हुए कई दिन पहले से तैयारीया शुरू कर दी गई थी। काली नदी, मंडावर व नारसन बोर्डर पर पीआरडी, पुलिस व स्वास्थ्य विभाग द्वारा लोगों के

कोरोना टेस्ट किये जा रहे है। नारसन बॉर्डर पर मंगलवार को 2500 कोरोना के टेस्टस्टिंग हुए हैं। जिसमें एक भी पॉजिटिव नहीं निकला। वहीं 12000 के लगभग थर्मल स्कैनिंग हुई है। उधर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भगवानपुर की ओर से महाकुंभ के बसंत पंचमी स्नान के लिए काली नदी व मंडावर चेक पोस्ट पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से करोना रेंडम सेंपलिंग के लिए तीन-तीन टीमें लगाई गई। इसमें काली नदी तथा मंडावर चेक पोस्ट पर 300 एंटीजन रेंडम सेंपलिंग हुई तथा दो कोविड-19 पॉजिटिव मरीज पाए गए एवं 298 की रिपोर्ट नेगेटिव आई। पॉजिटिव मरीजों को चेक पोस्ट पर रोककर क्वारंटाइन कर दिया गया एवं 2000 से अधिक लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग की गई। टीम में मंडावर चेक पोस्ट पर शाम को डॉ अनुराधा, जगदीश नेगी, मोनिका सैनी सुषमा उपस्थित थी।

खूब उड़ी पतंग, विधायक, मेयर ने काटी एक-दूसरी के पतंगे

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। उड़ी, उड़ी रे पतंग... वसंत पंचमी पर शहर से लेकर देहात तक पतंगबाजी का अनोखा नजारा बना रहा। पूरे क्षेत्र में जमकर पतंगबाजी हुई, इससे पूरा आसमान रंग बिरंगी पतंगों से पटा रहा। विधायक, मेयर, अन्य भाजपा नेताओं, शिक्षकों व संगठनो ने जमकर पतंग की डोर खींची और एक-दूसरे की पतंगे काटी।युवा डीजे की धुन पर नाचे तो पतंग लूटने की भी होड़ रही। लो गई ओ, कट गई पतंग की आवाज दिनभर गलियारों गूंजती रही। बसंत पंचमी के मौके पर सुबह से बच्चे और युवा अपने घरों की छतों पर पतंगबाजी करने के लिए चढ़ गए थे। इसमें जनप्रतिनिधि, राजनीतिक दल, शिक्षक व सामाजिक संगठन भी पीछे नहीं रहे। सिविल लाइंस में जादूगर रोड़ स्थित अपने आवास पर विधायक प्रदीप बत्रा ने परिवार व समर्थकों के साथ पतंग की डोर खींची तो पुरानी तहसील में मेयर गौरव गोयल ने अपने परिवार व समर्थकों के साथ मिलकर पतंगबाजी की। जादूगर रोड़ पर ही पूर्व कैंट बोर्ड सभासद संजय अग्रवाल व उनके बेटे राघव अग्रवाल ने परिवार के साथ विधायक प्रदीप बत्रा की ओर से दी गई अपनी फोटो लगी पतंगो को आसमान में उड़ाया। बनिया बाजार में कैंट बोर्ड शक्ति केंद्र के भाजपा संयोजक प्रदीप अग्रवाल व सुनेहरा में पिरान कलियर महिला भाजपा मंडलाध्यक्ष ने अपने पति वीपी सिंह के साथ मिलकर पतंग उड़ाई। नेहरू स्टेड़ियम में भी पतंगबाजी को लेकर दिनभर युवाओ की भीड़ जुटी रही। सुबह से पतंगों के साथ पेंच लड़ाते दिखे। कई युवाओं ने तो अपने घरों की छतों पर डीजे लगा रखा है। जो पतंगों की कटने के साथ ही बजाया जा रहा है। कई युवा ढोल की थाप पर पतंगबाजी करने को लेकर काफी उत्साहित है। पतंग या डोर की कमी होती तो तुरंत दुकान की ओर दौड़ते रहे। शहर से लेकर गांव तक रंग-बिरंगे पतंगों की खरीदारी दिन भर होती रही। आसमानं में रंग बिरंगी पतंगों के साथ ही रुड़की में शहर विधायक प्रदीप बत्रा के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चित्र वाली पतंगे आसमानों में उड़ती दिखाई दी। पूर्व सभासद संजय अग्रवाल ने कहा कि विधायक प्रदीप बत्रा की ओर से इस बार बसंत पंचमी पर तमाम कार्यकताओं, समर्थकों को पतंगे वितरित की गई थी। जिसे उन्होने परिवार के साथ मिलकर आसमान में उड़ाया।

एसोसिएशन ने की छात्रवृत्ति आवेदन को समय दिए जाने की मांग

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। अनुसूचित जाति जनजाति शिक्षक एसोसिएशन उत्तराखंड के प्रांतीय महामंत्री जितेंद्र सिंह बुटोइया ने समाज कल्याण मंत्री यशपाल आर्य को उनके यमुना कॉलोनी आवास पर ज्ञापन सौंपते हुए मांग की है कि प्रदेश में समाज कल्याण छात्रवृत्ति के आवेदन के लिए अभिभावकों को अतिरिक्त अवसर प्रदान किया जाए। उन्होंने मंत्री के संज्ञान में यह भी लाया कि 8 फरवरी से विद्यालय खुलने के पश्चात कई अभिभावक आवेदन से संबंधित प्रमाण पत्र लेकर विद्यालय पहुंच रहे हैं। किंतु छात्रवृत्ति का राष्ट्रीय पोर्टल 20 जनवरी को बंद कर दिया गया है। सरकार की अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने वाली योजना का लाभ उन्हें नहीं मिल पाएगा। इसलिए जो अभी तक आवेदन नहीं कर पाए हैं कोरोना महामारी के कारण उनको एक अतिरिक्त अवसर दिया जाना नितांत आवश्यक है। बता दें कि विद्यालय शिक्षा के अंतर्गत कक्षा 1 से लेकर कक्षा 12 तक अध्ययन करने वाले अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति पिछड़ी जाति दिव्यांग एवं आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को समाज कल्याण विभाग द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें इस वर्ष कई अभिभावक समय से प्रमाणपत्र न बनने के कारण अभी तक छात्रवृत्ति हेतु ऑनलाइन आवेदन नहीं कर पाए हैं। एससी एसटी शिक्षक एसोसिएशन द्वारा इससे पूर्व भी मुख्यमंत्री विद्यालय शिक्षा मंत्री मुख्य सचिव सचिव व निदेशक समाज कल्याण से भी अतिरिक्त अवसर दिए जाने का अनुरोध किया जा चुका है।

बसंत पंचमी पर हरिद्वार में हर, हर गंगे के जयकारों से गूंजे घाट

» मदरलैंड संवाददाता

हरिद्वार। बसंत पंचमी पर धर्मनगरी में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। गंगा घाटों पर श्रद्धालुओं ने आस्था की डूबकी लगा पुण्य कमाया। धर्मनगरी में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी रही। शाम तक श्रद्धालु गंगा घाटों पर आस्था की डूबकी लगाते रहे। इसे लेकर दिनभर प्रशासन भी चैकस बना रहा। कोरोना नियमों के बीच श्रद्धालुओं ने बसंत पंचमी पर महाकुंभ का पहला स्नान किया। इस दौरान सभी घाट हर-हर महादेव और गंगा मैया के जयकार-ों से गुंजायमान बने रहे। महाकुंभ में मकर संक्रांति स्नान के बाद बसंत पंचमी का दूसरा बड़ा स्नान पर्व भी रहा। गंगा पूजन और स्नान के बाद श्रद्धालु मौन रखकर मौनी अमावस्या के व्रत का पालन करते हैं। मान्यता है कि इस दिन व्रत का पालन करने से मुनि पद और मोक्ष की प्राप्ति होती है। स्नान के लिए सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ धर्मनगरी में जुटना शुरू हो गई थी। भीड़ के बीच हरकी पैड़ी, ब्रह्मकुंड समेत सभी गंगा घाट खचाखच बने रहे। गंगा घाटों पर श्रद्धालुओं ने आस्था की डूबकी लगा पुण्य कमाया। उधर कोरोना संक्रमण की आशंका के बीच केंद्र सरकार की गाइड लाइन के अनुसार राज्य सरकार के निर्देशों के अनुपालन में जिला प्रशासन की ओर से भी कड़ी व्यवस्थाएं रखी गई। श्रद्धालुओं को शारीरिक दूरी के साथ-साथ मास्क के प्रयोग के लिए कहा जाता रहा। प्रशासन ने बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को कोविड-19 संक्रमण की आरट-ीपीसीआर जांच कराकर आने की भी सलाह दी थी। इसके मद्देनजर रेंडम चेकिंग भी की जाती रही। सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त किए गए हैं। हर की पैड़ी समेत सभी गंगा घाट गंगा मैया के जयकारों से गूंज रहे हैं और श्रद्धालु हर हर महादेव जय गंगा मैया के जयकारों के बीच आस्था की डुबकी लगाकर दान कर पुण्य कमा रहे हैं। हालांकि पिछले वर्षो के मुकाबले इस बार मौनी अमावस्या का स्नान काफी कम रहा है। जिला-धिकारी सी. रविशंकर ने बताया कि बसंत पंचमी को देखते हुए पूरे जिले में कोरोना संक्रमण के मद्देनजर तमाम इंतजाम किए गए थे। चेक पोस्टो पर ही श्रद्धालुओं की कोरोना रिपोर्ट चेक की गई, उनके रैंडम टेस्ट किए गए। जिलाधिकारी के मुताबिक धर्मनगरी में चारों तरफ सुरक्षा व अन्य इंतजाम बेहतर रहे। जिस कारण महाकुंभ का दूसरा स्नान भी सकुशल सम्पन्न रहा है।

बीएसएम, राजकीय महाविद्यालय में मना बसंत पंचमी पर्व

» मदरलैंड संवाददाता

मंगलौर। बसंत पंचमी पर बीएसएम इंटर कालेज का स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान मंत्रोच्चार के साथ हवन हुआ। पूर्व राज्य मंत्री एवं विद्यालय प्रबधंक मनोहरलाल शर्मा व वरिष्ठ अधिवक्ता ममतेश शर्मा ने यज्ञ में आहूति डाल छात्रों के सवार्गीण विकास की कामना की। पूर्व राज्यमंत्री मनोहरलाल शर्मा ने कहा कि मां सरस्वती ज्ञान की देवी है। बीएसएम के समस्त छात्रों के लिए यह खुशी और गौरव की बात है कि आज के शुभ दिन पर विद्यालय का स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य अरूण कुमार सिंह, कैप्टन अजय कौशिक, प्रवक्ता डा. अनिल शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य वासुदेव पंत, डा. अभय ढौंडियाल, अखिलेश मोहन, डीएन पांडेय, अमित कपिल, प्रमोद कुमार, संजीव शर्मा, कमल मिश्रा, मनोज कुमार, जितेश कुमार, विशाल शर्मा, संगीता गौड़ आदि मौजुद रहे। उधर राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मां सरस्वती की वंदना से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों, छात्राओं ने प्रतिभाग किया। छात्राओं ने कॉलेज परिसर को अपने हाथों से सजा कर बसंत पंचमी पर्व को धूमधाम से मनाए जाने की तैयारी भी की। मां सरस्वती की वंदना कर सुख-समृद्धि की प्रार्थना की गई। कार्यक्रमों में छात्राओं ने अपनी प्रतिभा दिखाई। संगीत विभाग के प्रभारी डॉ शिखा ममगई संगीत विभाग में मां सरस्वती की वंदना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्राचार्य डॉ तीर्थ प्रकाशित ने कहा कि भारत एक गुलदस्ते के समान है जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल खिलते हैं। देश में सभी त्योहार मिलजुलकर मनाए जाते हैं इसी प्रकार से ऋतुराज बसंत पंचमी का त्यौहार भी सभी मिलजुल कर मनाते हैं। कहा कि प्रदेश में आई त्रासदी में मारे गए लोगों की आत्मा को शांति मिले तथा जो लोग लापता हैं वह सकुशल अपने घरों को पहुंचे। सभी को ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि कोरोना जैसी भयंकर बीमारी फिर से देश दुनिया में नए आए जिससे पूरी व्यवस्था चैपट हो कर रह गई है। उन्होंने छात्राओं द्वारा कॉलेज की साज-सज्जा का भी निरीक्षण किया। छात्राओं का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि सभी छात्र छात्राओं को ऐसे अवसरों पर बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए इससे उनकी प्रतिभा में निखार आता है। इस अवसर पर डॉ प्रज्ञा राजवंशी, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ रचना वत्स, डॉ अनुराग, डॉ दीपा शर्मा, शर्मिष्ठा, सीमा रतूड़ी, गीता जोशी, फैजान अली, जगपाल, सपना, शबीना, मनीषा, सदफनूर, निकिता पाल, निशू, सानिया आदि मौजूद रहे।

सरकार से जारी एसओपी के अनुसार ही होगें शाही स्नान: डीजीपी

» मदरलैंड संवाददाता

हरिद्वार। पुलिस महानिदेशक अशोक ने मंगलवार को हरिद्वार पहुंच महाकुंभ की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने मेला व जिला पुलिस अधिकारियों के साथ हरकी पैड़ी व स्थाई,-अस्थाई पुलों, पार्किंग और थानों का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए। वसंत पंचमी स्नान पर्व पर हरिद्वार पहुंचे डीजीपी अशोक कुमार ने सबसे पहले हरकी पैड़ी पहुंचकर स्नान ड्यूटी को देखा। इसके बाद लालजी वाला में बन रही कुंभ पुलिस लाइन और फिर चंडी टापू से गौरीशंकर को जोड़ने वाले अस्थायी पुल के माध्यम से गौरीशंकर पहुंच कर निमार्णाधीन गौरीशंकर थाने का निरीक्षण किया। गौरीशंकर से बैरागी को जोड़ने वाले मोटेरेबल पुल के माध्यम से बैरागी पहुंच कर अर्द्धसैनिक बलों के लिए बन रहे अस्थाई आवासों को भी डीजीपी ने देखा। कनखल श्मशान घाट के सामने, श्रीयंत्र के सामने और मातृ सदन से मिलने वाले स्थायी पुल का निरीक्षण किया। जगजीतपुर पुलिस चैकी के समीप अस्थाई पार्किंग स्थल, रानीपुर झाल पर बन रहे स्थायी पुल, भेल मध्य मार्ग में सीआइएसएफ बटालियन के पास बने स्थाई पुल व धीरवाली पार्किंग का भ्रमण भी किया। टिबड़ी रेलवे अंडर-पास और ऋषिकुल बस स्टैंड पर भी डीजीपी पहुंचे। निरीक्षण के दौरान आइजी कुंभ संजय गुंज्याल ने डीजीपी को पुलिस व्यवस्थाओं और स्थाई, अस्थाई निर्माण कार्यों के बारे में विस्तार से अवगत कराया। मीडिया से बातचीत में डीजीपी ने कहा कि सरकार की ओर से जारी एसओपी के अनुसार ही शाही स्नान संपन्न कराए जाएंगे। इस दौरान कुंभ मेला एसएसपी जन्मजेय प्रभाकर खंडूरी, एसएसपी हरिद्वार सेंथिल अवूदई कृष्णराज एस, एसपी सिटी कमलेश उपाध्याय, अपर पुलिस अधीक्षक कुंभ सुरजीत पंवार मौजूद रहे।

बसंत पंचमी पर शहर में जगह-जगह हुए भंडारे

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। बसंत पंचमी पर विधायक प्रदीप बत्रा, प्रांतीय व्यापार प्रतिनिधिमंडल रुड़की नगराध्यक्ष अरविंद कश्यप व महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष रश्मि चैधरी की ओर से नागरिकों को भोजन वितरण किया गया। इस दौरान विधायक प्रदीप बत्रा ने कहा कि बसंत पंचमी जीवन में रंग भरने का त्यौहार है। इस दिन सबको मिलकर आपसी भाईचारे और एक-दूसरे के सहयोग का संकल्प लेना चाहिए। लक्ष्मी नारायण मंदिर पर भोजन वितरण के दौरान अरविंद कश्यप ने कहा कि बसंत पंचमी पर दूसरों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य है। सभी को एक-दूसरे की मदद को आगे आना

चाहिए। बसंत पंचमी बसंत ऋतु का भी प्रतीक है। उधर भाजपा महिला मोर्चा की ओर से भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। महिलाओं ने पतंग बांटकर त्योहार का महत्व भी बताया। सिविल लाइंस शिव मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सावित्री मंगला ने कहा कि बसंत पर्व हमारे जीवन में नई ऊर्जा और उमंग लेकर आता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पर्व के बारे में हम अपनी आने वाली पीढ़ी को जानकारी दें। सबकी जिम्मेदारी है कि वह अपनी संस्कृति और परंपरा को जीवित रखे। इस अवसर पर शालिनी अग्रवाल, पूनम शर्मा, पुष्पा, रेखा, रीना, सुमन, रीता, अनीता, संगीता, आरुषि, हेमलता चैधरी, प्रीत, सरिता अग्रवाल आदि मौजूद रहीं।

20 हजार की नकली करेंसी के साथ सिंचाई कर्मी गिरफ्तार

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सिविल लाइन कोतवाली पुलिस ने 20 हजार रुपए की नकली करेंसी के साथ सिंचाई कर्मी को गिरफ्तार किया है। आरोपित की निशानदेही पर नकली नोट बनाने में इस्तेमाल होने वाला प्रिंटर और स्केनर बरामद किया है। आरोपित बहादराबाद स्थित सिंचाई विभाग में नौकरी करता है। सिविल लाइन कोतवाली प्रभारी राजेश शाह ने बताया कि पुलिस नगर निगम पुल के पास चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान सूचना मिली कि सोलानी पार्क के पास एक व्यक्ति खड़ा हुआ है जिसके पास भारी मात्रा में नकली नोट है। सूचना मिलते ही पुलिस ने बताए गए स्थान की घेराबंदी कर ली। पुलिस को देख आरोपित ने भागने का प्रयास किया लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपित को दबोच लिया। पुलिस के मुताबिक तलाशी में आरोपित की जेब से 200 और 500 के नकली नोट बरामद हुए हैं। पुलिस के मुताबिक आरोपित ने अपना नाम मुख्तियार पुत्र गुलाम साबिर निवासी सलेमपुर महदूद थाना रानीपुर, हरिद्वार बताया है। इंस्पेक्टर राजेश शाह ने बताया कि आरोपित बहादराबाद स्थित सिंचाई विभाग में नौकरी करता है। 4500 रुपये के नकली नोटों को वह बहादराबाद स्थित बाजार में और बरामद नकली नोटों को रुड़की के बाजार में चलाने के लिए आया था। पुलिस के मुताबिक आरोपित की निशानदेही पर नकली नोट बनाने में इस्तेमाल होने वाला स्केनर और प्रिंटर भी बरामद किया है। कोतवाल राजेश ने बताया कि आरोपित नोट छाप कर बाजारों में चलाने का काम कर रहा है। सिविल लाइन कोतवाल राजेश शाह ने बताया कि पकड़े गए आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसका चालान कर दिया है। आरोपित को पकड़ने वाली टीम में उप निरीक्षक अंकुर शर्मा, करुणा रंगोली, कांस्टेबल भीम दत्त, विपिन आदि शामिल रहे।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

संक्षिप्त समाचार

7 पैसों की मजबूती के साथ रुपया 72.68 पर बंद

मुंबई। करोबारी सप्ताह के प्रथम दिन रुपए में मजबूती देखने को मिली। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया सोमवार को 7 पैसे की मजबूती के साथ 72.68 पर बंद हुआ। मुद्रा बाजार में सोमवार को शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले रुपया 72.61 पर खुला तथा कारोबार के अंत में पिछले दिन के मुकाबले 7 पैसे की मजबूती के साथ 72.68 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं पिछले दिन यानी शुक्रवार को रुपया 12 पैसों की मजबूती के साथ 72.75 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था।

शुरूआती कारोबार में रुपया मजबूत हुआ

मुंबई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मंगलवार को भारतीय रुपया मजबूत हुआ हुआ है। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजारों की अच्छी शुरूआत और अमेरिकी डॉलर में गिरावट से शुरूआती कारोबार में रुपया पांच पैसे बढ़कर 72.63 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। वहीं अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 72.64 प्रति डॉलर पर खुला और कुछ देर ही यह 72.63 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। यह पिछले दिन के स्तर के मुकाबले पांच पैसे की बढ़त है। इससे पहले सोमवार को रुपया 72.68 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के बास्केट में डॉलर का सूचकांक 0.22 फीसदी गिरकर 90.27 पर आ गया।

ओपीपीआई ने एस श्रीधर को अध्यक्ष नियुक्त किया

नई दिल्ली। उद्योग संगठन भारतीय फार्मास्युटिकल उत्पादक संगठन (ओपीपीआई) ने सोमवार को कहा कि उसने एस श्रीधर को अपना अगला अध्यक्ष चुना है। उनकी नियुक्ति 15 फरवरी 2021 से अगले दो साल के लिये प्रभावी होगी। ओपीपीआई ने एक बयान में कहा कि वह बोहरिंगर इंगेलहेम इंडिया के पूर्व प्रबंध निदेशक शरद त्यागी से पद संभाल रहे हैं। श्रीधर, फाइजर के प्रबंध निदेशक हैं और भारत में कंपनी के वाणिज्यिक कारोबार की कमान संभाल रहे हैं। ओपीपीआई ने कहा कि वह पिछले छह वर्षों से ओपीपीआई की कार्यकारी समिति के सदस्य हैं और इसके वित्त व कराधान कार्य समूह की अध्यक्षता भी करते हैं। श्रीधर ने कहा, ह्यह्यमैं मरीजों, उद्योग और देश के लिए एक बदलाव लाने को उत्सुक हूं, क्योंकि ओपीपीआई सरकार की नीतियों पर काम करती है, जो रोगी समर्थक हैं, नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं और उद्योग के विकास के लिए सकारात्मक वातावरण प्रदान करते हैं।

25 फरवरी को 10,000 करोड़ रुपए के बॉन्ड खरीदेगा आरबीआई

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ने 15 फरवरी को बताया कि वह 25 फरवरी को स्पेशल ओपन मार्केट ऑपरेशंस (ओएमओ) के जरिए एकसाथ बॉन्ड खरीदेगा और बेचेगा। इस दिन एक तरफ आरबीआई सरकारी बॉन्ड खरीदेगा और दूसरी तरफ रिटेल इनवेस्टर्स को बेचेगा। आरबीआई ने कहा, ₹मौजूदा लिक्विडिटी और फाइनेंशियल कंडीशन को देखते हुए फैसला किया है कि वह 25 फरवरी को ओएमओ के जरिए 10,000 करोड़ रुपए के बॉन्ड खरीदेगा और बेचेगा।₹ मार्केट में लिक्विडिटी को सपोर्ट करने के लिए आरबीआई बॉन्ड खरीदने वाला है। इससे पहले आरबीआई ने 10 फरवरी को भी 20,000 करोड़ रुपए का बॉन्ड खरीदा था। आरबीआई सरकार को कर्ज देने का भी काम करता है। ये बॉन्ड खरीदकर आरबीआई सरकार को फंड मुहैया करा रहा है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने वादा किया था कि वह सरकार को 12 लाख करोड़ रुपए का फंड आसानी से मुहैया करा सकते हैं।

वी के उपभोक्ता अब बिना किसी अतिरिक्त लागत के रात भर पा सकते हैं अनलिमिटेड डेटा के फायदे

» मदरलैंड संवाददाता

हिसार। रात में इंटरनेट और ओटीटी की मांग तेजी से बढ़ रही है, खासतौर पर प्रत्यास्थ समय में और घर से काम करने वाले लोग इंटरनेट पर ज्यादा समय बिता रहे हैं। इसी मांग को पूरा करने के लिए वी ने अनलिमिटेड हाई स्पीड नाईट-टाईम डेटा की घोषणा की है। यह सुविधा वी के सभी प्रीपेड उपभोक्ताओं के लिए रु 249 और इससे अधिक से सभी अनलिमिटेड रीचार्ज पर बिना किसी अतिरिक्त लागत के रात 12 बजे से सुबह 6 बजे तक उपलब्ध होगी। मोबाइल इंटरनेट महामारी के इस दौर में ऑक्सीजन की तरह काम कर रहा है, ऐसे में यह बोनस अनलिमिटेड हाई-स्पीड नाईट-टाईम डेटा वी के उपभोक्ताओं के जीवन को कहीं अधिक आसान बना देगा। वी के प्रीपेड उपभोक्ता अब अनलिमिटेड मनोरंजन का लुत्फ उठा सकते हैं, लम्बे समय तक अपने प्रियजनों के साथ वीडियो कॉल्स कर सकते हैं और डेली डेटा की सीमा की चिंता किए बिना डाउनलोड्स कर सकते हैं। वी के उपभोक्ता रु 249 या इससे अधिक के अनलिमिटेड डेली डेटा कोटा पैक पर वीकेन्ड डेटा रोलओवर का लुत्फ उठा सकते हैं, इससे न केवल उपभोक्ता देर रात इंटरनेट सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं बल्कि सप्ताह के दौरान डेली कोटा से बचे हुए डेटा को कैरी फॉरवर्ड भी कर सकते हैं और सप्ताहान्त पर इसका उपयोग कर सकते हैं। उपभोक्ताओं खासतौर पर युवाओं में रात के समय डेटा की मांग बढ़ रही है। उद्योग जगत में पहली बार इस तरह के प्रस्ताव के साथ वी अनलिमिटेड हाई स्पीड नाईट-टाईम डेटा और वीकेंड रोलओवर के दोहरे फायदे लेकर आया है, अपने अनलिमिटेड उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं प्रदान करना वी का उद्देश्य है। यह नई पहल नेटवर्क के बेहतर फायदे देकर नए उपयोगकताओं को आकर्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। अनलिमिटेड हाई स्पीड नाईट-टाईम डेटा का उपयोग कर वी के उपभोक्ता विभिन्न ओटीटी ऐप्लीकेशन्स से कई प्रकार के कंटेट डाउनलोड कर सकते हैं, ब्राउजिंग कर सकते हैं, साथ ही वन-स्टॉप एंटरटेनमेन्ट गंतव्य-वी मुवीज और टीवी ऐप पर लाईव टीवी शोज, नई फिल्मों और ओरिजिनल कंटेंट का लुत्फ उठा सकते हैं। 10 मिलियन से अधिक वी सब्सक्राइबरों के द्वारा डाउनलोड किया गया यह ऐप 13 भाषाओं में 9500 से अधिक फिल्में, 400 से अधिक लाईव टीवी चैनल, ओरिजिनल वेब सीरीज की व्यापक श्रृंखला तथा सभी वर्गों के इंटरनेशनल टीवी शो पेश करता है। हाल ही में व्यासं द्वारा जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक वी का गीगानेट अक्टूबर से दिसम्बर 20 के दौरान देश का सबसे तेज 4 जी नेटवर्क रहा है।

विमान किराये में बढ़ोतरीः
केंद्रीय मंत्री पुरी बोले, मई 2020 से एटीएफ की कीमतें तीन गुना बढ़ीं

नयी दिल्ली। नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सोमवार को कहा कि 25 मई को घरेलू उड़ानों के फिर से शुरू होने के बाद से विमानन टरबाइन ईंधन की कीमत में तीन गुना की वृद्धि हुई है। उन्होंने घरेलू हवाई किराए की निचली और ऊपरी सीमा को 10 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने के केंद्र सरकार के फैसले के बारे में जानकारी देते हुए यह बात कही। पिछले साल मई में घरेलू उड़ानों को फिर से शुरू करने की घोषणा करते हुए, विमानन मंत्रालय ने उड़ान अवधि के आधार पर वगीकृत सात बैंडों के माध्यम से हवाई किराये की सीमाएं तय की थीं। पहले बैंड में ऐसी उड़ानें होती हैं जो 40 मिनट से कम की होती हैं। बृहस्पतिवार को, इस बैंड के लिए, निचली सीमा 2,000 रुपये से बढ़कार 2,200 रुपये कर दी गई और ऊपरी सीमा 6,000 रुपये से बढ़ाकर 7,800 रुपये कर दी गई।

पुरी ने सोमवार को ट्विटर पर कहा, जब घरेलू उड़ानों को लॉकडाउन के बाद फिर से शुरू किया गया, तो जनता के विश्वास को बढ़ाने और जनता को कोई असुविधा न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए सिर्फ इकोनॉमी यात्रा पर ये किराया बैंड लागू किए गए थे।ह्व उन्होंने कहा, ह्लतब से, कच्चे तेल की कीमत 30 डॉलर से बढ़कर 60 डॉलर प्रति बैरल हो गई है। विमानन टरबाइन ईंधन की कीमतें 17,000 रुपये प्रति किलोलीटर से बढ़कर 51,000 रुपये प्रति किलोलीटर हो गई हैं। हालांकि, निचले बैंड पर किराये का स्तर 10 प्रतिशत बढ़ाया गया है और ऊपरी बैंड पर 30 प्रतिशत बढ़ाया गया है।

अधिक आपूर्ति के कारण, अधिकांश यात्राएं निचले बैंड में होती हैं।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ीं

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय बाजार में तेजी के साथ ही भारत के घरेलू बाजार में भी ईंधन की कीमतें फिर बढ़ गयी हैं। लगातार 8वें दिन पेट्रोल-डीजल की कीमतें ऊपर आयी हैं। देश की राजधानी दिल्ली में पेट्रोल 30 पैसे और डीजल 35 पैसे महंगा हुआ है। इससे पहले सोमवार को भी पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़े थे। दिल्ली में पेट्रोल 89.29 रुपये प्रति लीटर और डीजल 79.70 रुपये प्रति लीटर है। ये दाम अब तक के सबसे अधिक स्तर पर हैं। देश भर में पेट्रोल के दाम 26 पैसे से 31 पैसे तक बढ़ गए हैं और डीजल 3 पैसे से लेकर 38 पैसे तक बढ़े हैं।

मुम्बई में पेट्रोल के दाम करीब 96 रुपये प्रति लीटर पहुंच रहे हैं। यह मेट्रो शहर में तेल की सबसे अधिक कीमतें है जबकि डीजल के दाम 38 पैसे बढ़कर 86.72 रुपये प्रति लीटर हो गए हैं। वहीं दिल्ली में 1 जनवरी से अब तक पेट्रोल 5.48 रुपये महंगा हो गया है। ऐसे ही डीजल 5.83 रुपये महंगा हो गया है।

दिल्ली में पेट्रोल कल के भाव में 88.99 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 89.29 यानी 30 पैसे की बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह डीजल कल के भाव 79.35 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 79.70 रुपये पहुंच गये है। इसने करीब 35 पैसे की छलांग लगायी है। कोलकाता में पेट्रोल के दाम 29 पैसे बढ़कर 90.54 रुपये प्रति लीटर और डीजल के दाम 35 पैसे बढ़कर 83.29 रुपये प्रति लीटर हो गए हैं। चेन्नई में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में बढ़त आई है। पेट्रोल के दाम 26 पैसे बढ़कर 91.45 रुपये प्रति लीटर और डीजल के दाम 33 पैसे बढ़कर 84.77 रुपये प्रति लीटर पहुंच गए। इसी प्रकार बेंगलुरु में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में बढ़त आई है।

पीएफ पर इस साल की ब्याज दरों में की जा सकती है और कटौती

नई दिल्ली। ईपीएफओ के 6 करोड़ से भी अधिक सदस्यों के लिए आने वाले दिनों में एक बुरी खबर आ सकती है। दरअसल, सरकार की तरफ से इस साल की ब्याज दरों में और कटौती की जा सकती है। अधिकारियों का कहना है कि इसकी वजह कोरोना वायरस की वजह से हुई बहुत अधिक निकासी और योगदान में आई कमी है। पिछले कुछ सालों में ब्याज दर में आई गिरावट की वजह से पीएफ से होने वाली कमाई पर भी बड़ा असर पड़ा है।

उल्लेखनीय है कि ईपीएफओ अपना अधिकतर हिस्सा सरकारी सिक्योरिटीज में निवेश करता है। पिछले सालों में सरकार ने वित्त वर्ष 2020 के लिए 8.5 फीसदी ब्याज देना का फैसला किया था, जो सात सालों में सबसे कम था। वहीं वित्त वर्ष 2019 में ये दर 8.65 फीसदी थी।

मौजूदा वित्त वर्ष में ईपीएफ पर दिए जाने वाले ब्याज की दर पर ईपीएफओ सेंट्रल बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की 228वीं मीटिंग में फैसला लिया जा सकता है। यह मीटिंग 4 मार्च को हो सकती है। एक सरकारी अधिकारी ने बताया कि फाइनेंस इन्वेस्टमेंट एंड ऑडिट कमेटी (एफआईएसी) इस बात का आकलन कर रही है कि ईपीएफओ से अधिक निकासी होने और जमा में कमी आने का 2020-21 की कमाई पर कितना असर होगा।

उम्मीद की जा रही है कि एफआईएसी की एक मीटिंग हो सकती है, जो सीबीटी की मीटिंग से पहले होगी और इसी मीटिंग में लिए फैसले के आधार पर पीएफ पर ब्याज दर तय होगी। प्रॉविडेंट फंड (पीएफ) को लेकर एक बुरी खबर बजट 2021 में भी आई थी, जिसमें पीएफ में योगदान पर टैक्स छूट को लेकर नियम बदला था। नए नियम में हाई इनकम ब्रैकेट वाले लोगों को पीएफ पर मिलने वाले ब्याज की छूट को कम किया गया है। अगर किसी शख्स का पीएफ में सालाना योगदान 2.5 लाख रुपए से ज्यादा होगा तो 2.5 लाख रुपए से ज्यादा वाली रकम पर उसे जो भी ब्याज मिलेगा। उस पर टैक्स देना होगा।

उल्लेखनीय है कि शर्मा जी ने वित्त वर्ष 2021-22 में 3 लाख रुपए पीएफ में योगदान दिया। ऐसे में ढाई लाख की रकम पर उन्हें जो ब्याज मिलेगा, वह तो टैक्स फ्री होगा, लेकिन 50 हजार पर मिलने वाले ब्याज की रकम पर उन्हें टैक्स देना होगा। अब शर्मा जी अगले वित्त वर्ष यानी 2022-23 में 4 लाख पीएफ में डाल देते हैं तो उन्हें डेढ़ लाख रुपए की रकम पर मिलने वाले ब्याज पर तो टैक्स देना ही होगा, इसके साथ ही पिछले साल जो 50 हजार रुपए ढाई लाख की लिमिट से ऊपर डाले गए थे, उन पर भी तो 2022-23 में ब्याज मिलेगा। इस ब्याज पर भी उन्हें टैक्स देना होगा। वित्त मंत्री ने साफ किया है कि इस नई व्यवस्था को लागू करने के लिए सरकार एक नया सिस्टम लेकर आएगी।

तेजी के साथ खुला शेयर बाजार

मुंबई। मुम्बई शेयर बाजार मंगलवार को तेजी के साथ खुला है। सप्ताह के दूसरे कारोबारी दिन बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का प्रमुख इंडेक्स सेंसेक्स 308.17 अंक करीब 0.59 फीसदी की तेजी के साथ ही 52462.30 अंक के स्तर पर खुला। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 56.57 अंक तकरीबन 0.37 फीसदी की तेजी के साथ 15,371.45 के स्तर पर खुला। शुरूआती कारोबार के दौरान अधिकांश शेयरों में तेजी आई वहीं कुछ शेयर ही नीचे आये।

शेयर बाजार में बजट के बाद से ही तेजी का माहौल है। बाजार में आयी बढ़त से ही सेंसेक्स की शीर्ष दस में से सात कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 1,40,430.45 करोड़ रुपए बढ़ गया। इनमें से सबसे अधिक लाभ रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। रिलायंस इंडस्ट्रीज के अलावा टीसीएस, इंफोसिस, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक और बजाज फाइनेंस के शेयर ऊपर आये जबकि एचडीएफसी बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर और कोटक महिंद्रा के शेयरों में गिरावट आई।

दूसरी ओर बड़ी कंपनियों के शेयरों की बात करें, तो शुरूआती कारोबार के दौरान एचडीएफसी बैंक, एसबीआई, ग्रासिम, टेक महिंद्रा और एक्सिस बैंक के शेयर लाभ के साथ ही हरे निशान पर खुले। दूसरी ओर अडाणी पोर्ट्स, टाटा मोटर्स, बजाज फिनसर्व, जेएसडब्ल्यू स्टील और टाटा स्टील के शेयर नुकसान के साथ ही लाल निशान पर खुले। इससे पहले सोमवार को भी बाजार रिकार्ड बनाकर बंद हुआ था।

सरकारी रेलवे कंपनी रेलटेल का आईपीओ आज खुलने जा रहा है। प्राइस बैंड 93 से 94 रुपए के बीच है, 18 फरवरी को ये इश्यू बंद होगा। नेस्ले इंडिया, आर सिस्टम्स इंटरनेशनल, शेफलर इंडिया, एडवेन्ट कम्प्युटर सर्विस और जीएम पॉलीप्लास्ट के परिणाम जारी होने वाले हैं।

सोने में हल्का, चांदी में तेज उछाल

नई दिल्ली। भारतीय बाजारों में सोमवार को सोने में मामूली जबकि चांदी में तेज उछाल आया है। दिल्ली सराफा बाजार में सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन सोने की कीमतों में केवल 19 रुपये प्रति 10 ग्राम की तेजी आई। राजधानी दिल्ली में 99.9 ग्राम शुद्धता वाले सोने का नया भाव अब 46,826 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया है।

वहीं, चांदी के दाम में 646 रुपये प्रति किग्रा का उछाल आया। अब इसके दाम 646 रुपये बढ़कर 69,072 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गए हैं। पिछले कारोबारी सत्र के दौरान दिल्ली सराफा बाजार में सोना 46,845 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था जबकि वहीं, चांदी 68,426 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोने के भाव में कमी दर्ज की गई जबकि चांदी के दाम पहले की ही तरह रहे। सराफा बाजार में सोमवार को सोने के भाव में 19 रुपये प्रति 10 ग्राम की मामूली कमी आई। इससे पहले कारोबारी सत्र में सोने का भाव 46,845 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

चालू वित्त वर्ष में आईटी क्षेत्र की आमदनी में 2.3 फीसदी वृद्धि का अनुमानः नासकॉम

मुंबई। कोरोनाकाल में सबसे अप्रभावित रहे भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) उद्योग की आमदनी वित्त वर्ष 2020-21 में 2.3 प्रतिशत बढ़कर 194 अरब डॉलर होने का अनुमान है। इसी तरह आईटी निर्यात के 1.9 प्रतिशत बढ़कर 150 अरब डॉलर तक रहने का अनुमान है। उद्योग संगठन नासकॉम ने सोमवार को यह कहा।

नासकॉम ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी से प्रभावित इस वित्त वर्ष में आईटी उद्योग शुद्ध आधार पर नौकरियां देने वाला रहा है। इस दौरान उद्योग में 1.38 लाख नई नौकरियों के साथ रोजगार प्राप्त लोगों की कुल संख्या के बढ़कर 44.7 लाख पर पहुंच गई है।

नासकॉम की अध्यक्ष देवयानी घोष ने कहा, ह्यहम इस संकट से अधिक लचीला और अधिक प्रासंगिक बन कर उभरे हैं। हम कोविड के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने वाले रहे हैं।ह्व उन्होंने कहा कि उद्योग महामारी से प्रेरित संकट के दौर से उबरने वाला पहला क्षेत्र रहा। कोविड के कारण दुनिया भर के सकल घरेलू उत्पाद में 3.5 प्रतिशत की गिरावट के बीच प्रौद्योगिकी पर खर्च में 2020 के दौरान 3.2 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद आईटी क्षेत्र अपने को संभाल ले गया।

संगठन ने कहा कि यदि सूचीबद्ध कंपनियों के द्वारा दिये आंकड़ों के हिसाब से देखें तो 15 अरब डॉलर से अधिक सौदे उन्हें मिले हैं। परिदृश्य को लेकर 100 में से 71 मुख्य कार्यकारियों का मानना है कि 2021 में आईटी पर खर्च बेहतर रहने वाला है।

एशियाई और अमेरिकी बाजारों में उछाल

टोक्यो। एशियाई और अमेरिकी बाजारों में उछाल आया है। एशिया में निकेई और कोस्पी की तेज शुरूआत हुई है। चीन और ताइवान के बाजार हालांकि बंद हैं। चीन, और ताइवान के बाजार आज बंद हैं। जापान में रिफाइनरी प्रोडक्शन में 20 फीसदी की गिरावट आई है। चीन और ताइवान के आलावा दूसरे एशियाई बाजारों पर नजर डालें तो।

एसजीएक्स निफ्टी की चाल सपाट नजर आ रही है। वहीं, निक्केई करीब 1.4 फीसदी तेजी के साथ 30,508 के आसपास दिख रहा है। दूसरी ओर अमेरिका में डाओ फ्यूचर्स में सवा दो सौ अंकों की तेजी दर्ज की गयी है।

ब्रेंट 63 डॉलर के ऊपर कारोबार कर रहा है। वहीं प्राकृतिक गैस में पांच फीसदी का उछाल आया है। अमेरिका में स्ट्रेट टाइम्स में भी 0.17 फीसदी की बढ़त आई है। वहीं, कोस्पी में 0.40 फीसदी की बढ़त दिख रही है जबकि हैंगसेंग 1.2 फीसदी की बढ़त के साथ 30,530 के स्तर पर दिख रहा है।

बिटकॉइन 49,500 डॉलर के स्तर से ऊपर निकला
नया रेकॉर्ड बनाने को बेकरार है बिटकॉइन

नई दिल्ली। क्रिप्टोकरंसी बिटकॉइन पहली बार 49,500 डॉलर के स्तर से भी ऊपर निकल गया है। बिटकॉइन ने कल एक नया रेकॉर्ड बना दिया है। दुनिया की सबसे बड़ी क्रिप्टोकरंसी बिटकॉइन लंदन में सुबह 10.20 बजे के करीब 49,202 डॉलर की थी, जो शाम को 5 बजे तक 49,593 डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। देखा जाए तो सिर्फ इस साल में ही बिटकॉइन ने 70 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की है। वही बिटकॉइन की विरोधी क्रिप्टोकरंसी एथेर ने भी शनिवार को रेकॉर्ड स्तर छू लिया। अगर सिर्फ इस साल की ही बात करें तो इसमें लगभग 150 फीसदी की तेजी दर्ज की गई है। हाल ही में दुनिया के सबसे रईस शख्स एलन मस्क की कंपनी टेस्ला की तरफ से बिटकॉइन में 1.5 अरब डॉलर के निवेश के बाद इसकी कीमत में और तेजी आई है। देखा जाए तो अभी एक बिटकॉइन भारतीय करंसी में 36 लाख रुपये के करीब है। बिटकॉइन एक तरह की क्रिप्टोकरंसी है। ह्यक्रिप्टोह्व का मतलब होता है ह्यगुप्तह्व। यह एक डिजिटल करंसी है, जो क्रिप्टोग्राफी के नियमों के आधार पर काम करती है। इसकी सबसे खास बात ये है डिजिटल होने की वजह से आप इसे छू नहीं सकते। बिटकॉइन की शुरूआत 2009 में हुई थी। बिटकॉइन की कीमत लगातार बढ़ रही है। गुरुवार सुबह के हिसाब से इसकी कीमत करीब 8.31 लाख को क्रॉस कर चुकी है। यह एक तरह की डिजिटल करंसी है। इसकी शुरूआत एलियस सतोशी नाम के शख्स ने की थी। बिटकॉइन विशेषज्ञ हितेश मालवीय बताते हैं कि बिटकॉइन वर्चुअल कॉइन हैं, जो अपनी कीमत बनाने और बढ़ाने के लिए डिजाइन किए गए हैं। इस तरह पैसों के लेन-देन के लिए आपकों बैंकों तक जाने की जरूरत नहीं है। अगर किसी भी व्यक्ति के पास बिटकॉइन है, तो इसकी कीमत और वैल्यू ठीक उसी तरह मानी जाएगी जैसे ईटीएफ में कारोबार करते समय सोने की कीमत मानी जाती है। इस बिटकॉइन से आप ऑनलाइन शॉपिंग भी कर सकते हैं और इसे निवेश के रूप में भी संभाल कर रख सकते हैं। बता दें कि ये बिटकॉइन एक पर्सनल ई-वॉलेट से दूसरे पर्सनल ई-वॉलेट में ट्रांसफर भी किए जाते हैं। ये ई-वॉलेट्स आपका निजी डेटाबेस होते हैं, जिसे आप अपने कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन, टैबलेट या किसी ई-क्लाउड पर स्टोर करते हैं।

कराकेन के जरिए बिटकॉइन ट्रेडिंग की जा सकती है। इसके लिए पहले अपना अकाउंट बनाना होता है। इसके बाद ईमेल के जरिए अकाउंट कन्फर्म करना होता है। अकाउंट वेरिफाइ होने के बाद आप ट्रेडिंग मेथड सिलेक्ट कर सकते हैं। ट्रेडिंग के लिए चार्ट मौजूद होता है जिसमें बिटकॉइन की कीमत की हिस्ट्री होती है।

सैमसंग गैलेक्सी एफ62 स्मार्टफोन लांच
फोन में एक्सीनॉस 9825 प्रोसेसर उपलब्ध

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई कंपनी सैमसंग ने अपने स्मार्टफोन गैलेक्सी एफ62 से पर्दा उठा दिया। इस स्र्माटफोन में 7000 एमएएच बैटरी और सैमसंग एक्सीनॉस 9825 प्रोसेसर दिया गया है। इस फोन के 6 जीबी रैम व 128 जीबी स्टोरेज वेरियंट को 23,999 रुपये जबकि 8 जीबी रैम व 128 जीबी स्टोरेज वेरियंट को 25,999 रुपये में लॉन्च किया गया है।सैमसंग गैलेक्सी एफ62 के साथ कंपनी #फुलऑन स्पीडी हैशटैग का इस्तेमाल कर रही है। फोन की बिक्री सैमसंग ऑनलाइन स्टोर, फ्लिपकार्ट, रिलायंस डिजिटल और चुनिंदा जियो स्टोर पर 22 फरवरी दोपहर 12 बजे से खरीदने के लिए उपलब्ध होगा। गैलेक्सी एफ62 को आईसीआईसीआई बैंक डेबिट व क्रेडिट कार्ड के जरिए खरीदने पर 2,500 रुपये इंस्टेंट डिस्काउंट मिलेगा। फोन को फ्लिपकार्ट से फ्लिपकार्ट स्मार्ट अपग्रेड प्रोग्राम के तहत भी खरीदा जा सकेगा। गैलेक्सी एफ62 को लेजर ग्रीन, लेजर ब्लू और लेजर ग्रे कलर में उपलब्ध कराया गया है। सैमसंग गैलेक्सी एफ62 में 6.7 इंच सुपर एमोलेड प्लस इनफिनिटी-ओ डिस्प्ले दी गई है। फोन में कंपनी का एक्सीनॉस 9825 प्रोसेसर मौजूद है। हैंडसेट को 6 जीबी रैम व 8 जीबी रैम के साथ 128 जीबी इनबिल्ट स्टोरेज में उपलब्ध कराया गया है। स्टोरेज को माइक्रोएसडी कार्ड के जरिए 1टीबी तक बढ़ाया जा सकता है। फोन में फिंगरप्रिंट सेंसर मौजूद है। हैंडसेट ऐंड्रॉयड 11 बेस्ड वन यूआई 3.1 के साथ आता है। स्मार्टफोन में 4जी वोल्टे, ब्लूटूथ 5.0, वाई-फाई, एनएफसी, जीपीएस, जीपीआरएस, माइक्रो-यूएसबी जैसे कनेक्टिविटी फीचर्स दिए गए हैं। फोन में एक्सीलेरोमीटर, जायरो सेंसर, जियोमैग्नेटिक सेंसर, लाइट सेंसर और प्रॉक्सिमिटी सेंसर भी दिए गए हैं। फोन का वजन 218 ग्राम और डाइमेंशन 76.3 ७ 163.9 ७ 9.5 मिलीमीटर है।गैलेक्सी एफ62 में क्वाड रियर कैमरा सेटअप दिया गया है। रियर पर 64 मेगापिक्सल प्राइमरी, 12 मेगापिक्सल अल्ट्रा-वाइड, 5 मेगापिक्सल मैक्रो और 5 मेगापिक्सल डेप्थ सेंसर है। सेल्फी और विडियो कॉलिंग के लिए 32 मेगापिक्सल फ्रंट कैमरा दिया गया है। गैलेक्सी एफ62 को पावर देने के लिए 7000एमएएच की बड़ी बैटरी दी गई है जो 25वाट फास्ट चार्जिंग सपॉर्ट करती है।

संयुक्त राष्ट्र पूंजी विकास कोष की कार्यकारी सचिव बनी प्रीति सिन्हा

जेनेवा। संयुक्त राष्ट्र पूंजी विकास कोष (यूएनसीडीएफ) ने प्रीति सिन्हा को कार्यकारी सचिव बनाए जाने की घोषणा की है। सिन्हा ने सोमवार को यूएनसीडीएफ के कार्यकारी सचिव का पदभार संभाल लिया है। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उनका जोर उन महिलाओं, युवाओं, लघु एवं मझोले उद्यमों को छोटे कर्ज की सुविधा उपलब्ध कराने पर होगा जो अबतक इससे वंचित रहे हैं।

संस्थान का गठन 1966 में हुआ। इसका मुख्यालय न्यूयार्क में है। यह कम विकसित देशों को छोटे कर्ज उपलब्ध कराता है। संयुक्त राष्ट्र, 15 फरवरी (भाषा) संयुक्त राष्ट्र पूंजी विकास कोष (यूएनसीडीएफ) ने प्रीति सिन्हा को कार्यकारी सचिव बनाये जाने की घोषणा की है। सिन्हा ने सोमवार को यूएनसीडीएफ के कार्यकारी सचिव का पदभार संभाल लिया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उनका जोर उन महिलाओं, युवाओं, लघु एवं मझोले उद्यमों को छोटे कर्ज की सुविधा उपलब्ध कराने पर होगा जो अबतक इससे वंचित रहे हैं।

संस्थान का गठन 1966 में हुआ। इसका मुख्यालय न्यूयार्क में है। यह कम विकसित देशों को छोटे कर्ज उपलब्ध कराता है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

भारतीय टीम ने दूसरे टेस्ट में इंग्लैंड को 317 रन से हराया, सीरीज 1-1 से बराबर

चेन्नई । भारतीय टीम ने यहां दूसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में मेहमान टीम इंग्लैंड को 317 रनों से हराकर चार टेस्ट मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर कर दी है। मैच के चौथे दिन भारतीय टीम ने लंच के बाद के सत्र में मेहमान टीम को दूसरी पारी में 164 रनों पर आउट करने के साथ ही मैच अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम के विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के फाइनल में पहुंचने की उम्मीदें फिर बन गयी हैं। इस मैच में मेहमान टीम भारतीय टीम के बल्लेबाजों और गेंदबाजों का सामना नहीं कर पायी। भारत की और से जहां रोहित शर्मा और आर अश्विन ने शतक लगाकर टीम को बढ़े स्कोरों तक पहुंचाया। वहीं भारतीय स्पिनरों अश्विन और अक्सर पटेल की फिरकी के सामने इंग्लैंड के बल्लेबाज टिक नहीं पाये। अश्विन ने पहली पारी में पांच जबकि दूसरी पारी में तीन विकेट लिए, अक्सर ने दूसरी पारी में पांच विकेट लिए। इस शानदार प्रदर्शन के लिए अश्विन को मैन ऑफ द मैच का इनाम मिला। इस मैच में शुरू से ही भारतीय टीम हावी रही। रोहित शर्मा की शतकीय पारी 161 रनों की सहायता से भारतीय टीम ने पहली 329 रन बनाए थे। इसके जवाब में इंग्लैंड की टीम अपनी पहली पारी में 134 पर ही सिमट गई। भारतीय टीम ने दूसरी पारी में कप्तान विराट कोहली के 62 रनों

के साथ ही अश्विन के शतक 106 रनों की सहायता से 286 रन बनाने के साथ ही मेहमान टीम को दूसरी पारी में 482 रनों का लक्ष्य दिया। जिसका पीछा करते हुए इंग्लैंड की टीम की शुरूआत बेहद खराब रही और 100 रनों तक पहुंचते हुए उसकी आधी टीम पेवेलियन लौट गयी। पदार्पण कर रहे युवा स्पिनर अक्सर पटेल ने पांच विकेट लेकर मेहमान टीम को संभलने का कोई अवसर नहीं दिया। अश्विन ने तीन जबकि कुलदीप याद ने दो विकेट लिए। । कुलदीप ने लंच से ठीक पहले बेन फॉक्स (दो) को आउट किया और फिर मोईन अली (43) को ऋषभ पंत ने स्टंप आउट किया। लंच के बाद भारत ने जो रूट को आउट कर बड़ी कामयाबी हासिल की। रूट 33 रन बनाकर अक्षर पटेल का शिकार बने। इसके बाद अक्सर ने ओली स्टोन को आउट कर नौवीं कामयाबी हासिल की। इंग्लैंड ने सुबह तीन विकेट पर 53 रन से आगे खेलना शुरू किया तथा पहले सत्र में 63 रन जोड़कर चार विकेट गंवाए। रूट भी लंच से ठीक पहले पेविलियन लौट जाते लेकिन तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कुलदीप की गेंद पर उनका आसान कैच गिरा दिया। रूट तब 31 रन पर खेल रहे थे। इससे पहले स्थानीय खिलाड़ी अश्विन ने दिन की अपनी पहली गेंद पर ही डैन लॉरेन्स 26 को पवेलियन भेज दिया। ऋषभ ने उन्हें तेजी से स्टंप आउट किया। अपनी शैली के विपरीत ऑलराउंडर बेन स्टोक्स रक्षात्मक नजर आये। उन्होंने अश्विन की गेंद पर आउट होने से पहले 51 गेंदों पर आठ रन बनाये। अधिक रक्षात्मक रवैया अपनाने के कारण वह अश्विन की गेंद पर विराट कोहली के हाथों कैच आउट हो गये। ओली पोप 12 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। फॉक्स ने लंच से ठीक पहले कुलदीप की गेंद पर गलत टाइमिंग से स्वीप शॉट खेला जिसे पटेल ने आसानी से कैच में बदला।

वेस्ली ने ओपेरा यूरो रैपिड शतरंज टूनार्मेंट जीता

नई दिल्ली । अमेरिका के वेसली सो नें ओपेरा यूरो रैपिड शतरंज टूनार्मेंट का खिताब जीत लिया है। वेसली ने विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन को लगातार दूसरे फाइनल में शिकस्त देते हुए यह जीत दर्ज की। फाइनल के पहले कार्लसन और वेसली सो के बीच मुकाबला 2-2 की बराबरी पर रहा था, ऐसे मे दूसरे दिन के पहले ही मैच मे जोरदार खेल की उम्मीद थी। फाइनल में काले मोहरो से खेल रहे मेगनस कार्लसन नें सिसिलियन ओपेनिंग की 14वीं चाल मे दो प्यादों के लिए अपने ऊंट की कुबार्नी दे दी और यह उनकी सबसे बड़ी गलती साबित हुई और मात्र 28 चालों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद हुए हुए तीनों मुकाबलों में कार्लसन नें कई बार दबाव बनाने की कोशिश की

पर वेसली नें बेहद संतुलित खेलते हुए तीनों मैच ड्रॉ करा लिए और 2.5-1.5 से दूसरा दिन तो अपने नाम किया साथ ही खिताब भी अपने नाम किया। वहीं फ्रांस के मकसीम लागरेव को 2.5-1.5 और 2-0 से हराकर अजरबैजान के तैमूर रद्जाबोव तीसरे स्थान पर रहे।

संक्षिप्त समाचार

ओलंपिक टीम में जगह पाने प्रयास कर रहा : दिलप्रीत

बेंगलुरू ।हॉकी फारवर्ड दिलप्रीत सिंह स्ट्राइकर ने कहा है कि कोविड–19 महामारी के कारण 2020 में कई प्रमुख प्रतियोगिताएं नहीं हुईं। मैं अब प्रत्येक प्रशिक्षण सत्र में हिस्सा लेकर ओलंपिक टीम में एक स्थान पाने के लिए प्रयासरत हूं।

दिलप्रीत ने कहा, हम उन कारकों के बारे में चिंता नहीं करना चाहते जो हमारे नियंत्रण में नहीं हैं। मैं तब तक इंतजार नहीं करना चाहता जब तक मुझे अपने लिए एक मजबूत मामला बनाने के लिए भारत के लिए मैच खेलने का मौका नहीं मिलता। मैं यहां अपने कौशल का प्रदर्शन करने और अपनी योग्यता साबित करने के लिए पहुंचा हूं। हम प्रत्येक प्रशिक्षण सत्र में 100 प्रतिशत दे रहे हैं। दिलप्रीत ने कहा कि मैं अपने तकनीक पर काम कर रहा हूं। मैंने काफी सुधार किया है। वरिष्ठ खिलाडियों को खेलते देखना, उनके साथ समय बिताना युवा खिलाडियों को आत्मविश्वास हासिल करने का मौका देता है। हम वरिष्ठ खिलाडियों से सुझाव और मार्गदर्शन लेते हैं, वह हमारे लिए सदैव मददगार रहते हैं।

शतरंज लीग शुरू करेगा एआईसीएफ : कपूर

नई दिल्ली ।अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (एआईसीएफ) ने कहा है कि वह इस साल इंडियन शतरंज लीग शुरू करेगा। इसके साथ ही यह भी कहा है कि वह ओलंपियाड के अगले उपलब्ध चरण की बोली भी लगायेगा। नव नियुक्त एआईसीएफ अध्यक्ष संजय कपूर ने यहां अपनी सालाना आम बैठक (एजीएम) के आयोजन के बाद देश को शतरंज का ‘सुपरपावर’ बनाने के प्रारुप का भी अनावरण किया। कपूर ने कहा, ‘‘हम भारत को विश्व के लिये शतरंज का ठिकाना बनाना चाहते हैं। हमने इस लक्ष्य को हासिल करने के लिये एक योजना भी बनायी है।’’ उन्होंने साथ ही कहा, ‘‘लंबे समय से हम इस खेल को और भी अधिक लोकप्रिय बनाने के लिये अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ इंडियन शतरंज लीग शुरू करने के इच्छुक हैं।’’ उन्होंने कहा, ‘‘हालांकि फ्रेंचाइजी टीमों का पहला चरण इस साल ही आयोजित किया जायेगा।’’ साथ ही कहा कि आम बैठम में फैसला किया गया कि महासंघ महिलाओं की प्रतियोगिता आयोजित करेगा।

ओलंपिक उद्घाटन समारोह का होगा सीधा प्रसारण

वाशिंगटन ।ओलंपिक प्रोडक्शन के कार्यकारी प्रोड्यूसर और अध्यक्ष मोली सोलोमन ने कहा कि महामारी के बीच हो रहे ओलंपिक के महत्व को देखते हुए पहली बार उद्घाटन समारोह का सुबह सीधा प्रसारण करने का फैसला किया गया है। उन्होंने कहा,‘‘ कोरोना महामारी में लोगों का जीवन बदल गया है। लंबे समय तक लॉकडाउन में रहने के बाद ओलंपिक खेलों का महत्व बदल गया है। इससे तय है कि खेलों में यह अतुल्य ओलंपिक होंगे क्योंकि पहली बार किसी महामारी के संपूर्ण विश्व एकसाथ नजर आयेगा। अमेरिका में भी आगामी टोक्यो ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण होगा। अमेरिकी दर्शक 23 जुलाई को होने वाला यह समारोह सुबह सात बजे एनबीसी पर और चार बजे लॉस एंजिलिस में देखेंगे।

आईपीएल फ्रेंचाइजियों ने बीसीसीआई के सामने दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों का मामला उठाया

नई दिल्ली ।क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) की दक्षिण अफ्रीकी टीम की पाकिस्तान के खिलाफ अप्रैल में एकदिवसीय और टी–20 श्रृंखला की घोषणा के बाद ही दिल्ली कैपिटल्स के साथ–साथ ही आईपीएल की अन्य फ्रेंचाइजियों ने भी आधिकारिक रूप से भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों की उपलब्धता का मामला उठाया है। आईपीएल टीम दिल्ली कैपिटल्स ने भी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 2021 सत्र के लिए दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी कैगिसो रबाडा और एनरिच नोर्त्जे की उपलब्धता को लेकर जानकारी मांगी है। अभी 7 दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी पांच आईपीएल फ्रेंचाइजी के प्रमुख खिलाड़ियों की सूची में हैं, जिसमें रबाडा और नोर्त्जे के अलावा फाफ डू प्लेसिस और लुंगी एनगिडी, क्विंटन डी कॉक ,एबी डिविलियर्स और डेविड मिलर शामिल हैं। इन सभी खिलाड़ियों को फ्रेंचाइजियों ने इस सत्र के लिए रिटेन (बरकरार) रखा है। दक्षिण अफ्रीका और पाकिस्तान के बीच 2 से 16 अप्रैल के बीच तीन एकदिवसीय और 4 टी–20 मैच खेले जाने हैं। आईपीएल 9 या 10 अप्रैल से आईपीएल शुरू हो सकता है। ऐसे में दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों के उपलब्ध न होने से आईपीएल फ्रेंचाइजियां प्रभावित हो सकती हैं। वहीं सीएसए ने खिलाड़ियों की उपलब्धता के संदेह पर कहा कि वह बीसीसीआई के साथ सीधे बातचीत कर आईपीएल संबंधी मुद्दों को हल कर लेगा, हालांकि इस पर आईपीएल के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) हेमांग अमीन का अभी कोई जवाब नहीं आया है।

नैसकार कप सीरीज मोटर रेस में 11 कारें टकरायीं

नई दिल्ली । अमेरिका के फ्लोरिडा में नैसकार कप सीरीज मोटर रेस में माइकल मैकडॉवेल ने जीत दर्ज की। इस दौरान हुए एक दुखद हादसे में 11 कारें टकरा गयी। इन कारों की टक्कर फाइनल लैप में हुई। इसमें डेटॉना-500 आग की लपटों में घिर गई। सबसे पहले पेंसेके टीम के साथी जॉय लोगानो

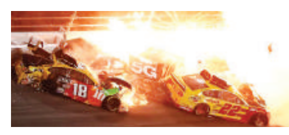

और ब्रैड केसेलोस्की की कारें टकराईं। वहीं इसी बीच ऑस्टिन सिंडीक की कार केसेलोस्की की कार से टकरा गई पर किसी ड्राइवर को गंभीर चोट नहीं आई है।

भारतीय महिला फुटबॉल टीम का मुकाबला तुर्की से

नई दिल्ली । भारत की सीनियर महिला फुटबॉल टीम कोविड-19 महामारी के बाद अपने पहले टूनार्मेंट के लिए तैयार है और 17 फरवरी से तुर्की के अलान्या में तीन अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैच खेलेगी। सर्बिया के खिलाफ 17 फरवरी को पहले मैच के बाद भारतीय टीम 19 फरवरी को रूस से भिड़ेगी जबकि 23 फरवरी को उक्रेन का सामना करेगी। टीम पिछले दो महीने से गोवा में तैयारी कर रही है। अंतरराष्ट्रीय मैच टीम के लिए काफी

अहमियत रखते हैं क्योंकि भारत को अगले साल 20 जनवरी से छह फरवरी तक महिला एशियाई कप की मेजबानी करनी है। मुख्य कोच मेमूल रॉकी ने कहा कि तुर्की में होने वाले मुकाबलों से वे परख पाएंगे कि महामारी के कारण लंबे ब्रेक के बाद उनके खिलाड़ी मैच फिटनेस को लेकर किसी स्थिति में हैं। उन्होंने कहा, ‘‘हमारी टीम युवा और प्रतिभावान है। यह लंबे समय में हमारा पहला टूनार्मेंट होगा लेकिन लड़कियां खुद को साबित करने के लिए बेताब हैं। हम यूरोपीय टीमों के खिलाफ खेलेंगे। यह आसान नहीं होगा लेकिन हम चुनौती के लिए तैयार हैं।’’ मेमूल ने कहा, ‘‘यूरोप की मजबूत टीमों के खिलाफ खेलने से हमें एशियाई कप की तैयारी में मदद मिलेगी। लड़कियों क लिए ये अनुभव अहम होंगे।’’

होलकर की पिच को ‘नमन’ करने के बाद ‘ओझा’ ने क्रिकेट को कहा अलविदा

इन्दौर । क्रिकेटर नमन ओझा ने रूंधे गले से अंतर्राष्ट्रीय व घरेलू क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी है। नमन ओझा ने इन्दौर के होल्कर स्टेडियम में सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों के साथ ही घरेलू क्रिकेट को भी अलविदा कह दिया। नमन अपना बयान लिखकर लाए थे, लेकिन जैसे ही बोलना शुरू किया तो वे भावुक हो गए और आंसू नहीं रोक सके... उन्होंने खुद को संभाला और रुंधे गले से अपने 20 साल के क्रिकेट कॅरियर को विराम देने की घोषणा की। उज्जैन में 20 जुलाई 1983 को जन्में नमन ओझा सन्यास की घोषणा के पहले अपने पिता विनय कुमार ओझा के साथ होलकर स्टेडियम के मैदान पर पहुंचे और पिच को ‘नमन’ किया। इसके बाद उनकी आंखें भर आईं। नमन ने कमर में दर्द और परिवार को समय नहीं दे पाने को संन्यास की वजह बताया है। सन्यास लेने की जब उनसे वजह पूछी गई, तो उन्होंने कहा कि नए खलिाड़ी आ रहे हैं, उन्हें यदि इस समय चांस मिला, तो वे देश के लिए खेल सकेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उनकी फटिनेस ठीक है, कमर में हल्का दर्द रहता है, फरि भी वे प्रेक्टसि करते है! उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि खेल की वजह से अपने परिवार और बच्चों को समय नहीं दे पाते थे, इसलिए उन्हें लगा कि यह संन्यास लेने का सही समय है। उल्लेखनीय है कि चालू क्रिकेट सत्र के लिए मध्य प्रदेश की सीनियर टीम में उन्हें जगह नहीं मिली थी, लेकिन उन्हें कई राज्यों से क्रिकेट खेलने के प्रस्ताव मिले। हालांकि उन्होंने अब सिर्फ ‘ग्लोबल क्रिकेट लीग’ में खेलने की इच्छा जाहिर की। नमन ने बताया कि वे 14 साल की उम्र में घर छोड़कर इन्दौर आए थे। होलकर का मैदान उनका ‘होम ग्राउंड’ है, बचपन से यहीं खेले और बड़े हुए, उन्हें यह ग्राउंड हमेशा याद रहेगा। नमन ने कहा कि उन्होंने वर्ष 2000 से रणजी ट्राफी करियर शुरू किया था। करियर में सिर्फ यह मलाल है कि टेस्ट क्रिकेट

और मौके मिलते तो बेहतर प्रदर्शन कर सकता था। मगर जो भी हासिल किया उससे खुश हूं। कॅरियर के यादगार पलों का जिक्र करते हुए नमन ने कहा कि कोलंबो में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट जीतना ही मेरी सबसे अच्छी याद है। 2016 में क्ढछ में सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से खेलते हुए ट्रॉफी जीतना, दिलीप ट्रॉफी और देवधर ट्रॉफी उठाना उनके लिए यादगार लम्हें है। :: नमन के कॅरियर की झलकियॉं :: - नमन ने साल 2000 में फर्स्ट क्लास क्रिकेट में महज 17 साल की उम्र में डेब्यू किया था। उन्हें विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर मध्य प्रदेश की टीम में शामिल किया गया था। - वे 2009 के आईपीएल में राजस्थान रॉयल्स की ओर से खेले। उन्होंने टूनार्मेंट में 2 अर्धशतक बनाए। - फर्स्ट क्लास क्रिकेट के साथ ही नमन ने इंटरनेशनल क्रिकेट में देश का प्रतिनिधित्व किया है। - घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में शानदार प्रदर्शन के बाद 2010 में श्रीलंका के खिलाफ वनडे और जिम्बाब्वे के खिलाफ टी-20 सीरीज के दो मैचों में खेलने का मौका मिला। - 2014 में इंडिया-ए के ऑस्ट्रेलिया दौरे पर नमन ने 1 शतक और 1 दोहरा शतक लगाया था। नमन ने नाबाद 219 रन बनाए थे। इसमें 29 चौके और 8 छक्के शामिल थे। - इंडिया-ए की ओर से अच्छे प्रदर्शन के बाद नमन को टेस्ट में डेब्यू का मौका मिला। उन्होंने 28 अगस्त, 2015 को श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था। - 14 अगस्त, 2016 से ऑस्ट्रेलिया में 2 अनौपचारिक टेस्ट और 4 वनडे टूनार्मेंट के लिए नमन को इंडिया-ए टीम के कप्तान के रूप में नामित किया गया था। - फर्स्ट क्लास क्रिकेट में नमन ने 143 मैचों में 41.67 की औसत से 9753 रन बनाए हैं। इसमें से 7861 रन उन्होंने रणजी ट्रॉफी टूनार्मेंट में बनाए हैं। - विकेटकीपर के तौर पर फर्स्ट क्लास क्रिकेट में नमन ने 54 स्टंपिंग समेत 471 शिकार किए हैं। - नमन मध्य प्रदेश टी-20 लीग में इंदौर के लिए भी खेल चुके हैं। उन्होंने पिछले साल जनवरी में उत्तर प्रदेश के खिलाफ अपना आखिरी रणजी मैच खेला था। - नमन क्ढछ में सनराइजर्स हैदराबाद के साथ-साथ राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली डेयरडेविल्स का भी प्रतिनिधित्व किया है। :: धोनी को आराम देने पर टीम इंडिया में मिला था मौका :: नमन को विकेटकीपर महेंद्र सिंह धोनी समेत कई वरिष्ठ खिलाड़ियों को आराम मिलने की वजह से इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू का मौका मिला। उन्होंने 2010 में जिम्बाब्वे के खिलाफ 2 टी-20 में 12 रन और श्रीलंका के खिलाफ इकलौते वनडे मैच में 1 रन बनाया था। अगस्त, 2015 में श्रीलंका के भारत दौरे पर विकेटकीपर ऋद्धिमान साहा हैमस्ट्रिंग की वजह से सीरीज से बाहर हो गए थे। इसके बाद 32 साल की उम्र में नमन को टेस्ट में डेब्यू का मौका मिला।

दिग्गज खिलाड़ियों की मौजूदगी में होगी राज्य केटलबेल स्पर्धा, प्रदेश भर के खिलाड़ी होंगे शामिल

इन्दौर । मिस्टर इंडिया मनीष अदविलकर तथा एथलिट अमरिंदर सिंह वर्मा, पराग म्हात्रे सहित अनेक दिग्गजों की मौजूदगी में द वर्ल्ड जिम एंड फिटनेस सेंटर, अन्नपूर्णा रोड़ पर राज्य केटलबेल स्पर्धा का भव्य आयोजन 19 से 21 फरवरी तक किया जा रहा है। स्पर्धा के संयोजक मनीष आर्य ने बताया कि इस स्पर्धा में प्रदेशभर से 100 से अधिक खिलाड़ी अपनी चुनौती पेश करने आ रहे है। यह स्पर्धा अनेक वेट वर्ग में आयोजित की जा रही है। पुरुषों में 60 से 85 कि.ग्रा. से अधिक के तथा महिला में 53 से 68 कि.ग्रा. अधिक वजन वर्ग के मुकाबले होंगे। स्पर्धा में विशेष आकर्षण का केन्द्र बुजुर्ग खिलाडियों के भी मुकाबले है, जिसमें 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ी भी अपनी चुनौती

युवाओं के समक्ष पेश करेंगे। स्पर्धा में केटलबेल स्पोर्ट्स के तहत टू-आर्म लॉग सायकल, वन-आर्म लॉग सायकल, स्नेच तथा बॉयथलॉन एवं केटलबेल गेम्स के तहत अनेक इवेंट होंगे। मिश्रित युगल के मुकाबले भी रखे गए है। इस स्पर्धा में खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने के लिए मिस्टर इंडिया मनीष अदविलकर तथा एथलिट अमरिंदर सिंह वर्मा, पराग म्हात्रे भी आ रहे है। मनीष अदविलकर सालों से अपनी शरीर साधना का लोहा पूरे देश में मनवा चुके है और वह सलमान, कैटरीना, अर्जुन कपूर कई फिल्मी सितारों को फिटनेस की ट्रेनिंग देते है। अमरिंदर सिंह पूरे विश्व में धूम मचा चुके है। वहीं पराग म्हात्रे (आईकेएफए) के डायरेक्टर व चीफ कोच के साथ केटलबेल के बढ़ावे के लिए पूरे देश की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं। यह स्पर्धा के प्रदेश के खिलाडियों के लिए इसलिए भी अहम है, क्योंकि इसी स्पर्धा के आधार पर मुंबई में 12 मार्च से होने वाली राष्ट्रीय स्पर्धा के लिए प्रदेश की टीम का चयन किया जाएगा। म.प्र. के खिलाड़ी राष्ट्रीय स्पर्धा में कई वर्षों से पदक ला रहे है। यह स्पर्धा इंडियन केटलबेल स्पोर्ट्स फेडरेशन के तहत आयोजित की जा रही है। कोरोना काल के बाद यह शहर में पहली बार यह स्पर्धा भव्य स्तर पर हो रही है। कोरोना की गाईड लाईन का भी स्पर्धा के दौरान पूर्ण पालन किया जाएगा।

लंदन में इंग्लिश प्रीमियर लीग फुटबॉल में गोल दागते हुए चेलेसा के टीमो वार्मर।

राष्ट्रीय घुड़सवारी प्रतियोगिता, दिल्ली-2021

- ग्रेड वन शो–जम्पिंग में रजत पदक जीतने वाले अकादमी के पहले खिलाड़ी बने प्रणय खरे
- खेल मंत्री ने की प्रणय खरे के प्रदर्शन की सराहना

भोपाल । मध्यप्रदेश राज्य घुड़सवारी अकादमी के प्रतिभावान खिलाड़ी प्रणय खरे ने सीनियर नेशनल इक्विस्ट्रियन चैम्पियनशिप ग्रेड वन शो जम्पिंग में अपने अश्व वनीला स्कॉय पर बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए मध्यप्रदेश को रजत पदक दिलाया। प्रणय खरे ने एजीएल स्टेबल्स दिल्ली में 9 से 15 फरवरी, 2021 तक आयोजित सीनियर राष्ट्रीय घुड़सवारी प्रतियोगिता ग्रेडवन (140 से.मी.) शो जम्पिंग में देश के टॉप घुड़सवारों को पीछे छोड़ते हुए यह पदक अर्जित किया है। प्रणय खरे सीनियर राष्ट्रीय घुड़सवारी प्रतियोगिता ग्रेड वन (एडवांस) में उपलब्धि हासिल करने वाले म.प्र. राज्य घुड़सवारी अकादमी के पहले खिलाड़ी बन गए हैं। - शाबाश प्रणय खेल और युवा कल्याण मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया ने सीनियर नेशनल इक्वीस्ट्रियन चैम्पियनशिप ग्रेडवन शो-जम्पिंग में अकादमी के प्रतिभाशाली घुड़सवार प्रणय खरे के शानदार प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्हें शाबाशी और बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रणय ने सीनियर नेशनल चैम्पियनशिप में देश के श्रेष्ठ घुड़सवारों को हरा कर रजत पदक अर्जित कर मध्य प्रदेश को गौरवान्वित किया है। यह सफलता उनके परिश्रम और कोरोना जैसे महामारी के दौर में भी अपने आपको मानसिक तौर पर हर मुकाबले के लिए तैयार रखने का नतीजा है। - प्रणय ने बढ़ाया प्रदेश का गौरव संचालक खेल और युवा कल्याण पवन जैन ने कहा कि प्रणय खरे प्रदेश के ही नहीं देश के प्रतिभावान घुड़सवार हैं। विगत चार वर्षों में प्रणय की उपलब्धियों से प्रदेश का गौरव बढ़ा है। खेल संचालक श्री जैन ने उम्मीद जताते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी पदक जीतकर प्रणय खरे भारत का मान और तिरंगे की शान बढ़ाएंगे। - प्रणय खरे की उपलब्धियाँ अकादमी के घुड़सवार प्रणय खरे ने अंतर्राष्ट्रीय इक्विस्ट्रियन चैम्पियनशिप में तीन स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य सहित पाँच पदक देश को दिलाए हैं। जबकि उन्होंने जूनियर नेशनल इक्विस्ट्रियन चैम्पियनशिप में 17 स्वर्ण, 5 रजत और 2 कांस्य सहित 24 पदक और सीनियर में 2 स्वर्ण, 4 रजत और एक कांस्य सहित सात पदक मध्य प्रदेश को दिलाए हैं।

Special Ops Web Series के स्पेशल सीजन 'द हिम्मत स्टोरी' में नजर आएंगे आफताब शिवदसानी

स्पेशल ऑप्स वेब सीरीज के निमार्ता स्पेशल ऑप्स यूनिवर्स का निर्माण कर रहे हैं जिसके तहत सीरीज के प्रमुख पात्रों की कहानियां मिनी सीरीज के रूप में पेश की जाएंगी। इसकी शुरूआत हिम्मत सिंह के किरदार से हो रही है।

डिज्नी प्लस हॉटस्टार की वेब सीरीज स्पेशल ऑप्स में अब आफताब शिवदसानी की एंट्री होने की खबर है। आफताब सीरीज के अगले सेगमेंट स्पेशल ऑप्स 1।5– द हिम्मत स्टोरी का हिस्सा बने हैं, जिसमें मुख्य किरदार हिम्मत सिंह की कहानी दिखायी जाएगी। आफताब ने जी5 की सीरीज पॉइजन 2 से डिजिटल डेब्यू किया था। स्पेशल ऑप्स वेब सीरीज के निमार्ता स्पेशल ऑप्स यूनिवर्स का निर्माण कर रहे हैं, जिसके तहत सीरीज के प्रमुख पात्रों की कहानियां मिनी सीरीज के रूप में पेश की जाएंगी। इसकी शुरूआत हिम्मत सिंह के किरदार से हो रही है। स्पेशल ऑप्स सीजन 1 में यह किरदार केके मेनन ने निभाया था। 'स्पेशल ऑप्स सीजन 1।5: द हिम्मत स्टोरी' की कहानी 2001 में स्थापित की गयी है, जब रॉ एजेंट के रूप में हिम्मत ने करियर शुरू किया था। शो इस साल के अंत तक रिलीज होगा। इसमें दर्शकों को हिम्मत सिंह की बैक स्टोरी देखने को मिलेगी। सीरीज की शुरूआत हिम्मत सिंह को मिले नये केस से होगी, मगर इसमें मोड़ पार्लियामेंट अटैक वाली घटना से आएगा। यह कहानी लगभग एक घंटे के तीन एपिसोड्स में दिखायी जाएगी। इस सीरीज की शूटिंग भी अंतरराष्ट्रीय लोकेशंस में बड़े स्केल पर की जाएगी। इस बारे में निर्देशक नीरज पांडेय ने बताया था कि स्पेशल ऑप्स की संरचना एक यूनिवर्स के तौर पर ही की गयी है। सीजंस को लीनियर नैरेटिव स्टाइल के परे ले जाया गया है और कई दिलचस्प कहानियां जुड़ेंगी। नीरज ने कहा कि 'स्पेशल ऑप्स 1.5' ना तो प्रीक्वल है और ना ही सीक्वल। स्पेशल ऑप्स सीजन–1 पिछले साल मार्च में रिलीज किया गया था, जिसमें कुल आठ एपिसोड्स थे। केके मेनन के साथ पहले सीजन में करण टैकर, विनय पाठक, विपुल गुप्ता, संयमी खेर, मेहर विज, गौतमी कपूर, सना खान, परमीत सेठी और दिव्या दत्ता जैसे कलाकार अलग-अलग भूमिकाओं में नजर आये थे।

Roohi Trailer Out

Rajkummar Rao को डराएंगी Janhvi Kapoor

'मर्द को होगा और भी ज्यादा दर्द'

बॉलीवुड अभिनेता राजकुमार राव और जान्ह्वी कपूर अब आपको हंसा-हंसा कर डराने की तैयारी में हैं। दोनों की मोस्ट अवेडेट हॉरर कॉमेडी फिल्म 'रूही अफसाना' अब नए नाम 'रूही' के साथ रिलीज के लिए तैयार है। फिल्म के दो और नए पोस्टर और ट्रेलर सामने आ गए हैं।

फिल्म का ट्रेलर कमाल लग रहा है। राजकुमार राव, जान्ह्वी कपूर और वरुण शर्मा तीनों ही अपने किरदार में धमाल मचा रहे हैं। ट्रेलर में एक ऐसी चुड़ैल को दिखाया गया है, जिसकी नजर शादी वाले घर पर रहती है। फिल्म का ट्रोलर कुछ-कुछ स्त्री जैसा ही, लेकिन स्टोरी का प्लॉट थोड़ा बदला हुआ है। इस चुड़ैल के साथ राजकुमार राव और वरुण शर्मा का सामना होगा। वहीं जान्ह्वी कपूर भूत के किरदार में गजब लग रही हैं। इसके साथ ही नए पोस्टर्स में राजकुमार राव, जान्ह्वी कपूर और वरुण शर्मा नजर आ रहे हैं। पहले पोस्ट में राजकुमार राव और वरुण शर्मा दुल्हे के लुक में दिख रहे हैं। दोनों डरे हुए लग रहे हैं। इसके साथ ही जान्हवी कपूर भूतिया लुक में नजर आ रही हैं। पोस्टर काफी ज्याद मजेदार लग रहे हैं। सभी सटारकास्ट ने फिल्म के पोस्टर शेयर किए हैं। कब रिलीज होगी फिल्म अभिनेता राजकुमार राव और जान्ह्वी कपूर स्टारर फिल्म 'रूही' 1 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होने को पूरी तरह तैयार है।

राजकुमार राव ने पोस्टर को कैप्शन देते हुए लिखा, 'अपने रिस्क पर ट्रेलर देखें क्योंकि इस बार मर्द को और दर्द होगा।' इससे पहले भी उन्होंने ट्वीट करते हुए कहा,' दुल्हन की तरह सजेगा थिएटर, मगर दूल्हा ले जाएगी रूही। इस भूतिया शादी में आपका स्वागत है। मैजिक ऑफ सिनेमा रिटर्न, 11 मार्च को फिल्म रिलीज।'

जान्ह्वी ने भी शादी में बुलाया जान्ह्वी कपूर ने भी पोस्टर शेयर किया और लिखा, 'इस भूतिया शादी में आपका स्वागत है। मैजिक ऑफ सिनेमा रिटर्न, 11 मार्च को फिल्म रिलीज।' इस फिल्म में अभिनेता वरुण शर्मा भी हैं, उन्होंने भी लिखा, 'साल की सबसे भूतिया वेडिंग के लिए थिएटर भी हैं रेडी। मैजक ऑफ सिनेमा रिटर्न, 11 मार्च को फिल्म रिलीज।'

कई बार बदला नाम बता दें कि इस फिल्म का नाम जब ऐलान हुआ था उस समय 'रूह अफजा' था, इसके बाद इसका नाम 'रूही अफजा' किया गया। कुछ महीने पहले फिल्म का नाम 'रूही अफसाना' बताया गया था। वहीं अब जब रिलीज डेट का ऐलान किया गया तो फिल्म का नाम 'रूही' कर दिया गया है।

Bhabiji Ghar Par Hain: नई Anita Bhabhi को देखने से पहले ही लोग कर रहे Neha Pendse की आलोचना

लंबे इंतजार के बाद 'भाबीजी घर पर हैं' में अनीता भाभी की वापसी होने जा रही हैं। आज से एक्ट्रेस नेहा पेंडसे, सौम्या टंडन की जगह नजर आएंगी।

आज से एक्ट्रेस नेहा पेंडसे, सौम्या टंडन की जगह नजर आएंगी। नेहा पेंडसे से फैंस की काफी ज्यादा उम्मीदें हैं क्योंकि सौम्या टंडन ने पहले ही बहुत हाई बेंच मार्क सेट कर दिया है। इंडियन एक्सप्रेस से खास बातचीत में एक्ट्रेस ने अपनी शो में एंट्री से लेकर, लोगों के रिएक्शन तक की बातें शेयर की हैं। उन्होंने बताया कि उनका शुरूआती अनुभव कैसा रहा है। नेहा पेंडसे ने शो का हिस्सा बनने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने बताया, 'मुझसे लोगों ने बहुत ज्यादा उम्मीदें लगाई हैं। लोग जानना चाहते हैं कि मैं अनीता भाभी का किरदार कैसे निभाऊंगी। मैं भी जानना चाहती हू कि मुझे इस रूप में देख कर लोग किस तरह से रिएक्ट करेंगे।' जब लोगों की आलोचनाओं पर एक्ट्रेस ने कहा, 'आलोचनाएं मेरे रास्ते में पहले ही आ रही हैं, जबकि लोगों ने अनीता भाभी के तौर पर अभी तक मेरा काम नहीं देखा है। मैं ये समझती हूं कि लोग इमोशनल होकर आलोचनाएं करते हैं, सौम्या से लोग काफी जुड़े हुए थे और अब वे उनकी जगह किसी और उनके लिए किसी नए शख्स को अपना इतना आसान नहीं है। लोगों को मुझे अपनाने में वक्त लगेगा। मैं अपनी ऑडियंस को वो वक्त देना चागती हूं ताकि वो मुझसे जुड़ सकें और मुझे पता है कि वो मुझो पूरी तरह से अपना लेंगे।' एक्ट्रेस ने साथ ही बताया, 'मैं वैलेंटाइन डे के लिए अपने पति के साथ उदयपुर में थी। हम अब घर वापस जा रहे हैं। मेरे पति बहुत उत्साहित हैं क्योंकि वह लंबे समय से इस शो को फॉलो कर रहे थे। हम घर पर एक साथ एपिसोड देखने की योजना बना रहे हैं।' इस शो में किसी फिल्मी कहानी की तरह ही नेहा की एंट्री होगी और इस बात का खुलासा खुदा नेहा ने एक इंटरव्यू में किया था। नेहा ने कहा, 'शो में दर्शकों को ये देखने को मिलेगा कि कैसे अनीता भाभी अपनी खूबसूरती, स्टाइल और जादू से लोगों को दीवाना बनाती हैं, जिससे पूरी कॉलोनी का माहौल बदल जाता है।' कहानी एक नए ट्विस्ट के साथ शुरू होगी। कहानी में दिखाया जाएगा कि अनिता भाभी का एक्सीडेंट हो जाता है और उन्हें अपने चेहरे की सर्जरी करवानी पड़ती है, लेकिन सर्जरी के दौरान गलती से असली तस्वीर किसी और से बदल जाती है, जिसकी वजह से उन्हें बिल्कुल नया चेहरा मिलता है।' शो में नई अनीता भाभी का स्वागत करने के लिए पार्टी का आयोजन किया जाएगा। विभूति नारायण पहले नई अनीता भाभी को देख थोड़ा झिझकते नजर आएंगे, लेकिन बाद में वे नई शुरूआत के लिए तैयार हो जाएंगे। वहीं मोहल्ले के और भी लोग काफी उत्साहित नजर आएंगे।

हाथों में हाथ डाले मीडिया के सामने आए दीया मिर्जा और वैभव रेखी

दीया मिर्जा अपने ब्वॉयफ्रेंड वैभव रेखी के साथ शादी के बंधन में बंध गई हैं। शादी की सभी रस्में बेहद सादगी से हुईं जहां दोनों परिवारों के सदस्य और करीबी शामिल रहे।

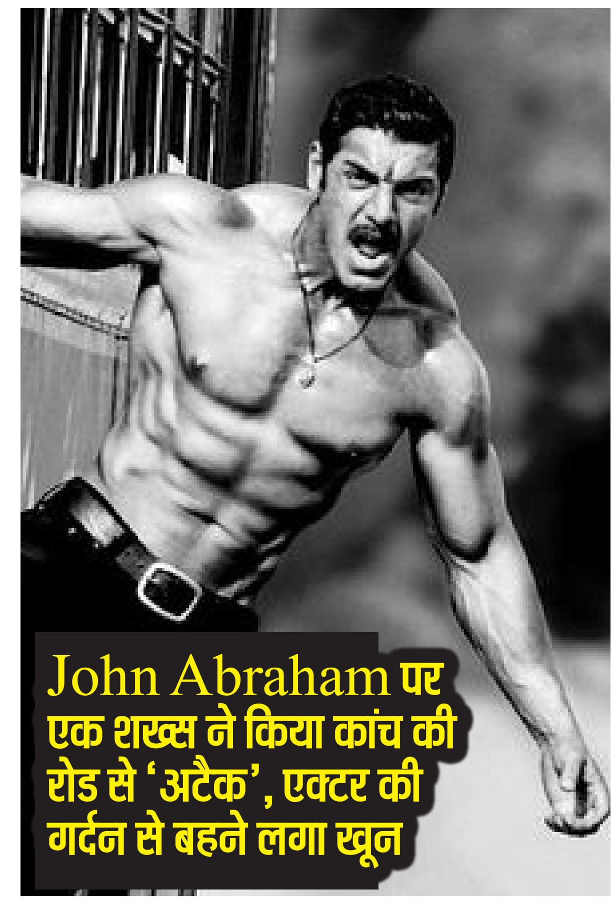

John Abraham पर एक शख्स ने किया कांच की रोड से 'अटैक', एक्टर की गर्दन से बहने लगा खून

बॉलीवुड अभिनेता जॉन अब्राहम इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म अटैक को लेकर सुर्खियों में हैं। इस फिल्म की शूटिंग जोरों पर चल रही है।

फिल्म अटैक के शूटिंग सेट की तस्वीरें और वीडियो को जॉन अब्राहम अक्सर सोशल मीडिया पर भी साझा करते रहते हैं।

बॉलीवुड अभिनेता जॉन अब्राहम इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'अटैक' को लेकर सुर्खियों में हैं। इस फिल्म की शूटिंग जोरों पर चल रही है। फिल्म 'अटैक' के शूटिंग सेट की तस्वीरें और वीडियो को जॉन अब्राहम अक्सर सोशल मीडिया पर भी साझा करते रहते हैं। अब इस बीच अभिनेता के फैंस के लिए बुरी खबर है। फिल्म 'अटैक' के सेट पर जॉन अब्राहम घायल हो गए हैं। इस बात की जानकारी उन्होंने खुद सोशल मीडिया पर दी है। जॉन अब्राहम सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहने वाले कलाकारों में से एक हैं। वह अपने फैंस के लिए खास तस्वीरें और वीडियो भी साझा करते रहते हैं। जॉन अब्राहम ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म 'अटैक' के सेट से जुड़ी एक वीडियो और तस्वीर साझा की है। इस तस्वीर में साफ नजर आ रहा है कि एक शख्स जॉन अब्राहम के सिर पर कांच की रोड से हमला कर रहा है। कांच की रोड लगने से जॉन अब्राहम घायल हो गए हैं। इस बात की जानकारी वह वीडियो में देते नजर आ रहे हैं। वीडियो में जॉन अब्राहम अपनी गर्दन से खून साफ करते हुए दिखाई दे रहे हैं। हालांकि उन्हें ज्यादा गंभीर चोट नहीं आई है। इस वीडियो और तस्वीर को साझा करते हुए जॉन अब्राहम ने खास पोस्ट भी लिखा है। उन्होंने पोस्ट में लिखा, 'यह कैसे शुरू हुआ । यह कैसे चल रहा है। मजे के सभी हिस्सा! सोशल मीडिया पर जॉन अब्राहम के घायल होने की तस्वीर और वीडियो जमकर वायरल हो रहा है। अभिनेता के फैंस भी वीडियो पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। वहीं इससे पहले जॉन अब्राहम फिल्म 'अटैक' से जुड़े एक वीडियो को साझा करने की वजह से चर्चा में थे।